श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन, अटा मंदिर सावरकर चौक ललितपुर (उ.प्र.)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्‌भुत प्रतिमायें

4. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अटा मंदिर, सावरकर चौक, ललितपुर, उत्तरप्रदेश में प्रवेश करते ही नीचे ग्राउंड फ्लोर पर स्थित गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान् वाली वेदिका पर एक काँच की पेटी रखी हुई है। उसमें अष्टधातु, पीतलधातु से निर्मित, पद्मासनस्थ, नौ सर्प फणावली से सहित जिनबिंब है, जिसके पादपीठ पर खड़ा हुआ तथा सूँड/शुंड उठाये हुये 'हाथी' 'गज' दिग्दर्शित होता है (चित्र क्र. 4)।

संकलनः निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज, मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराज, मुनि श्री निरीहसागर जी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - www.sanskarsagar.org\knowledge

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अप्रैल 2025	
16	बुधवार	तृतीया	अनुराधा
17	गुरुवार	चतुर्थी	ज्येष्ठा दिन/रात
18	शुक्रवार	पंचमी	ज्येष्ठा
19	शनिवार	षष्ठी	मूल
20	रविवार	सप्तमी	पूर्वाषाढ
21	सोमवार	अष्टमी	उत्तराषाढ
22	मंगलवार	नवमी	श्रवण
23	बुधवार	दशमी	धनिष्ठा
24	गुरुवार	प्रतिपदा	शतभिषा
25	शुक्रवार	द्वितीया	पूर्वाभाद्रपद
26	शनिवार	त्रयोदशी-चतुर्दशी	उत्तराभाद्रपद
27	रविवार	अमावस	अश्विनी
28	सोमवार	प्रतिपदा	भरणी
29	मंगलवार	द्वितीया	कृत्तिका
30	बुधवार	तृतीया	रोहिणी
		मई 2025	
1	गुरुवार	चतुर्थी	मृगशिरा
2	शुक्रवार	पंचमी / षष्ठी	आर्द्रा
3	शनिवार	सप्तमी	पुनर्वसु
4	रविवार	अष्टमी	पुष्य
5	सोमवार	नवमी	आश्लेषा
6	मंगलवार	नवमी	मघा
7	बुधवार	दशमी	पूर्वाफाल्गुनी
8	गुरुवार	एकादशी	उत्तराफाल्गुनी
9	शुक्रवार	द्वादशी	हस्त
10	शनिवार	त्रयोदशी	चित्रा
11	रविवार	चतुर्दशी	स्वाती दिन/रात
12	सोमवार	पूर्णिमा	स्वाती
13	मंगलवार	प्रतिपदा	विशाखा
14	बुधवार	प्रतिपदा	अनुराधा
15	गुरुवार	द्वितीया	ज्येष्ठा

तीर्थंकर कल्याणक

22 अप्रैल : भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी ज्ञान कल्याणक
23 अप्रैल : भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी जन्मतप कल्याणक
26 अप्रैल : भगवान धर्मनाथ जी गर्भ कल्याणक
26 अप्रैल : भगवान नमिनाथ मोक्ष कल्याणक
28 अप्रैल : भगवान कुंथुनाथ जन्म तप मोक्ष कल्याणक
02 मई : भगवान अभिनंदननाथ गर्भ मोक्ष कल्याणक
05 मई : भगवान सुमतिनाथ तप कल्याणक
07 मई : भगवान महावीरस्वामी ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

30 अप्रैलः अक्षय तृतीया (दान दिवस)
30 अप्रैलः रोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

16 अप्रैलः 06/06 बजे से 29/55 बजे तक ।
20 अप्रैलः 11/48 बजे से 30/01 बजे तक ।
21 अप्रैलः 12/37 बजे से 30/01 बजे तक ।
27 अप्रैलः 05/57 बजे से 24/38 बजे तक ।
29 अप्रैलः 05/55 बजे से 18/47 बजे तक ।
30 अप्रैलः 05/55 बजे से 29/54 बजे तक ।
02 मईः 13/04 बजे से 29/53 बजे तक ।
04 मईः 05/52 बजे से 12/53 बजे तक ।
10 मईः 27/15 बजे से 29/48 बजे तक ।
14 मईः 05/47 बजे से 11/47 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः अप्रैल-16,21,30 मई-4,8,9,14
मशीनरीप्रारंभः अप्रैल-16,23मई-9,14
वाहन खरीदनेः अप्रैल-16,23,24 मई-3,9,14

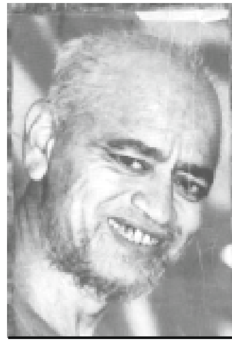

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 312 • अप्रैल 2025

• वीर नि.संवत 2551-52 • विक्रम सं. 2082 • शक सं. 1945

आदरणीय पाठकों के लिए विशेष सूचना : आपके पास भेजी जा रही सदस्यता सूची आपकी स्लिप में जो जानकारियां नहीं है,अथवा गलत है यदि आवश्यक हो तो जानकारी संस्कार सागर कार्यालय में पत्र द्वारा अथवा फोन से सूचित करें। आप मोबाइल पर एसएमएस भी कर सकते हैं :- फोन नं. : 0731-3193601, मो. :8989505108, 6232967108

मई 2025 से संस्कार सागर 25 वर्ष पूर्ण करके 26 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जिसका वर्ष अप्रैल 2025 तक पूरा हो गया है। **पत्रिका को सुचारु रूप से प्रकाशित करनेके लिए आप अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र ही भेजकर सहयोग करें।**

आजीवन सदस्यों के लिए 15 वर्ष तक पत्रिका भेजी जाती हैं जिन सदस्यों के 15 वर्ष अप्रैल 2025 में हो चुके हैं अतः आप 5001 रु. की राशि जमा कर संरक्षक सदस्य बनकर पीढ़ी दर पीढ़ी (सदैव) पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। जिन पाठकों के 4000रु. बाकी जा रहे हैं वह पहले आजीवन सदस्य थे। अब उनकी राशि संरक्षक शुल्क में कम कर संरक्षक सदस्य बनाया जा रहा है यदि आप पुनः आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो 2100/- की राशि भेज सकते हैं।

4. जिन सदस्यों की पिछली राशि बाकी है उसकी जानकारी इसी पत्रिका में दी जा रही है। अतः आप शीघ्र ही निम्नलिखित खातों में राशि जमा कर अथवा सीधे भेज कर। फोन पे, गूगल पे नम्बर 8989505108 पर कर सकते हैं। बैंक में राशि चेक द्वारा जमा करने पर कोई शुल्क नहीं कटता है अतः चेक द्वारा जमा करें।

आयसीआयसीआय	भारतीय स्टेट बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ	संस्कार सागर
004105013575	63000704338

ऑनलाईन जमा करने के लिये कोड़ स्कैन करें

सदस्यता सूची का प्रारुप

सदस्यता क्र. | सदस्यता आरंभ-
सदस्यता श्रेणी | बकाया राशि
सदस्य का नाम
पता
गाँव/शहर | जिला | राज्य | पिनकोड
फोन : एसटीडी ....नंबर............मो..............

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8450088410

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –ब. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–3193601
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के मार्च अंक में कहानी पर सवाल शीर्षक के पात्र कल्पना और कहानी को कहानी के चरित्र चित्रण को पढ़कर मुझे लगा कि कहानी के लेखक में इतिहास के तथ्यों को प्रगट करने का बहुत बड़ा गुबार है और दिगम्बरत्व की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए उनके पास मात्र तर्क नहीं तथ्य भी है आचार्य कुंदकुंद देव की वाणी पर अटूर श्रद्धा रखने वाले लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि सवस्त्र साधक को मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है कहानी सरल सुबोध और मर्म स्पर्शी है।

खुशबू जैन, अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर मासिक पत्रिका में कोटा शिक्षा के साथ बना आत्म हत्या का केन्द्र विजय जैन पत्रकार का लेख विगत अंक में पढ़ा आधी अधूरी निरूद्देश्य शिक्षा से भटकन के सिवा छात्र को कुछ नहीं मिल सकता है शिक्षा और प्रतिस्पर्धा को साथ-साथ लेकर चलने वाले अभिभावक गण अपने बच्चों को अंकों की प्रतिस्पर्धा में उलझाकर डिप्रेशन के गहरे गर्त में ढकेल देते है। बच्चे का भोजन भजन सब कुछ छूट जाता है। सिर्फ बच्चे के सामने अधिक अंक प्राप्त करने की आकांक्षा शेष रह जाती है कोचिंग और पुस्तक तक जिंदगी सिमट जाती है परिणाम आत्महत्या में बदल जाता है अतः आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के विचारों को महत्व देकर अपनी पीढी को आत्महत्या से बचा सकते है।

अभिषेक जैन, गुणगांव

• सम्पादक महोदय, आज गरीब अशिक्षित वंचित वर्ग के लाखों लोग जेल में बंद है और उन्हें अमानवीय तरीके से जेल में ठूसा जाता है अब सवाल यह पैदा होता है कि वेगुनाह कैदियों को न्याय दिलाने के लिए कौन आगे आयेगा बी.आई.पी लोगों को तो अपने प्रभाव और पैसे से न्याय मिल जाता है परंतु उन्हें भी कई पापड़ बेलना पड़ते है परंतु शातिर और बड़े अपराधी गिरफ्त से बाहर रहते है उन्हें कानून के शिकंजे में कसना कठिन ही होता है। आज जेल में विचाराधीन कैदी वे ज्यादा है जो सचमुच वेगुनाह है ऐसी परिस्थिति में उनका पक्ष सुनने वाला होगा यह कहना मुश्किल है अतः हम कह सकते है भारतीय न्याय प्रणाली में अभी भी सुधार की आवश्यकता है।

श्रीमती इन्द्रा जैन, इन्दौर

• सम्पादक महोदय, दिल्ली 27 वर्ष बाद भाजपा की सरकार बनी इस सरकार का नेतृत्व करने के लिए रेखा गुप्ता का नाम चयनित किया इससे ऐसा लगा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भाषणों और चुनाव प्रचारों में नारी शक्ति का स्वप्न अग्रणामी हुआ है। रेखा के पास राजनीति में महिलाओं के भविष्य की पट कथा लिखने का अवसर प्राप्त हुआ है यदि वे अच्छा प्रदर्शन करती है तो भाजपा के सिवाय अन्य दलों में भी महिला नेतृत्व की हवा गति पकड़ लेगी क्योंकि इसी दिल्ली में सुषमा स्वराज को भी मुख्यमंत्री बनाया गया था किंतु वे महिलाओं के लिए अपनी सीट नहीं सोंप पाई अब आशा रेखा गुप्ता पर ही टिकी हे जो महिलाओं के पक्ष में वातावरण बना सकती है।

राजेन्द्र जैन, भोपाल

भक्ति तरंग
करों पुकार अकामी

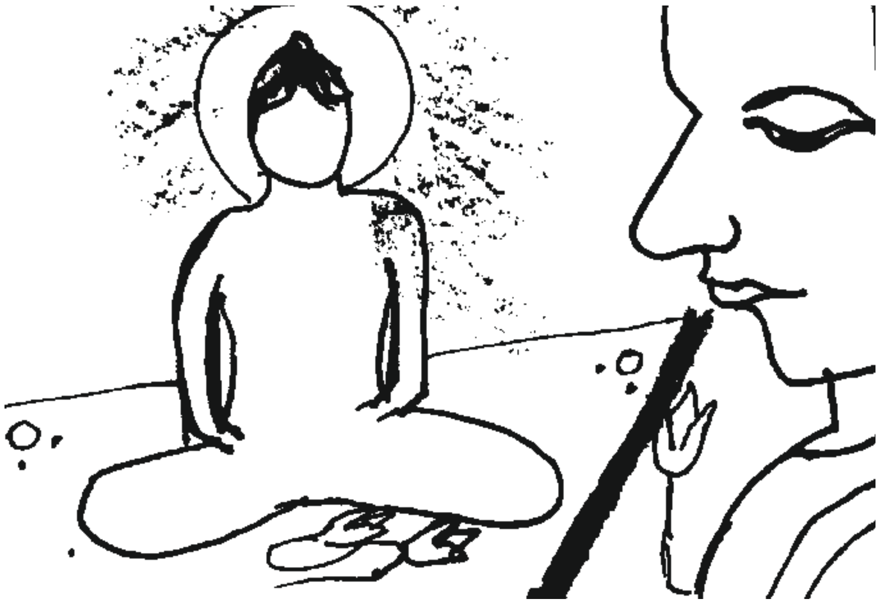

त्रिभुवन में नामी, कर करूना जिन स्वामी ।।टेक ।।
चहुँगति जनम करन किमि भास्यो, तुम सथ अंतर जानी ।। त्रिभुवन ।।1।।
कामरोग के वैद तुम्ही हो, करों पुकार अकामी ।। त्रिभुवन ।।2।।
द्यानत पूरब पुण्य उदयतैं, शरन तिहारी पामी ।। त्रिभुवन ।।3।।

हे जिनेन्द्र ! आप तीन लोक में प्रसिद्ध हैं, आप हम पर करूणा कीजिए। चारों गतियों में मैंने किस-किस प्रकार जन्म लिया और मरण किया है वह सब मैं किस प्रकार कहूँ। आप अन्तर्यामी हैं, सब जानते हैं।

आप ही कर्मरोग से छुटकारा दिलाने वाले वैद्य हैं।

मैं अकामी, अन्य सब इच्छाओं/कामनाओं से रहित आपके समक्ष इस रोग से मुत्ति के लिए पुकार कर रहा हूँ , याचना कर रहा हूँ।

द्यानतराय कहते हैं- पूर्व कर्मों के अनुसार अब पुण्योदय आने पर मुझे आपकी शरण प्राप्त करने का अवसर मिला है।

संस्कार प्रवाह

भगवान महावीर का अपरिग्रह सिद्धांत का पूरक अचेलक धर्म

भगवान महावीर विश्व शांति के लक्ष्य की पूर्ती करने के लिए अपरिग्रह सिद्धांत का प्रचार प्रसार किया वे मानते कि अहिंसा का अवतार अपरिग्रह के बिना संभव नहीं है। अतः उन्होंने अपरिग्रह के प्रतिपक्षी परिग्रह को भय शोषण अन्याय असमानता और युद्ध का मुख्य कारण माना युद्ध की हिंसा तभी जन्म लेती है जब विस्तार वादी सोच मन में पैदा हो जाता है विलासता अन्याय असमानता को आधार देती है। परिग्रह के बिना सुख शांति आनंद की कल्पना ही व्यर्थ होती है आकिंचन्य धर्म में लंगोटी की चाह को भी अशांति का कारण माना गया है। भगवान महावीर वस्त्र और पात्र दोनों को परिग्रह ही माना है। तत्त्वार्थाधिगम भाष्य के 7वें अध्याय के सूत्र 24 के भाष्य का अनुवाद अर्थ में कुप्यवर्तन वस्त्र या अन्य फुटकर वस्तुओं के प्रमाण का उल्लंघन करना (पृ. 345) इससे पुष्ट होता है कि वस्त्र और मात्र परिग्रह की परिधि में आते है।

भगवान महवीर ने नग्न होकर दीक्षा ग्रहण की और सर्व वस्त्र आभूषण को तन से उतार कर निर्ग्रन्थ मुद्रा धारण कर तपस्या धारण की। श्वेताम्बर मत के अनुयायियों ने भगवान महावीर की दीक्षा प्रसंग पर उनकी नग्नता को स्वीकार किन्तु यह एक कहानी जोड़ दी कि भगवान महावीर के कंधे पर देवदूष्य नामक वस्त्र इन्द्र ने डाला परंतु वह देवदूष्य अधिक दिन तक भगवान महावीर के कंधे पर नहीं रहा तथा वे अचेलक नग्न रूप में ही रहे। परंतु देव दूष्य के नहीं रहने पर कई मतभेद सामने आये। वे निम्न है प्रथममत- 1. देवदूष्य काँटों में उलझकर कंधे से हट गया, द्वितीयमत 2. ब्राह्मण द्वारा याचना करने पर भगवान महावीर देवदूष्य दान दे दिया, तृतीय मत 3. देव दूष्य हवा में उड़ गया, चतुर्थमत 4. गर्मी बारिश में जीर्ण शीर्ण होकर उन से देवदूर्ष्य अलग हो गया।

केशी गौतम संवाद में भी उत्तराध्यायन सूत्र ग्रंथ में भी भगवान महावीर को अचेलक बताया।

आचार्य हरिभद्र सूरि के पंचाशक ग्रंथ की गाथा 2 में आचेलकों धम्मो पुरिमस्स य पछिमस्स य जिणस्सा मझिमणाणं जिणाणं होई सचेलो अचेलो य।।2।।

प्रथम और अंतिम तीर्थंकर पूर्ण रूप से अचेलक थे बीच के 22 तीर्थंकर सचेल और अचेल भी है।

इन सब उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि भगवान महावीर स्वयं भी अचेलक रहे थे और उन्होंने अचेलक धर्म का ही उपदेश दिया था।

भगवान महावीर के देवदूष्य के मतभेदों से ऐसा लगता है कि देवदूष्य मात्र कल्पना है कोई तर्किक आधार नहीं है भगवान महावीर अटूट अपरिग्रह सिद्धांत का पूरक अचेलक धर्म निःसंदेह रूप से स्वीकार करना ही भय चिंता शोक से दूर रखता है।

महावीर का सिद्धांतः उन्नति का सोपान

✲ डॉ. प्रतिभा जैन (भाचावत), इंदौर ✲

जन-जन के कल्याण हेतु तीर्थंकरों का जन्म हुआ।
भूली भटकी मानवता को नवजीवन का संदेश मिला।।

जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में भगवान महावीर का स्थान सर्वोत्कृष्ट है। वे अंतिम तीर्थंकर थे। उन्होंने अहिंसा परमो धर्म का शंखनाद कर आत्मवत सर्वभूतेषू की भावना का देश और दुनियां में जागृत किया। जीयो और जीने दो अर्थात सह अस्तित्व, अहिंसा एवंअनेकांत का नारा देने वाले महावीर के सिद्धांत विश्व की अशांति दूर कर शांति कायम करने में समर्थ हैं।

इस संसार में समय-समय पर अनेक महापुरुष हो चुके हैं। जिन्होंने पीड़ित मानव को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास किया। प्रायः सभी धर्म प्रवर्तक अपनी-अपनी विशिष्टताओं में अलंकृत रहे। उन्होंने देश काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप अपनी प्रज्ञा के अनुसार तत्कालीन समस्याओं के समाधान में सहयोग दिया। देश, समाज और व्यक्ति की समष्टि की प्यास बुझाई और मानव को उसके परम लक्ष्य और कर्तव्य का बोध कराया। नर से नारायण और आत्मा से परमात्मा बनने की कला सिखाई। उनमें आस्था रखने वाले विभिन्न धर्मावलंबी अनुयायी आज भी अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए वैसा आचरण करने का प्रयास करते हैं।

भगवान महावीर की विचारधारा बड़ी अद्‌भुत थी। उन्होंने अपने समकालीन भारतीय दर्शन की विचारधरार पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ा। जैन ग्रंथ में उद्धृत नैतिक एवं धार्मिक सिद्धांत आज 2500 वर्षों से अधिक समय की कसौटी पर खरे ही नहीं उतरे वरन आज भी मानव समाज की अनेक समस्याओं के समाधान की कुंजी हैं ।

भगवान महावीर के लिए सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन के विचार कितने अनूठे हैं-

महावीर की एक ऐसे सुधारक और करूणा के अवतार महापुरुष थे जिन्होंने मानवता से आगे और बहुत आगे एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के लिए अपने हृदय के द्वार खोलें ।

भगवान महावीर के हम सब पर अनंत उपकार हैं । वह जिन थे जिन का अर्थ होता है विजयी। उन्होंने किसी बाहरी व्यक्ति या देश को नहीं जीता, उन्होंने जीता अपने ही अंदर छिपे शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह) को। स्व कल्याण/आत्म कल्याण के लिए इन शत्रुओं पर विजय पाना बहुत आवश्यक है। स्वयं उन्होंने जीता ही नहीं, अपितु उन्हें जीतने का सबको मार्ग भी बताया। अर्थात जैन दार्शनिकों ने आत्महित की अपेक्षा लोक हित रूपी त्रिपुटी (विश्व कल्याण, वर्ग कल्याण और व्यक्ति कल्याण की भावना) को सदैव ही महत्व दिया।

भगवान महावीर ने विश्व को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूपी पंचशील सिद्धांत दिए थे। जिनका आधार लेकर भारत का संविधान तैयार किया गया। संविधान निर्माण के पश्चात डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने मुख पृष्ठ पर भगवान महावीर का चित्र लगाया था। जिसे देखकर लोगों ने प्रश्न किया कि भगवान महावीर की ही तस्वीर क्यों दी गई है तो उन्होंने कहा कि संविधान उन्हीं के सिद्धांतों पर आधारित है। बाद में अन्य लोगों ने भी इस बात की सराहना की थी। अर्थात् भगवान महावीर मात्र जैनियों के ही नहीं थे प्राणी मात्र के भी है।

महावीर और उनकी वाणी आज भी प्रांसगिक है। इसका थोड़ा भी पालन हो तो संपूर्ण विश्व का कल्याण हो जाए। महावीर का यह दर्शन पूरे जीवन को बदल सकता है। साथ ही नैतिकता की अग्नि में दग्ध विश्व को शाश्वत शांति का दिग्दर्शन कराने में सक्षम है। उन्होंने रूढ़ियों और पाखंडों का विरोध किया। सर्वोच्च मूल्यों की विरासत जो श्रमण संस्कृति ने हमें दी है। ऐसी महावीर की वाणी का हम सदैव स्मरण करें-

बड़ी सहज सरल श्री महावीर की यह वाणी है
जियो और जीने दो यही तो जिनवाणी है।

भगवान महावीर के हितपरक उपदेश समय विश्व शांति की विचारधारा में समाहित है।

पहले विज्ञान उनके सिद्धांतों को स्वीकार नहीं करता था, पर आज तक जो भी शोध हुई है उसमे उनके सिद्धांत 100% सत्य सिद्ध हुए हैं। जैसे-पहले विज्ञान वनस्पति में जीव नहीं मानता था लेकिन भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु ने इसकी खोज की और उन्होंने कहा-वनस्पति में श्वासोच्छवास काय, बल और इन्द्रियाँ पाई जाती है, ऐसा मैं भी मानता हूं क्योंकि उन्हें मैंने विज्ञान से सिद्ध कर दिया है पर उसमें आयु की खोज बाकी है। कालांतर में उन्होंने छुईमुई के पौधे पर शोध करके सिद्ध कर दिया कि भगवान महावीर का सिद्धांत पूरी तरह सत्य है।

आज विज्ञान का युग है आज हम विज्ञान के माध्यम से तकनीकी प्रगति के ऊंचाई पर पहुंच चुके हैं । आज मनुष्य उन दो राहों पर खड़ा है जहां उसे हिंसा और अहिंसा दो राहों में से किसी कए को चुनना है। आज उसके सामने दो विकल्प (हिंसा या अहिंसा) प्रस्तुत हैंः-

विज्ञान+अहिंसा = विकास विज्ञान+हिंसा= विनाश

जब विज्ञान अहिंसा के साथ जुड़ेगा तो वहां समृद्धि और शांति होगी और यदि उसका गठनबंधन हिंसा से होगा तो संहारक होगा और अपने ही हाथों अपना विनाश करेगा। विज्ञान की यात्रा अंदर से बाहर की ओर है तो अध्यात्म की यात्रा बाहर से अंदर की ओर है। शांति अंदर है। उसकी खोज बाहर व्यर्थ है। विज्ञान ने हमें वह शक्ति दे दी है जहां स्वर्ग को धरती पर उतारा जा सकता है पर यदि हम इस शक्ति का उपयोग धरती पर स्वर्ग उतारने के स्थान पर धरती को नर्क बनाने में करेंगे तो इसकी जबाब देही हम पर ही होगी। अर्थात् आज वैज्ञानिक शक्तियों का उपयोग हमें इस दृष्टि से करना है कि वे मानव कल्याण में सहभागी बनकर इस धरती को ही स्वग बना सकें। अर्थात् मानसिक शांति के लिए अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय जरूरी है।

भगवान महावीर का जीवन प्रारंभ से ही

एक फूल की भांति महकता हुआ, कमल ही तरह निर्लेप,
स्फटिक की तरह उज्जवल एवं देवदीप की तरह आलोक से संपन्न था।

भगवान महावीर का संपूर्ण जीवन प्रेरणादायी है। उनके उपदेश जीवन स्पर्शी हैं। जिसमें जीवन की समस्याओं का समाधान निहित हे। वे चिन्मय दीपक हैं। दीपक अंधकार का हरण करता है किंतु अज्ञान रूपी अंधकार को हरने के लिए चिन्मय दीपक की उपादेयता निर्विवाद है। वस्तुत उनके प्रवचन, सिद्धांत और उपदेश आलोक पुंज है। ज्ञान रश्मियों से आप्लावित होने के लिए उनमें निमञ्जन जरूरी है-

प्राणी मात्र के लिए प्रेरणास्पद उनका गुणगान
महावीर का जीवन क्रमशः उन्नति का सोपान।

भगवान महावीर के सिद्धांत बदलेंगे जिंदगी

❊ डॉ. सुनील जैन, संचय, ललितपुर ❊

जैन परम्परा में 24 तीर्थंकर हुए हैं। वर्तमान कालीन चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव और 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महवीर स्वामी हैं। भगवान महावीर के जन्म कल्याणक को देश-विदेश में बड़े ही उत्साह के साथ पूरी आस्था के साथ मनाया जाता है। भगवान महावीर को वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। ईसा से 599 पूर्व वैशाली गणराज्य के कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला की एक मात्र संतान के रूप में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को आपका जन्म हुआ था। 30 वर्ष तक राजाप्रासाद में रहकर आप आत्म स्वरूप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में वृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था मेंआप महल छोड़ कर जंगल की ओर प्रयाण कर गये एवं वहां मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पद विहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या को उषाकाल में पावापुरी में आपको निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त हुआ।

महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उन्होंने मानव जीवन के कल्याण के लिए 5 सिद्धांत बताए थे। महावीर स्वामी का मानना था कि इन 5 सिद्धांतों को जिसने समझ लिया वो जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझ जाएगा और उसका बेड़ा हर हाल में पार हो जायेगा। 5 सिद्धांतों पर टिका था स्वामी महावीर का जीवन। महावीर ने लोगों को समृद्ध जीवन और आंतरिक शांति पाने के लिए 5 सिद्धांत बताए। ये जीवन जीना सिखाते हैं और भीतर तक अनंत शांति, आनंद की अनुभूति देते हैं। भगवान महावीर ने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के पांच महान सिद्धांतों की शिक्षा दी। पाश्चात्य संस्कृति और भागमभाग के इस दौर में ये पांच सिद्धांत आपके बहुत काम आ सकते हैं। आपके आत्मबल को मजबूत करेंगे, तनाव को दूर करेंगे और दृढ़ संकल्प शक्ति बढ़ायेगे। शांति का अनुभव होगा।

वे पांच सिद्धांत इस प्रकार हैं-

1. अहिंसा: भगवान महावीर ने अहिंसा की जितनी सूक्ष्म व्याख्या की है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने मानव को मानव के प्रति ही प्रेम और मित्रता से रहने का संदेश नहीं दिया अपितु मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु वनस्पति से लेकर कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी आदि के प्रति भी मित्रता और अहिंसक विचार के साथ रहने का उपदेश दिय है। उनकी इस शिक्षा में पर्यावरण के साथ बने रहने की सीख भी है।

महावीर अहिंसा के समर्थक थे। उनका कहना था कि इस लोक में जितने भी एक, दो, तीन, चार और पांच इंद्रियों वाले जीव हैं, उनकी हिंसा न करो, उनके पथ पर उन्हें जाने से न रोको, उनके प्रति अपने मन में दया का भाव रखो और उनकी रक्षा करो।

द्वेष और शत्रुता, लड़ाई-झगड़े और सिद्धांतहीन शोषण के संघर्षरत विश्व में जैन धर्म का अहिंसा का उपदेश न केवल मनुष्य के लिये बल्कि जीवन के सभी रूपों के लिए एक विशेष

महत्व रखता है। इसमें करूणा, सहानुभूति, दान, विश्वबंधुत्व और सर्वक्षमा समाविष्ट है। अनेकांत और उसका मर्म अहिंसा प्रतिकूल चिंतन और विचार जागृत होने पर सहिष्णु बने रहने का उपदेश देता है।

भगवान महावीर के मुख्य सिद्धांतों में अहिंसा उनका मूलमंत्र था यानी **अहिंसा परमो धर्म** क्योंकि अहिंसा ही एकमात्र ऐसा शस्त्र है जिससे बड़े से बड़ा शत्रु भी अस्त्र-शस्त्र का त्याग अपनी शत्रुता समाप्त कर आपसी भाईचारे के साथ पेश आ सकता है।

अहिंसा का सीधा-साधा अर्थ करें तो वह होगा कि व्यावहारिक जीवन में हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दुःख न दें। **आत्मानः प्रतिकूला नि परेषाम् न समाचरेत्** इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिये अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव-जन्तुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपभोग नहीं करें।

भगवान महावीर अहिंसा की अत्यंत सूक्ष्मता में गये हैं। आज तो विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि वनस्पति सजीव है, पर महावीर ने आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व ही कह दिया था कि वनस्पति भी सचेतन है, वह भी मनुष्य की भांति सुख-दुख का अनुभव करती है। उसे भी पीढ़ा होती है महावीर ने कहा, पूर्ण अहिंसा व्रतधारी व्यक्ति अकारण सजीव वनस्पति का भी स्पर्श नहीं करता। महावीर के अनुसार परम अहिंसक वह होता है, जो संसार के सब जीवों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है, जो सब जीवों को अपने समान समझता है। ऐसा आचरण करने वाला ही महावीर की परिभाषा में अहिंसक है। उनकी अहिंसा की परिभाषा में सिर्फ जीव हत्या ही हिंसा नहीं है, किसी के प्रति बुरा सोचना भी हिंसा है। बाह्य हिंसा की अपेक्षा यदि मानसिक हिंसा दूर हो जाये तो अहिंसक क्रांति का मार्ग आसानी से प्रशस्त हो सकता है। सभी धर्मो के प्रति सम्मान की भावना की आधुनिक युग की सच्ची अहिंसा है।

2. सत्य: महावीर स्वामी का कहना था कि सत्य ही सच्चा तत्व है। जो बुद्धिमान व्यक्ति जीवन में सत्य का पालन करता है वो मृत्यु को तैरकर पार कर जाता है। किसी वस्तु विचार के सभी पक्षों को जानना एवं एक साथ उनको व्यक्ति करना असंभव है। अतः हमें अपने विचार एवं पक्ष पर ही आग्रहशील न होकर दूसरे के विचार एवं पक्ष को भी धैर्यपूर्वक सुनना चाहिये संभव है कि किसी अन्य दृष्टि से दूसरे के विचार भी सत्य हो इससे सद्भाव स्थापित होता है एवं मतभेद कम होते हैं। भारतीय समाज को आज इस सद्भाव की विशेष आवश्यकता है यही अनेकांतवादी दृष्टिकोण है।

भगवान महावीर का ये सिद्धांत हर स्थिति में सत्य पर कायम रहने की प्रेरणा देता है किसी को भी इसे अपनाकर सत्य के मार्ग पर चलना चाहिये, यानी अपने मन और बुद्धि को इस तरह अनुशासित और संयमित करना, ताकि हर स्थिति में सही का चुनाव कर सकें।

3. अचौर्य (अस्तेय): अचौर्य सिद्धांत का अर्थ ये होता है कि केवल दूसरो की वस्तुओं को चुराना नहीं है यानी कि इससे चोरी का अर्थ सिर्फ भौतिक वस्तुओं की चोरी ही नहीं हैं बल्कि

यहां इसका अर्थ खराब नीयत से भी है। अगर आप दूसरों की सफलताओं से विचलित होते हैं तो भी ये इसके अंतर्गत आता है। किसी की बिना दी गई वस्तु को ग्रहण करना चोरी है सामानान्तर बही खाते रखना, टैक्स चोरी बरना, मिलावट करना, जमाखोरी करना, धोखेबाजी करना, कालाबाजारी करना, सभी चोरी के अंतर्गत जाते हैं । स्वस्थ, शान्तिप्रिय समाज व्यवस्था हेतु अचौर्य जरूरी है।

किसी के द्वारा न दी गई वस्तु को ग्रहण करना चोरी कहलाता है, महावीर का कहना था कि व्यक्ति को कभी चोरी नहीं करनी चाहिये।

4. ब्रह्मचर्यः महावीर स्वामी ब्रह्मचर्य को श्रेष्ठ तपस्या मानते थे। वे कहते थे कि ब्रह्मचर्य उत्तम तपस्या, नियम, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, संयम और विनय की जड़ है। ब्रह्मचर्य विवाह संस्था भारतीय समाज का वैशिष्ट्य है । इस संस्था के कमजोर पड़ने पर पाश्चात्य समाज में आई विसंगतियों एवं छिन्न-भिन्न होती समाज व्यवस्था सर्वविदित है । असंयमित, अतिभोगवादी जीवन शैली से जनित महामारी (एड्स) से आज सारा विश्व चिंतित है। महावीर ने साधुओं हेतु पूर्ण ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थों हेतु पाणिग्रहीता पत्नी/पति के साथ संतोषपूर्वक गृहस्थ धर्म के पालन का उपदेश दिया। जो ब्रह्मचर्य का कड़ाई से पालन करते हैं, वे मोक्ष मार्ग कीओर बढ़ते हैं।

5. अपरिग्रहः महावीर स्वामी का कहना था कि जो आदमी खुद सजीव निर्जीव चीजों का संग्रह करता है, दूसरों से ऐसा संग्रह कराता है या दूसरों को ऐसा संग्रह करने की सम्मति देता है, उसको दुःखों से कभी छुटकारा नहीं मिल सकता, यदि जीवन का बेड़ा पार लगाना है तो सजीव या निर्जीव दोनों से आसक्ति नहीं रखनी होगी।

भगवान महावीर ने अपरिग्रह को विशेष महत्व दिया था। अपरिग्रह का अर्थ है- जीवन निर्वाह के लिए केवल अति आवश्यक वस्तुओं को ग्रहण करना। मानव जाति अपनी निरन्तर बढ़ती जरूरतों के लिए प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रही है। प्रकृति के साथ सम्यक व्यवहार की सीख हमें जैन परम्परा से मिलती है।

भगवान महावीर ने तो अहिंसा और अपरिग्रह का संदेश दिया था, लेकिन आज काल आदमी हिंसा पर उतारू है। ज्यादा परिग्रह रखने लगा है। हिंसा पर आदमी उतारू ही इसलिये हो रहा है, क्योंकि वह परिग्रह में जी रहा है। जहाँ परिग्रह होता है, वहाँ पाचों पाप होते है। परिग्रह के लिए आदमी चोरी करता है। झूठ बोलता है, हत्या करता है, व्यसनों का सेवन करता है। सभी पापों की जड़ परिग्रह है। जब तक दुनिया भगवान महावीर के अपरिग्रह को नहीं जानेगी, किसी भी समस्या का समाधान नहीं होगा।

परम अहिंसक वह होता है जो अपरिग्रही बन जाता है। हिंसा का मूल है परिग्रह। परिग्रह के लिए हिंसा होती है। आज पूरे विश्व में परिग्रह ही समस्या की जड़ है। भगवान महावीर ने दुनिया को अपरिग्रह का संदेश दिया वे स्वयं अकिंचन बने। उन्होंने घर, परिवार राज्य, वैभव सब कुछ छोड़ा, यहां तक कि वे निर्वस्त्र बने । अपरिग्रह न्यायपूर्वक उपार्जित धन से अपने परिवार की सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के उपरान्त शेष राशि का राष्ट्र एवं समाज हित में उपयोग करना, उस धन का स्वयं को स्वामी नहीं अपितु संरक्षक मानना ही अपरिग्रह है।

भगवान महावीर ने **अहिंसा परमो धर्मः** का शंखनाद कर **आत्मवत् सर्व भूतेषु** की भावना को देश और दुनिया में जाग्रत किया। जियो और जीने दो अर्थात् सह अस्तित्व, अहिंसा एवं अनेकांत का नारा देने वाले महावीर स्वामी के सिद्धांत विश्व की अशांति दूर कर शांति कायम करने में समर्थ हैं।भगवान महावीर के विचार किसी एक वर्ग जाति या सम्प्रदाय के लिए नहीं , बल्कि प्राणीमात्र के लिए हैं । भगवान महावीर की वाणी को गहराई से समझने का प्रयास करें तो इस युग का प्रत्येक प्राणी सुख एवं शांति से जी सकता है।

भगवान महावीर का मार्ग आज के युग की समस्त समस्याओं , मूल्यों की पुनः स्थापना, जीवन में नैतिकता का समावेश, भोगवादिता, संग्रह तथा हिंसा से बचने के लिए सही रास्ता है। महावीर का संदेश आज राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में उपयोगी है । भगवान महावीर आदर्श पुरुष थे। उन्होंने मानवता को एक नई दिशा दी है। उनके बताये हुये अहिंसा, सत्य आदि मार्गों पर चलकर विश्व में शांति हो सकती है।

महावीर के उपदेशों में एक संपूर्ण जीवन दर्शन है। एक जीवन पद्धति है। आज की समाज को इस जीवन पद्धति की कहीं ज्यादा जरूरत है। जरूरत है हम बदलें, हमारा स्वभाव बदले और हम हर क्षण महावीर बनने की तैयारी में जुटें तभी महावीर जयंती मनाना सार्थक होगा। 2550 वें निर्वाणोत्सव वर्ष पर भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुचाएं स्वयं आगे आयें दूसरों को भी प्रेरित करें।

कविता

करके हमें अनाथ

✼ संस्कार फीचर्स ✼

नगन पलक छवि बस रही गुरुवर आठों परम
विद्यासागर संत को शत शत करूँ प्रणाम
फागुल महीना आ गया मम गुरु आये याद
उपकारी गुरुदेव का तत्व बोध प्रसाद
संयम जीवन जी गये पर से किया न मोह
अंत समय सल्लेखना राग किया न द्रो
शिष्य तजे शिष्या तजी तजा संघ परिवार
आत्म तत्त्व में लीन हो समता उर में धार
गुरु गरिमा को याद कर बहती अश्रुधार
भव भव तक भूलें नहीं हम पर जो उपकार
नील गगन में ढूंढते ऊपर करके माथ
कहाँ श्रमण नायक गये करके हमें अनाथ

जैन रामायणें

❋ लेखकः श्रीयुत प्रो. डी.एल. नरसिंहाचार्य, एम.ए ❋

रामायण का विकास एक ही कवि के मस्तक की उपज है और महाभारत एक से अधिक लेखकों के प्रयास का फल है। भारतीय साहित्य के इतिहास को जानने वाले यह जानते है। किन्तु रामायण के प्रथम और अंतिम परिच्छेद प्रज्ञिप्त है। जैन रामायणों का अध्ययन भी रामायण के विकास वर्णन को बतलाने के लिए मनोरंजक है।

किसी राष्ट्र के प्रचलित गीतों का विकसित रूप ही काव्य होता है। वह एक ही दिमाग की उपज होती है। राम-कथा के गीत वाल्मीकिजी से पहले भी अवश्य प्रचलित कहे जा सकते हैं। उन्हीं गीतों के आधार से वाल्मीकि रामायण रची गई प्रतीत होती है। वाल्मीकि के उपरान्त रामायण का और भी विकास हुआ। सम्प्रदाय और मनमतान्तरों के वशवर्ती होकर भी राष्ट्र की एक कथा अनेक रूप धारण कर लेती हे। ये रूप कालान्तर में स्वाधीन भी हो जाते हैं। जैन रामायण-अद्भुत रामायण-वशिष्ट रामायण और अध्यात्म रामायण के विषय में यही कहा जा सकता है। इस लेख में यही बताया गया है कि ई. प्रथम शताब्दि में परिपूर्ण हुई वाल्मीकि रामायण से निकल कर किस तरह जैन रामायणें विकसित हुई है। यह रामायण साहित्य में एक नया प्रयास होगा। जैनों की मान्यता के अनुसार जैन रामायण 18वीं शताब्दी तक प्रचलित थी। रामकथावतार (1897 ई) के लेखक देवचंद्र ने रामायण का विकास तीर्थंकर आदिदेव द्वारा हुआ बताया है। इन प्रथम तीर्थंकर ने भरत महाराज को रामकथा सुनाई थी। गुरुपरम्परा से वह कथा प्रचलित रही और अंत में अन्तिम तीर्थंकर महावीर को उपलब्ध हुई। भगवान महावीर ने वह रामकथा मगध के राजा श्रेणिक को सुनाई। तब से कूचि भट्टारक, नंदिमुनि, कवि परमेष्ठी, रविषेण, वीरसेन, सिद्धसेन, पद्मनंदी, गुणभद्र और सकलकीर्ति ने उस पर रचनायें रचीं। कन्नड़ भाषा में चामुंडराय, नागचंद, माघनंदि सिद्धांती, कुमुदेन्दु, नयसेन आदि ने रामायण की रचना की थी। देवचंद्र ने अपने ग्रंथ के अंतिम भाग में लिखा है कि उन्होंने गुणभद्राचार्य के त्रिषष्ठिलक्षणमहापुरुषपुराण एवं अन्य जैन पुराणों के आधार से किन्हीं संदिग्ध स्थलों को स्पष्ट कर दिया है।

प्राकृत भाषा मे रामायण के लेखक हेमचन्द्र और चौमुह थे। संभव है कि देवचन्द्र इनसे परिचित न हों। जो हों, निस्सन्देह जैन रामायणें का वाहुल्य उल्लेखनीय है।

वाल्मीकि की रामायण के प्रति इन जैन लेखकों का रूख क्या रहा है? इसको विमलसूरि और उनके निकटवर्ती रविषेण ने अपने आदर्श से स्पष्ट कर दिया है। विमलसूरि ने अपना पउमचरिय महावीर निर्वाण के 530 वर्ष बाद रचा था, यह वह स्वयं कहते है। दूसरे शब्दों में उनकी यह रचना ईस्वी 3री व 4थी शताब्दी की है, क्योंकि भगवान महावीर की निर्वाण तिथि 527 ई पू. मानी जाती है। जैन साहित्य के अपने वर्तमान ज्ञान के आधार से हम कह सकते हैं कि विमलसूरि जी पहले जैन महाकवि थे जिन्होंने वाल्मीकि रामायण का निरीक्षण जैन धर्म और जैनाचार की दृष्टि से किया था। यह बात सम्राट् श्रेणिक के मुख से निरूपी गई है। श्रेणिक का मन प्राचीन रामायणें के संदिग्धस्थलों से द्विविधा में पड़ा हुआ था। उन्होंने भगवान महावीर के प्रमुख गणधर गौतम से उनका समाधान चाहा। श्रेणिक यों सोचने लगे कि राक्षसों में महान बलवान की

पराजय बानरों द्वारा कैसे हो सकती है? क्या यह अविश्वसनीय नहीं है कि कुम्भकर्ण साल के प्रथम छः महीनों तक बराबर बिना भूख प्यास की बाधा के पड़े सोते रहे- यहां तक कि उनके कानों के पास घोर शब्द किये जाने पर उनकी निद्रा भङ्ग नहीं होती थी? और उससे भी अधिक अविश्वसनीय यह कथन है कि सोकर उठते ही कुम्भकर्ण हाथी और भैंसे निगल जाते थे? भला रावण और अन्य राक्षस जो जैनी थे वह कैसे मनुष्य का रक्त पी और मांस भक्षण कर सकते थे? आह! यह रामायण तो असत्य, गन्दी और संदिग्ध है। अपनी शंकाओं को निवृत्त करने के लिए संसार में आज अनेक ज्ञानी पुरुष है। अतः श्रेणिक गौतम स्वामी के पास पहुंचते है और उनके सम्मुख अपनी शङ्कओं को उपस्थित करते हैं। गौतम स्वामी इसी प्रसंग में रामायण की कथा को निरूपते हैं। और कहते हैं श्रेणिक नृप! ध्यान से सुनो। मैं वही कहूंगा जिसे पहले केवली भगवान कह चुके हैं। रावण मांस भक्षक राक्षस नहीं है। दुष्ट और मूर्ख कवियों द्वारा कही गई सब की बातें नितान्त असत्य है।

यह कथन पौराणिक क्षेत्र का है, परन्तु इसमें अपना कुछ महत्व भी है। विमलसूरि जैसे त्यागी महात्मा जैनी को राक्षसों के भयानक दुराचार पूर्ण व्यवहार जैसे कि वाल्मीक ने कहा है, पूर्णतया अमानुपिक तथा क्षोभदायक प्रतीत हुए। उनकी विचारशक्ति पर एक प्रबल प्रहार हुआ। इतना होने पर भी वह अपने सहधर्मियों को वाल्मीक रामायण की तरह एक रामायण प्रदान करने के कार्य से दूर न रह सके क्योंकि रामायण उन दिनों इतनी ही प्रचलित हो चुकी थी जितनी कि आधुनिक काल में है। साधारण जनता का इससे रक्त मांस जैसा धनिष्ट सम्बन्ध हो गया था। लोगों के चरित्र पर इसका अत्यधिक उत्तम प्रभाव पड़ता था जिसके लिये यह ग्रंथ जगत विख्यात हो चुका था। इसीलिये प्रत्येक धर्मावलम्बियों ने इसको अपने धार्मिक ग्रंथों तथा पुस्तकों में स्थान दिया था। बोद्धधर्मानुयायियों ने ऐसा ही किया प्रतीत होता है। दशरथ जातक में रामायण का एक भाग ले लिया गया है। उस कथा में रावण का नाम भी नहीं है। बौद्धों की दृष्टिकोण में रामायण का महत्व उसके प्रमुख पात्र रामचन्द्र के भोले भाले स्वभाव त्यागभाव तथा कर्त्तव्य परायणता के ही कारण था। उन्होंने केवल सदाचार पर ध्यान दिया जो कि प्रारंभिक बौद्ध धर्म का एक प्रधान अंग था। वह यहां तक विश्वास करते हैं कि बुद्ध ने ही इससे प्रथम राम के रूप में जन्म लिया था। रावण के चरित्र को अपने धर्मानुकूल बनाने में उनको बड़ी कठिनता उपस्थित हुई इसीलिये वह उसे अपने इस ग्रंथ में स्थान न दे सके। परंतु कुछ शताब्दियों के उपरांत लंकावतार के रावण को जो 443 ई. पू. मे लिखा गया था, एक बौद्ध महायान का रूप दिया गया है, जो कि बुद्ध जी का एक अनुयायी धर्मात्मा था। मगर इसमें उसके सीता जी के अनुराग का कथन पूर्णरूप में उड़ा दिया गया है। कहानियों के रूप में यह बौद्धों का कथन सरसता से बहुत दूर है।

जैनों का दृष्टिकोण बड़ा मनोरंजक है। यह सत्य है कि जैन धर्म के पवित्र ग्रंथ प्रायः शुष्क भाषा में लिखे गये हैं और जहाँ तक मुझको ज्ञान है उनमें साधारण सांसारिक बातों का वर्णन जैसा कि बहुत सी बौद्ध धर्म के ग्रंथों में मिलता है नहीं है। जैन रामायण इनसे विपरीत है और जैन धर्मावलम्बियों की महान उदारता का दिग्दर्शन कराती है। जैन शास्त्रकार रावण के चरित्र को मानुपिक तथा अति उच्च सिद्ध करने में वहाँ तक सफलीभूत हुए जहाँ तक बौद्धों का ध्यान भी न पहुंच सका। यह वर्णन कि यह परिवर्तन कैसे हुआ उल्लेखनीय है।

जैन धर्म अपने को सार्वभौम धर्म सिद्ध करता है। जैन धर्म कहता है कि मनुष्य ही नहीं तिर्यंच और नारकी तक पक्के जैनी हो सकते हैं अगर वह इस धर्म में श्रद्धान करें। चाहे जैसा दुष्ट तथा तिरस्कृत पुरुष क्यों न हो यदि वह उचित समय पर कर्म बंधनविच्छेद करना प्रारंभ करता हे तो वह अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त होगा। आत्मा की जन्ममरणयात्रा में कर्म का प्रधानतया हाथ है इस मतानुसार रावण किसी भी प्रकार घृणा अथवा तिरस्कार का पात्र नहीं है। इसके प्रतिकूल वह हमारी सहानुभूति प्राप्त करने योग्य हैं। विमल सूरि ने भी अपनी सहानुभूति प्रदर्शित की है। प्रारंभ में ही उन्होंने कह दिया है कि रावण दुष्ट प्रकृति वाला राक्षस नहीं था। वाल्मीकि के अनुसार वह एक राक्षस अनार्य्य तथा मनुष्य व देवताओं का प्रबल शत्रु था। उनके मतानुसार उसके कालिमायुक्त चरित्र में कोई उज्जवल स्थान नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह संसार के सम्पूर्ण दुराचारों का पुतला था। परंतु विमलसूरि ने एक अलहदा ढङ्ग से उसका चरित्र चित्रण किया है जो कि पूर्णतया मानुपिक है। मनुष्य की प्रकृति पूर्णतया मानुपिक या अमानुपिक नहीं हो सकती। मनुष्य प्रकृति सदाचार व दुराचार का मिलन होती है। इन दो में से किसी एक का दूसरे से बढ़ जाना मनुष्य को भला या बुरा बना देती है। इसलिये वाल्मीकि द्वारा उपस्थित किया गया रावण का चित्र अतिशयोक्तियों से परिपूर्ण है। यह एक आर्य की एक अनार्य्य की ओर घृणा प्रदर्शित करता है। विमलसूरि ने इस अन्याय को जानकर एक ही बार में (लेखनी द्वारा ही नहीं वरन विचारों द्वारा भी) उसको मनुष्य बना दिया। राक्षस का भद्दा बाह्यरूप क्षण भर में एक श्याम घटा के समान विलीन हो गया। वह रूप बड़ा सुन्दर हो गया और अब रावण सर्वगुण सम्पन्न बन गया।

विमलसूरि उसको इस प्रकार वर्णन करते है। शरीर गेहुंआ रत्न के समान कान्तिवानः मुख पूर्णविकसित कमलस्वरूप, दीर्घकाय वक्षस्थल, बलवान् लम्बी भुजायें पतली कमर, सिंह के समान पुट् हाथी के समान रानें, ग्राह के समान पैर, रत्नजटित नवीन वस्त्रों से विभूषित यह रावण संसार के पुरुषों के राजा इन्द्र के समान ऐश्वर्यवान प्रतीत होता था। वास्तव में यह रूप एक हद तक मानने योग्य है। उसके असाधारण शिर तथा भुजायें विलीन हो जाती है और वह एक साधारण मनुष्य का शरीर धारण करता है। विमलसूरि के जादू भरे स्पर्श से न केवल रावण को मनुष्य रूप प्राप्त हो गया वरन् मनुष्य हृदय भी प्राप्त हुआ। उसके हृदय में कोमल एवं सुन्दर विचारों का वास हो गया। पउम चरिय में बहुत से उदाहरण हैं जिन से रावण के हृदय की उच्चता सिद्ध होती है। एकाध उदाहरण यहाँ उद्धृत किये जाते हैं

एक बार त्रैलोक्य विजय से संलग्न रावण ने वरुण को परास्त कर के बन्दी बनाया। वरुण के प्रजागण शोकातुर होकर विलख विलख रो रहे थे। रावण ने उनका विलाप सुना और आर्द्र होकर वूरण को स्वतंत्रता तथा उसका राज्य सौंप दिया। उसके जीवन की अंतिम घड़िया में जब कि मृत्यु और अपमान उसकी शोकाकुल आत्मा के निकट मंडरा रहे थे, वह पछताता है उस दुष्कार्य के लिए जो उसने सीता के साथ उसको उसके पति से दूर रखने तथा दुःख आदि देने में किया था। वह स्वयं अपने से घृणा करता है, विलाप करता है, अपनी माता से बिछडे हुए बालक के समान बेचारी सीता के दुखों पर रोता हे। कविता द्वारा विमल सूरि रावण को सर्वोच्च मनुष्य से भी उच्च मानने के लिए हमें बाध्य करने के प्रयास में पूर्ण सफलीभूत हुए हैं।

कवि एक पग आगे और बढ़ता है रावण को जैन धर्मानुयायी बनाता है। इसका अर्थ यह है

कि रावण हिंसा से दूर अथवा किसी जीवधारी को दुःख अथवा क्षति पहुंचाने से दूर रहा है। रावण की लड़ाइयों के वर्णन में कवि ने इस बात का विशेष ध्यान रखता है, रावण सब राजाओं को मार कर तीन खण्ड का चक्रवर्ती राजा नहीं बनता है केवल उनको हराकर और दासता स्वीकार कराकर छोड़ देता है। शायद की कोई राजा उसके हाथों मृत्यु को प्राप्त हुआ हो। वह अहिंसा के सिद्धांत का विशेष ध्यान रखता था। एक बार राजपुर का शासक मारूत बलि दे रहा था। जब रावण ने सुना तो वह वहाँ गया। उसको मारने के विचार से नहीं वरन् इस दुष्कर्म को रोकने के लिए। यह कार्य उचित ही था क्योंकि बलि में प्रत्यक्ष रूप में हिंसा होती है। वाल्मीकि के रावण के विपरीत जो कि साधुओं का शत्रु था, विमलसूरि का रावण जैन मुनियों का अनन्य भक्त था। वह उनको साष्टांग प्रणाम करता है और उनसे धर्मश्रवण करता है। वह हरिषेण की पवित्र कथा सुनकर बहुत हर्षित हुआ। तीन खण्ड की विजय के पश्चात उसने जैन तीर्थंकरों के मंदिरों की स्थापना के द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया। इस प्रकार विमल सूरि ने उसको जैनधर्मावलम्बी बनाकर उसका आचरण अति उच्च कर दिया है।

इन बातों पर ध्यान देने के पश्चात् विमलसूरि का यह कथन कि रावण एक श्रेष्ठ तथा संपूर्ण राज्य गुण विभूषित राजा था पाठकों को आश्चर्य में नहीं डाल सकता एक राजा की अपेक्षा वह शक्तिवान् महान तथा अद्वितीय शासक था। विमल सूरि रावण को एक महान् राजा के समान ऐश्वर्यवान् वर्णन करते हैं। अपनी विजय यात्रा समाप्त करने के पश्चात् रावण अतुल सम्पत्ति, कीर्त्ति तथा वैभव का स्वामी बन गया, अनेक विद्याधर उसके दास हो गये। तीन खंड में उसका कोई भी शत्रु नहीं रहा, उसकी राजधानी के नागरिक उसकी भूरि भूरि प्रशंसा करने लगे। जिस देश में उसका शुभागमन होता है वह देश स्वर्ग के समान धन, धान्य तथा रत्न से पूरित हो जाता है। वहाँ पर फिर अकाल का भय नहीं रहता। उस देश में पुण्य का वास हो जाता। हरी-भरी पर्वतीय झरनों सहित, कुटज पुष्पों से सुशोभित भूमि एक नवयौवना सुन्दरी के अनुरूप दशानन के शुभागमन पर मधुर मुस्कान से उसका स्वागत करती। पूर्वजन्म के शुभ कर्मों के परिणाम स्वरूप रावण इन सुख कीर्ति तथा ऐश्वर्य को भोगता विमल सूरि एक शब्द में ही रावण की संपूर्ण महत्ताओं का वर्णन करते हैं वह शब्द है प्रवर पुरुष अर्थात् सर्व श्रेष्ठ पुरुष।

मैंने विमलसूरि के रावण के आचार के कथानक का संक्षिप्त परिचय दिया है। उन्होंने उसे सर्वश्रेष्ठ पुरुष, एक जैनी तथा पूर्ण राजा वर्णन किया है। परंतु ऐसा शक्तिवान् राजा भी मृत्यु को प्राप्त होना चाहिये। यहाँ पर यह सिद्धांत आता है। विमल सूरि उसको प्रति वासुदेव (प्रतिनारायण) त्रेसठ शलाकाधारी पुरुषों में से एक बताते है। उसकी मृत्यु अपने शत्रु वसुदेव के ही द्वारा होनी अनिवार्य है। उनक मध्य शत्रुता का भी कोई कारण होना आवश्यक है। अस्तु, रावण द्वारा सीता की चोरी ही उसके विनाश का कारण बनती है। यह बात रावण को नारद मुनि के द्वारा पूर्णतथा ज्ञात हो चुकी थी। यह भविष्यवाणी थी कि रावण की मृत्यु राजा जनक की पुत्री सीता के कारण राजा दशरथ के पुत्रों के द्वारा होगी रावण ने दशरथ और जनक को मारकर ऐसी मृत्यु से बचना चाहा मगर दुर्भाग्यवश वह दोनों विभीषण के हाथ से निकल गये और विभीषण उनकी मोम की बनी हुई मूर्तियों को ही वास्तविक दशरथ व जनक जान काटकर कर चला आया।

इसी प्रसंग में हमको एक दूसरी बात पर भी ध्यान देना है। रावण की मृत्यु का कारण उसका

सीता के प्रति अनुचित अनुराग था। विमलसूरि ने रावण के चरित्र चित्रण के द्वारा ब्रह्मचर्य रहित जीवन के भयानक विनाशकारी परिणामों को पाठकों के सम्मुख उपस्थित करना चाहा। ब्रह्मचर्य जैनियों के पाँच व्रतों में से एक व्रत है। चाहे जैसा महान् व चरित्रवान् पुरुष हो यदि किसी समय वह ब्रह्मचर्य पथ से डिग जाता है तो उसकी मृत्यु बड़े दुःख व घोर अपमान सहित होती है। यदि कोई मनुष्य स्वभाव से ही दुराचारी हो तो उसकी दुर्दशा में किसी प्रकार की शंका करना घोर मूर्खता है, इसलिये विमलसूरि सीता से मिलाप के पूर्व तक रावण के ब्रह्मचर्य का ध्यान रखते हैं। मन्दोदरी के अतिरिक्त रावण के अनेक विवाहिता रानियाँ थी। अपनी विश्वविजय की यात्रा में एक बार नलकूवर की राजधानी में उसका आगमन हुआ। नलकूवर की पत्नी उपरम्भा जो कि अपने पति से प्रसन्न नहीं थी रावण से लड़कपन से ही प्रेम करती थी। जब उसको यह ज्ञात हुआ कि रावण उसके इतने समीप है तो उसने अपने रूप द्वारा रावण को अपने वश में करना चाहा, परंतु अमूल्य शीलरत्न की रक्षा करना चाहिये और अपने कुल की मर्यादा नहीं खोना चाहिये। रावण इस परीक्षा में पूर्ण सफल रहा। रावण को अपने ब्रह्मचर्य में किसी प्रकार की दुर्बलता का आभास मिला और इसलिये उसने अनन्तवीर्य के निकट एक व्रत पराङ्नाविरत ग्रहण किया। और नारी रूपी शत्रु से अपनी रक्षा करने के लिए सुदृढ़ दुर्ग की स्थापना की। उसका सीता पर आसक्त होना उसकी दुर्बलता का द्योतक है और इस दुर्बलता का दंड उसे अच्छी तरह भोगना पड़ा। वह पूर्ण त्यागी न था।

अब यह स्पष्ट हो जाता है कि विमल सूरि का वाल्मीकि कृत रामायण के रावण के चरित्र को जैन धर्म के सिद्धांतों के अनुरूप कविताबद्ध करना एक अनोखी सूझ है। यूनानी विद्वान् अरिस्तू का यह सिद्धांत है कि दुःखान्त कथा के नायक का अद्वितीय त्याग और सत्यप्रियता की दृष्टि की त्रुटि होना बताना चाहिये। यह विमल सूरि के रावण के लिए पूर्णतया उचित सिद्ध होता है। विमलसूरि के कथन का महत्व वहां पर बढ़ जाता है जब कि रावण की दुःखद घटना के उनके हृदय में दया का संचार करती है। एक कवि व कलाकार की अपेक्षा विमलसूरि की निपुणता रावण के चरित्र चित्रण में पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है। रावण को उन्होंने अपनी कथा का प्रधान नायक माना है यद्यपि वह अपनी कथा का नाम पउमचरिय रखते है जो कि रामचन्द्र जी का उपनाम है। रामचन्द्र की अपेक्षा रावण हमारा ध्यान अधिक आकर्षित करता है और हमारे मस्तिष्क में सदा के लिए बास कर जाता है। रावण का चरित्र मनुष्योपयोगी बातों से परिपूर्ण है।

मैं विमल सूरि के वाल्मीकि रामायण के आधार पर लिखने का कारण और इस आधार पर रची हुई कविता की सुन्दरता पर एक संक्षिप्त प्रकाश डाल चुका हूं। उन्होंने हमको एक नवीन रावण दिया है जिसके साथ हमको सहानुभूति हो सकती है। उनका अदम्य साहस एक नई रचना को जन्म देता है, उनका कार्य एक कवि की विचारशक्ति की उड़ान की अपेक्षा कवियों के लिए उदाहरण है। उन्होंने बाद के कवियों के लिए एक मानचित्र छोड़ दिया जिसके आधार पर कि वह अन्य रचनायें रच सकें। इस प्रकार उन्होंने एक नवीन पद्धति को जन्म दिया। प्राकृत भाषा के लेखकों में जिन्होंने श्रीविमल सूरि का अनुसरण किया है, उनमें पउमचरिय के रचयिता चौमुंह वर्णन करने योग्य हैं। दशम शताब्दी में रचित हरिवंश पुराण ग्रंथ के रचयिता धवल ने उनके बाबत् कुछ वर्णन किया हैं। उसी का नाम एक ग्रंथ के 12000 श्लोकों का एक भाग स्वयंभू देव ने रचा है, वह भाग उपलब्ध है। वह अपनी रचना समाप्त न कर सके अतः त्रिभुवन स्वयंभू नामधारी एक

दूसरे लेखक द्वारा वह पूर्ण हुआ। परंतु वह दूसरा भाग जो इस प्रकार पूर्ण हुआ अब उपलब्ध नहीं है। ग्वालियर के यशःकीर्ति भट्टारक ने उपरांत उसको पूरा किया है। स्वयं भू देव का अस्तित्वकाल सप्तम व दशम शताब्दी के मध्य है। मैं इन दोनों ग्रंथों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा। यद्यपि मेरा इन ग्रंथों को विमल सूरि पद्धति के अनुसार कहना केवल अनुमान पर है परंतु इस आधार पर कि उनके नाम एक से हैं, और उनमें एक ग्रंथ का उपलब्ध भाग विमल सूरि की रचना से मिलता है इस कल्पना को सत्य सिद्ध करता है।

विमलसूरि के अनुसरण करने वालों में सर्व प्राचीन संस्कृत रचनाकार पद्मपुराण अर्थ महा रामायण के रचियता रविषेण हैं। उन्होंने विमलसूरि की रामायण को एक बृहत् रूप दे दिया है। वर्णित अध्यायों का अधिक संख्या में होने से ग्रंथ को रूढ़ा दिया गया है। उनका कार्य सरल और सीधा है। कहीं कहीं पर उनके श्लोक विमलसूरि के श्लोकों का केवल अनुवाद रूप ही मिलते हैं। उनकी रचना विमलसूरि की रचना से पूर्णतया मिलती है।

देवचन्द्र की रामायण का नाम दूसरे नम्बर पर आता है जो विद्वानों से पूर्वपरिचित है। देवविजय गणी ने एक रामचरित की संस्कृत गद्य में रचना की। उन्होंने हेमचन्द्र का अनुसरण किया है। कन्नड़ साहित्य में विमलसूरि के अनुयायियों में जैन रामायणों के सम्बन्ध में नागचन्द्र का नाम प्रमुख है, जिनका कि दूसरा नाम अभिनव पम्प है। उन्होंने कथा की रचना में बड़ी योग्यता का परिचय दिया है और अनावश्यक बातों काट छाँट कर के उसको असली रामयण से अधिक सुन्दर बना दिया है। उनकी शैली सरस और सरल है। उसने कन्नड़ भाषा की अन्य जैन रामायणों के लिए मानचित्र तैयार करा दिया है। उनमें कुमुदेन्दु का नाम मुख्य है, जिसके नाम पर ही उसकी रचना का नाम मुकुदेन्दु रामायण रख दिया गया है। यह ग्रंथ तेरहवीं शताब्दी में रचा गया था। यह सुपरिचित षट् पद छन्दों में रचा गया है। इनकी रचना में इस छन्द के छहों प्रकार के छन्द पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ रागल छन्द हैं। उसने नागचन्द्र की उपमाओं और अलंकारों का दुवारा अपनी रामायण में उपयोग किया है, जिससे सिद्ध होता है कि उन्होंने नागचन्द्र का अनुसरण किया है। देवप्प ने 1525 ई. में सॉगत्य छन्द में रामविजय चरित की रचना की है। देवचन्द्र ने जिनके बावत् अभी वर्णन हो चुका है अपनी रचना रामकवावतार में नागचन्द्र के बहुत से छन्दों को शामिल कर लिया है। इसके बाद चन्द्रसागर वर्णी ने जैन रामायण की रचना भामिनि षट् पद छन्दों में उन्नीसवीं शताब्दी में किया है।

विमलसूरि के अनुसरण करने वालों का शिजरा निम्न प्रकार है।

पउमचरिय
(विमलसूरि)

प्राकृत	संस्कृत	कन्नड़
1 पउमचरिय	1. पद्मपुराण	1. पम्प रामायण
(चौमुह)	(रविषेण)	(नागचन्द्र)
2 पउमचरिय	2. जैन रामायण	2. कुमुदेन्दु रामायण
स्वयंभूदेव	हेमचन्द्र	(कुमुदेन्दु)

त्रिभुवन स्वयंभू	3. रामचरित	3. राम विजय चरित
यशःकीर्ति भट्टारक	(देवविजयगणी)	(देवप्प)
		4. रामकथावतार
		(देवचन्द्र)
		5. जिनरामायण

विमलसूरि और वाल्मीकि रामायाण की कुछ बातें जिनमें कि एक दूसरे में बहुत अंतर पड़ गया है अब यहाँ दी जाती है। पउमचरिय का सार संक्षिप्त में वही हैं जो वाल्मीकि के रामायण का है। शम्भूक एक नीच गोत्र का मनुष्य था जो एक साधु का रूप धारण किये था। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाँड में बताया गया है कि उसकी मृत्यु राम द्वारा हुई। विमलसूरि इस घटना को बड़ी बुद्धिमत्ता से एक नई प्रकार से वर्णन करते है। इनकी रामायण से शम्भूक चन्द्रनखा का पुत्र बताया गया है। चन्द्रनखा रावण की बहिन और खर की स्त्री थी। लक्ष्मण भ्रमणावस्था में एक बाँस की झाड़ी देखते है। उसमें एक तलवार फूलों से पूजी हुई घुसी हुई है। लक्ष्मण इसकी धार की परीक्षा करने के लिए बाँसों पर एक तलवार का भरपूर हाथ मारते हैं। एक ही हाथ में बाँस कट पड़ते हैं। उन बाँसों के साथ एक लड़के का कटा हुआ सिर देखते हैं । यह लड़का शम्भूक था। लक्ष्मण अपने से अंजाने में भुल हुई भूल के लिए पश्चाताप करते हें। कला की अपेक्षा विमलसूरि का यह कल्पना कार्य सराहनीय है। पउमचरिय के अनुसार सुग्रीव और हनुमान बानर वंशी लोगों के शासक थे। रावण को कर दिया करते थे। हनुमान वरुण के विरूद्ध लड़े गये युद्ध में उसकी सहायता करते हैं। राम और लक्ष्मण के यहाँ कई व्याह हुए हैं। जिससे राम का सीता के प्रति अथाह प्रेम प्रकट नहीं होता। अतः यह बात प्रशंसा योग्य नहीं है। यह वासुदेव लक्ष्मण थे जिन्होंने रावण को मारा था। रामचन्द्र उसी जन्म वा देह से मोक्षगामी थे। अतः वह हिंसाकर्म कर के अपने को नरक में क्यों कर डाल सकते थे। लक्ष्मण रावण को मारने के कारण नरक गये। सीता को प्रभामंडल नाम का एक भाई था जिसने कि बड़े-बड़े साहसोचित कार्य किए हैं। अंतर कहीं कहीं पर मिलता है। इसकी कथा वही है तो वाल्मीकि रामायण की है। अतः यह कहा जा सकता है कि विमलसूरि का स्मूल वाल्मीकि का स्कूल है। यह स्कूल ही अधिक ख्याति प्राप्त कर चुका हैं क्योंकि रावण का चरित्र जो इस कथा में अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है मनुष्य के मस्तिष्क के लिए बड़ा रूचित है।

अब मैं जैन रामायण की एक दूसरी शाखा का वर्णन करूंगा। चूंकि मैं गुणभद्राचार्य से प्रथम के किसी भी रामायण के रचियता को नहीं जानता, अतः इस शाखा को उन्हीं के नाम से पुकारूंगा। गुणभद्र ने अपनी रामायण को श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिन के जीवन चरित्र, उत्तर पुराण के 68 वें पाठ में एक पूरक कथा की तरह वर्णन किया है। उस कथा का ढाँचा निम्न प्रकार है।

रत्नपुर के राजा प्रजापति को चन्द्रचूढ़ नामधारी पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई जिसके मित्र का नाम विजय था। उनके कुबेर की कन्या के साथ बलात्कार करने के प्रयत्न के कारण उनको देश निकाला दिया जाता है। वह एक पहाड़ी पर छोड़ दिये गये। उस पर एक साधु रहते थे। वह साधु के पास आदर भाव के साथ जाते है और मुनिव्रत धारण करते हैं । वह मुनि भविष्यवाणी करते हैं कि तुम तीन भवों के पश्चात् अष्टम वासुदेव व बलभद्र होगे । वह सानतकुमार स्वर्ग से जाकर कनकचूल तथा मचूल नाम के देव होते हैं । वहाँ से फिर वह काशी राज्य के शासक दशरथ की

राजधानी वाराणसीपुर में राजा दशरथ के यहाँ राम और लक्ष्मण नाम से जन्म धारण करते हैं। इनके जन्म के पश्चात् वहा साकेतपुर को अपनी राजधानी बना लेते हैं । यहाँ पर भरत और शत्रुघ्न उत्पन्न होते हैं। राजा जनक और उनकी स्त्री वसुधा को एक लड़की मिलती है जिसका नाम वह सीता रखते है। एक बार राजा जनक ने होम करने का विचार किया मगर रावण के भय से वह ऐसा न कर सके। इसलिये उन्होंने निश्चय किया कि जो कोई भी उनको बलि यज्ञ करने में रावण के विरूद्ध सहायता करेगा वही सीता को व्याहेगा। यहाँ पर नमाम बलियज्ञों के पापमय परिणामों के विरूद्ध एक लम्बा वर्णन है।

उपरांत रावण की जन्मकथा वर्णित है। अपने तीसरे पूर्व भव में वह सार समुभव नाम के देश में नरदेव नामक पुरुष था। वह मृत्यु को प्राप्त होकर सौधर्मकल्प में देव हुआ। वह देव चय कर के लंका के राजा पुलस्त्य की रानी मेघ श्री का पुत्र रावण हुआ। एकदा रावण की भेंट मणिमती नामक साध्वी से हुई, जो तपस्या कर रही थी। रावण ने उसे चलित करने की कोशिश की। मणिमती को इस पर क्रोध आ गया और उसने मंदोदरी के गर्म से रावण के पुत्री हुई। उसके जन्म समय बदला चुकायेगी। वह मरी और मंदोदरी के गर्म से रावण के पुत्री हुई। उसके जन्म समय अनेक अपशकुन हुए। इसलिये ही इसे एकान्त से मिथिला के पास छोड़ेगा दिया गया। जनक यज्ञ करने के लिए भूमि ढूंढ रहे थे। वह कन्या हिल गई। उन्होंने उसे वसुधादेवी के सिपुर्द कर दिया और उसका नाम सीता रख दिया। जनक के बुलाने पर राम मिथिला गए। जनक के प्रसन्न हो सीता का ब्याह राम से कर दिया। राम साकेत वापस आए और कुछ दिनों बाद लक्ष्मण और सीता का ब्याह राम से कर दिया। राम साकेत वापस आए और कुछ दिनों बाद लक्ष्मण और सीता को लेकर वाराणसी में आकर राज्य शासन करने लगे। दशरथ को यह विछोह असह्य हुआ, परंतु राम ने एक नृप का कर्तव्य समझाकर उन्हें संतोषित किया। नारद महाराज रावण से सीता के सौन्दर्य की तारीफ करते हैं। रावण सीता के रूप पर मोहित होता है और अपनी बहिन सूर्पणखा को सीता की शील परीक्षा के लिए भेजता है। वह हताश होकर लौटती है। इस पर रावण जाता है। वह वाराणसी चित्रकूटवाटिका में पहुंचता है, जहां राम और सीता क्रीड़ा कर रहे थे। रावण अपनी विद्या से मारीच का रूप एक सुंदर हिरण में पलटता है। सीता हिरण पर मोहित होती है। राम हिरण पकड़ने जाते हैं और दूर निकल जाते है। उधर रावण राम का रूप का सीता के पास आता है और उसे ले जाता है। लंका पहुंच कर रावण सीता को लुभाने की कोशिश करता है, परंतु सीता अनशन लेती हैं। राम व लक्ष्मण व्यर्थ सीता को ढूंढ़ते हैं। दशरथ के दुःखन से उन्हें पता चलता है कि रावण से सीता को कष्ट पहुंचा है। वे बालि, सुग्रीव और आञ्जनेय से मिलते हैं। वालि की मृत्यु लक्ष्मण से हाथ से होती है। आञ्जनेय सीता के समाचार लाते हैं। मन्दोदरी सीता को पहचानती है कि वह मेरी पुत्री है और रावण से कहती है कि उन्हें राम को लौटा दें। युद्ध अनिवार्य होता है। आञ्जनेय पुनः लंका जाते हैं और विभीषण को राम के पक्ष में कर आते हें। वह लंका जला आते हैं, परंतु रावण आदित्य गिरि पर विद्यासिद्ध करता है। युद्ध में रावण मायाचारी सीता का सिर काटता है, जिससे राम शोक प्रस्त होते हैं। विभीषण सान्त्वना देते है। लक्ष्मण के चक्र से रावण की मृत्यु होती है। विभीषण सान्त्वना देते हैं। लक्ष्मण चक्र से रावण की मृत्यु होती है। वाराणसी आकर राम मुनि पद धारण करके केवली होते हैं । लक्ष्मण रावण की हत्या के पाप से पङ्कप्रभा नरक में जाते है।

संक्षेपतः गुणभद्राचार्य के अनुसार राम-कथा का यह वर्णन है। उन्हें के अनुरूप प्राकृत

भाषा में भी कोई रामायण हो, इसका पता नहीं। पुष्पदंत का तिसट्ठिमहापुरिस- गुणालंकार उत्तरपुराण के आधार पर रचाा गया है। सम्भवतः उसमें यही रामकथा हो। संस्कृतभाषा में श्रीकृष्ण रचित सन् 1528 ई.) पूखचन्द्रोदयपुराण है जिसमें यही रामकथा है। कन्नड़ भाषा में सर्वप्राचीन रामकथा चामुंडराय के त्रिभ्रष्टिशलाकश्चरूप पुराण में है जिसकी रचना सन् 197 ई. में हुई थी। वह गुणभद्राचार्य के वर्णनानुकूल है। इसके पश्चात् नागराजकृत पुण्यास्रव कथासार (सन् 1331 ई.) है। बंधुकर्म के जीव संबोधन (1200ई.) में भी ऐसी ही रामकथा है। यह श्रेणी अब यों समझियें:-

गुणभद्र

प्राकृत	संस्कृत	कन्नड़
1. पुष्पदंत के	1. पुण्याभवकथा	1. चामुंडरायपुराण
तिसट्ठिमहापुरिस	(रामचन्द्रमुमुक्षुकृत)	2. नागराजकृत
गुणालंकार में	2. पुण्यचन्द्रोद्रय पुराण	पुण्याभवसार
वर्णित रामकथा।	(म. कुणाकृत)	3. बन्धुवर्मा

गुणभद्र की रामकथा विमलसूरि के वर्णन से विभिन्न है। इसमें सीता को रावण की पुत्री बताया है। कई एक रामकथाओं में सीता रावण की पुत्री कही गई है। (देखो हिस्ट्रीऑफ इण्डियन लिट्रेचर भा. 2 पृ. 494) किन्तु गुणभद्र की रामकथा का आधार क्या है ? इसका ठीक पता नहीं चलता। शायद अद्भुत रामायण अथवा दशरथ जातक का प्रभाव उन पर पड़ा हो। मारोच का हिरणरूप होने का वर्णन ठीक वाल्मीकि की तरह है। अतः उनका आधार कोई एक विशेष नहीं कहा जा सकता- उन्होंने सब ही जनश्रुतियों से कुछ न कुछ ग्रहण किया प्रतीत होता है। (?) हाँ , गुणभद्राचार्य और विमलसूरि इस विषय में एक मत है कि वैदिक यज्ञों का निषेध करें और हरिषेण की कथा लिखें। यह कला की दृष्टि से हेय है। इसीलिये उसका कम प्रचार हुआ है।

भारतीय साहित्य में अन्य रामायणों पर जैन रामायणों का प्रभाव अवश्य पड़ा है। श्री डी.सी सेन बंगाली रामायणों पर इस जैन प्रभाव को स्वीकारते हैं। डॉ. टॉमस सा. ने एक तिब्बतीय रामायण का विशेष वर्णन लिखा है। इस रामायण की प्रतियां चीनी तुर्किस्तान से मिली थी और लगभग सन् 800-900 ई. की हैं। वे स्वतंत्र रचनायें है। उन पर जैनों का प्रभाव स्पष्ट है। विमलसूरि ने रावण के पिता का नाम रयनासव (रत्नास्रव) लिखा है। तिब्बतीय रामायण में भी वही नाम है। इनमें सीता को रावण की पुत्री गुणभद्र के अनुसार ही लिखा है। कन्नड़ की अन्य रामायणों में जैन प्रभाव नहीं दिखता।

सारोशतः यह स्पष्ट है कि जैन रामायण की वर्णनशैली की दो भिन्न श्रेणियां है, जिनका एक दूसरे से गहन मतभेद है। विमलसूरि ने वाल्मीकि रामायण का अनुसरण किया प्रतीत होता है- जबकि गुणभद्राचार्य का कोई एक केन्द्रीभूत आधार नहीं था। विमलसूरि की रचना कलामय है। जबकि दूसरी कथा मात्र कथा है। यह स्पष्ट है कि जैन रामायणों का रामायणों के अध्ययन में एक विशेष स्थान है।

- अनुवादक नेमिचन्द्र जैन, अलीगंज

पवली मंदिर शिरपुर का कला पक्ष

❊ एलक सिद्धांतसागरजी ❊

शिरपुर जिला वाशिम महाराष्ट्र का ऐतिहासिक कस्बा है। नगर कि पश्चिम दिशा में एक हेमाडपंथी दिगम्बर जैन मंदिर है। इस मंदिर में एक कुआ है, जिसका अतिशयकारी जल पान से राजा एल का कृष्ठ रोग दूर हुआ था। आज भी निरोगताकारी जल में चमत्कार विद्यमान है। मंदिर के द्वार पर एक शिलालेख 1406 सं. का उत्कीर्ण है, उसमें अंतरिक्ष श्री पार्श्वनाथ लिखा अतः इस मंदिर को अंतरिक्ष पार्श्वनाथ पवली मंदिर कहा जाता है। इस मंदिर कि प्रतिष्ठा श्री नेमिचन्द्र प्रतिष्ठाचार्य दिगम्बर मुनि के तत्वावधान में हुई। ऐसा लेख एक शिला पर विद्यमान है।

यह मंदिर दिगंबरी तो है ही साथ ही बेजोड़ शिल्प के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर में द्वार रचना, स्तंभ रचना, मांडीवर रचना तथा पद्म शिल्प रचना अत्यंत सुंदर और दर्शनीय है।

द्वार रचना इस मंदिर में तीन प्रवेश द्वार और एक गर्भ गृह द्वार है। इस प्रकार कुल चार द्वार है। पूर्व दिशा में पंच शाखा द्वार है। इस द्वार में तीर्थंकर का ललाट बिम्ब है। तथा पांच शाखा मुख्य शाखा दो तीर्थंकर कि कायोत्सर्ग मुद्रा में प्रतिमा है तथा 8 चामरधारी देव है। बेल बूटा शाखा के साथ स्तंभ रचना और गंधर्व पंक्ति, व्याल पंक्ति के साथ ही मालाधारी देवों की सेना ललाट बिम्ब के नीचे है। इसी तरह दक्षिण और उत्तर द्वार की रचना है। इन तीनों द्वारों की मिलकर 6 तीर्थंकर कायोत्सर्ग मुद्रा में है। द्वार के नृत्यांगना रूपक है।

गर्भ गृह का द्वार पंच शाखा का है। जिसका अलंकरण बेल बूटी, बयाल पुरुषों , गंधर्व सेना तथा नीचे यक्ष यक्षणियों का अलंकरण किया गया है। सभी द्वारों के उदम्बरों में कीर्ति मुख अंकित है। अलंकरण स्तंभ में आम्र पल्लव के साथ कलश चित्रण भी उत्कीर्ण है।

दो स्तंभों युक्त दो अर्धमंडल अभी सुरक्षित है। जिनके स्तंभ में कीर्ति मुख निर्मित है। पूर्व दिशा का अर्धमंडप नष्ट हो गया है। परंतु दो स्तंभ अभी सुरक्षित है तथा इन स्तंभ के एक बायें स्तंभ में पद्मासन जिन बिम्ब है और दाँयें स्तंभ में सुंदर कीर्ति मुख अंकित है।

ग्रास पट्टिका इन स्तंभ के नीचे है तथा तीन पक्ष में कमल अंकन है। दक्षिण उत्तर के मंडल में पद्म शिला भी है।

मंदिर के अधिष्ठान में खर शिला सपाट है। हिरकों से अलंकृत छोटे छोटे स्तंभ है। जाड्य कुम्भ कर्णिका सपाट है।

कला युक्त मांडोवार जंघा भी अत्यंत सुंदर कला मय हीरक रचना तथा सज्जा पाट्टे युक्त पूर स्तंभ है, जिसमें आम्र पल्लव युक्त कलश रचना है। मांडीवर 5 गवाक्ष अलंकार युक्त है।

मंडप रचनाः- चार स्तंभ का मंडप है। मंडल के बाहर वृत्ताकार शिला है। स्तंभ में ऊपरी

थर पर आठ कीर्तिमुख है और उसके नीचे नृत्यांगनाएँ तथा उसके नीचे मयूर युगल थर है। दक्षिण के स्तंभ में कायोत्सर्ग मुद्रा में तीर्थंकर प्रतिमा है। मंडप के स्तंभ में उत्तर कि ओर स्तंभ में चार थर है। हीरक भद्रिका मयूर थर तीर्थंकर कायोत्सर्ग मुद्रा में है। सभी स्तंभ अष्टकोणीय है।

एक मकर मुख भी अवलोकनीय है।

मंदिर रचना योजना में- तीन अर्ध मंडल कला युक्त है। 9 तीर्थंकर कायोत्सर्ग मुद्रा में

कीर्ति मुख- 8 चार द्वारों के, 1 बाहर स्तंभ के, 32 मंडल स्तंभों के

चामर धारी देव- 12 तीन प्रवेश द्वारों के, गर्भगृह द्वार के

पद्मशिला- 2 अर्धमंडप की, 1 गर्भ गृह की, 2 मंडपों की

स्तंभ- 6 मंडप के, 6 अर्धमंडप, 4 गंधर्व सेना, 4 मालाधारी देव पंक्ति, 4 गंधर्व (नृत्य मंडली पंक्ति)

मयूर युगल पंक्ति- कुल 324 स्तंभ में।

श्वेतांबरीय फैलाये भ्रम का सच भी आम पाठक को कला के साथ जानना आवश्यक है।

1. भ्रम: राजा एल को गर्व हो गया था कि मैंने बहुत अच्छा मंदिर बनाया इसलिए मंदिर में अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति विराजमान नहीं हो सकी।

सच- यह श्वेतांबरीय महा झूठ है सच यह है कि मूर्ति आपने स्थान से नहीं हट पाने के कार ण से मंदिर में मूर्ति विराजमान नहीं हो सकी।

2. भ्रम: दिगंबरों ने खाली मंदिर में अपनी मूर्तिया विराजमान की।

सच- श्वेताम्बर यह बतायें कि दिगम्बर लोगों ने कब मूर्ति विराजमान की। 1406 के लेख से यह मंदिर दिगम्बर सिद्ध होता है।

3. भ्रम: यह वड़ का वृक्ष बहुत प्राचीन है। इसी के नीचे भगवान पार्श्वनाथ अंतरिक्ष में स्थिर रहे।

सच- यह है कि 1965 के बुजुर्ग यह बताते रहे कि यह वट वृक्ष हमारे सामने ही पला बड़ा हुआ है। श्वेतांबरिय पक्ष के कुछ लोग कहते है कि राजा एल हिंगोली से अचलपुर ले जा रहा था, तब यह भ्रम पैदा हो जाता है कि बड़ के वृक्ष के नीचे भगवान की मूर्ति स्थिर थी या नहीं।

4. भ्रम: श्वेताम्बर मैनेजमेन्ट की दादागिरी करके पवली मंदिर को भी श्वेताम्बर प्रबंधन का बताने का भ्रम फैलाते है।

सच- विवाद मात्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति मात्र का है बाकी मूर्ति पर समय सारणी लागू नहीं होती है।

अतः हम सत्य स्वीकार करे तो पवली मंदिर स्पष्ट रूप से दिगम्बर मंदिर है।

सेहत का खजाना पाईनापल

लेटिन नामः अनन्नास

अनन्नास कृमिनाशक है। अनन्नास के रस में प्रोटीन युक्त पदार्थों को पचाने की क्षमता है। इसमें से पेप्सीन से मिलता-जुलता एक (बोमेलिन) नामक तत्त्व निकाला गया है।

अनन्नास का स्वादिष्ट पेय बनाने हेतु अनन्नास व सेव का मिश्रित रस बनाकर एक चम्मच चासनी, चौथाई चम्मच अदरक का रस मिलाकर पियें। इससें आंतों में से मयुकस (अम्लसा) बाहर आ जाती है। उच्च-रक्तचाप, दमा, खांसी, अजीर्ण, मासिक धर्म की अनियमितता दूर हो जाती है।

अनन्नास पर नमक, जीरा और काली मिर्च के साथ सेवन करने पर बेहद लजीज और मजेदार लगता है। फल को सुधारते और नमक आदि लगाने के तुरंत सेवन करना आवश्यक होता है अन्यथा अनन्नास की फांकों से रस बाहर आता है। इसका सेवन पाचन, उदर रोगों, वायु विकार, पीलिया, बुखार, अम्लपित्त, अजीर्ण, डिप्थीरिया, पेट दर्द आदि रोगों में बेहद लाभप्रद है।

इसके नियमित सेवन से हृदय सम्बंधी सामान्य रोगों से मुक्ति मिलती है। इसका अम्लीय गुण शरीर में बनने वाले अनावश्यक पदार्थों को बाहर निकाल देता है और शारीरिक शक्ति में वृद्धि करता है।

कैंसर- इसमें ब्रोमोलेन तत्व होता है, जो कैंसर से लड़ने की स्वाभाविक शक्ति को बढ़ाता है।

हृदय शक्ति बढ़ाने के लिए अनन्नास का रस नित्य पीना लाभदायक है।

टॉन्सिल, गले में सूजन होने पर अनन्नास खाने पर लाभ होता है।

रोहिणी- अनन्नास का रस रोहिणी की झिल्ली को काट देता है, गले को साफ रखता है। यह इसकी प्रमुख औषधि है। ताजे अनन्नास में पेप्सीस (पित्त का एक प्रधान अंश) होता है। इससे गले की खराश में लाभ होता है।

बबासीर- मस्सों पर अनन्नास पीसकर लगाने से लाभ होता है।

फुंसिया- अनन्नास का गुर्दा फुंसियों पर लगाने से लाभ होता है। इसका रस पीने से शरीर के अस्वस्थ तन्तु ठीक हो जाते है।

अजीर्ण-अनन्नास की फाँक पर नमक ओर काली मिर्च डालकर खाने से अजीर्ण दूर हो जाता है।

शक्तिवर्धक- अनन्नास घबराहट को दूर करता है। प्यास कम करता है, शरीर को पुष्ट करता है और तरावट देता है। कफ को बढ़ाता है, परंतु खांसी-जुकाम नहीं करता। दिल और दिमाग को बहुत ताकत देता है। खाली पेट अनन्नास खाने से पाचन-शक्ति बढ़ती है। गर्मियों में अनन्नास का शर्बत पीने से तरी, ताजगी, ठण्डक मिलती है, प्यास बुझती है। पेट की गर्मी शांत होती है।

पथरी- एक गिलास अनन्नास का रस नित्य पीते रहने से पथरी निकल जाती है। पेशाब

खुलकर आता है। इसलिये यह पथरी में लाभकारी है।

सूजन- शरीर की सूजन के साथ पेशाब कम आता है, मूत्र में एल्ब्यूमिन जाता हो यकृत बढ़ गया हो, मन्दाग्नि हो, नेत्रों को आस-पास और चेहरे पर विशेष रूप से सूजन हो तो नित्य पकी हुई अनन्नास खायें और केवल दूध पर रहें। तीन सप्ताह में लाभ हो जायेगा।

आलू बुखारा

लेटिन नाम- प्रूनस डोमेस्टिका

प्यास- आलू बुखारा को मुंह में रखने से प्यास कम होती है। गला सूखना ठीक होता है।

दस्त- यह मलरोधक है लेकिन कब्ज नहीं करता। कब्ज दूर करता है, यकृत को ताकत देता है। पीलिया ठीक करता है। आलू बुखारा रूचिकारक, बबासीर, ज्वर, वायु को दूर करता है।

सीताफल

लेटिन नाम- अन्नोना रेटी कुलीटा

प्रकृति-शीतल- दो सीताफल नित्य खायें । इससे शरीर स्वस्थ और नीरोग रहेगा, साथ ही पुराने दस्त, संग्रहणी, कब्ज, भूख की कमी, उल्टी, गठिया, हृदय रोग, कूकर खाँसी, रक्त वृद्धि, यौन शक्ति वृद्धि स्मरण शक्ति का विकास, मांसपेशियों सुदृढ़, स्फूर्ति , सर्दी , कफ, प्लूरिसी, टी.वी आदि रोगों में लाभ होगा।

नारू रोग होने पर सीताफल की पत्तियों को पीसकर नित्य तीन बार लेप करने से लाभ होता है।

भूख अधिक लगती हो तो दो सीताफल नित्य, दो बार खाने से भूख कम लगने लगती है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

मंत्र जाप और पदस्थ ध्यान

✻ पं . उदयचंद जैन, सागर ✻

मंत्र जाप के प्रचलित अन्य रूप–

1. मेडिटेशन- मेडीटेशन से तात्पर्य मन में चल रही उथ पुथल पर ठहराव। यह एक ऐसी दवा है जो किसी अन्य पैथी की खुराक से संभव नहीं। जैसे कोई मीटिंग चल रही हो और एजेंडा विवादित होकर निर्णय की स्थिति न बन पा रही हो बीच वातावरण में एक मिनिट खामोशी छा जाती है। उस एक मिनिट के बाद लोगों का मन परिवर्तित होता है। जिससे विषय निर्णयात्मक दौर में आने लगता है। जैसे चौराहें का ट्रैफिक कन्ट्रोल होता तो सैकड़ों का है पर वही अनेक दुर्घटनाओं को रोकने में समर्थ है। मन के संकल्पों का ट्रेफिक कन्ट्रोल बहुत पावर फुल विधि है। एक मिनिट के लिये रूककर मेडिटेशन करना, अगर कोई गलत सोच मन में चल रही हो, इसने ऐसा क्यों किया, उसने वैसा क्योंकि, वहां जरा रूकिये और सोचियें, आई.एम.ए. पीसकुल सोल। रेड स्टॉप, आरैंज चेक, ग्रीन चेंज, बैक टू इन एक्शन। एक एक मिनिट हमारे पास है जिससे हम अपनी विरोधी सोच को अनुकूलता में बदल सकते है। यहीं कन्ट्रोल मानसिक अवसाद में जाने से रोककर आत्महत्या जैसी जघन्य दुर्घटना से बचायेगा। रात को भी सोने से पहले यही संकल्प करते करते सो जाये कि यह रात सुखद और मंगलमय बीते। इन भावों से नींद भी अच्छी आयेगी, स्वप्न भी सार्थक आयेंगे और दिन भर चले अनर्थक वातावरण को स्मृति के भंडार से पृथक रखेंगे। अगला दिन भी सुंदर व्यतीत होगा।

2. अमेरिका में प्रचलित विपश्यना- ध्यान की हजारों वर्ष पुरानी भारतीय परंपरा से सच जान रहे अमेरिकी स्क्रिप्ट राइटर डोरी शेवलेन ने जब अपने दोस्तों को बताया कि वे 10 दिन के लिये। विपश्यना। साइलेंट मेडीटेशन पर थीं, जहां उन्हें अद्‍भुत शांति मिली। दुनिया से कट कर खुद से जोड़ने की इस हजारों वर्ष पुरानी भारतीय ध्यान पद्धति को अमेरिका में लोग अपना रहे है। डोरी ने बताया कि इससे जिंदगी बदलना अहम साबित हुआ।

खुद से जुड़ने के लिये चारों और के कोलाहल से दूरी जरूरी। गहन शांति में बैठने में सक्षम होना शक्तिशाली अनुभव है। इस दौरान हम ई-मेल, वेब साइड, प्रोजेक्ट लिस्ट जैसी दैनिक उलझनों से मुक्त रह पाते है। डोरी कहती है कोई बातचीत नहीं होती न किसीतरह के प्रबंधन की अपेक्षा साइलेंट स्टीट दुर्लभ अवसर है जो हमें खुद को जानने और भीतर की यात्रा करने की अनुमति देता है।

3. ब्रेकअप (विरह काल) पर दुनिया के देशों में हुए शोध- गहरे जख्म से उभरने के लिए मानसिक मजबूती जरूरी, अपनी कमजोरी न ढूंढें, थेरेपी ले, नयी यादें बनायें दुख और पुरानी यादों की गहराई में गोता लगाते रहने से बेहतर है जल्द से जल्द इस दर्द से उभरा जाये। आम तौर पर लोग समझे कि उन्हें कितने समय तक इस वियोग में रहना है और कब नये रिश्ते बनाने है। ब्रेकअप का दुख गहरा होता है पर जख्म परत दर परत ही भरता है । इसके लिये मानसिक मजबूत होना जरूरी है

। इसमे हमारे अपनो का सहारा एक किले की तरह हमारी रक्षा करता है। यह हमें फिर से बाहर निकलने और नये पार्टनर बनाने की हिम्मत देता है क्लिनिकल कोचं माइसा बैटल बताती है कि लोग तब भी एक अच्छे पार्टनर साबित हो सकते है जब वे हीलिंग की प्रकिया से गुजर रहे हों। यदि हम इस जादुई लम्हें का इंतजार करते रह गये कि अतीत भूलने के बाद ही आगे बढ़ेंगे तो हम इस बात को महसूस ही नहीं कर पायेंगे कि रिलेशनशिप कैसे हमारे जख्म भर सकती है। मइशा के मुताबिक नये जुड़ाव हमारी जिंदगी को अलग मायने दे सकते हे। जब हम अपने जख्मों को भर जाने के बिंदु तक पहुंचने पर बहुत ज्यादा ही ध्यान देने लगते है अतीत के संबंधों से बाहर निकलने के लिये तय वक्त का इंतजार करने लगते है तो हम वह मौका खो देते है जिसका इस्तेमाल हम नये संबंधों के टेस्ट करने में कर सकते हैं।

4. अपना फ्लो पहचान लें, टास्क में लीन हो जाते हैं तो आप हृदय रोग और अवसाद से बचेंगे मानसिक क्षमता 500% तक बढ़ा सकती है।

यह तकनीकी असंभव को संभव करने के लिए तथा तनाव व चिंता से बचाने वाली है। जब व्यक्ति खेल खेलता है या लेख लिखता है तब समय और स्थान का पूरा बोध खो देता है जब किसी वाद्य यंत्र को बजाने में लीन होता है तब एक मिनट पहले जो चिंतायें सता रही थी वे सब गायब हो जाती है, यही फ्लो है। इसे ग्रूव ट्रॉस या जोन में होना कहते है, और जापान में इसे इकिगाइ जैसा माना जाता है। फ्लो स्टेट मनोविज्ञान का शब्द है, जिसका उपयोग उच्च एकाग्रता की स्थिति का वर्णन करने के लिये किया जाता है, जिसमें आप किसी गतिविधि में पूरी तरह से लीन हो जाते है। स्वीडन के कैरेलिंस्का इंस्टीट्यूट में बिहेवियर जेनेस्टिक की प्रोफेसर मिरियम मोसिंग बताती है कि 9300 लोगों पर शोध में हमने पाया कि फ्लो महसूस करने वालों में अवसाद चिंता और हृदय रोग का जोखिम कम था। काम को बोझ न मान इसमें डूब जाए अपना सब कुछ झोंक दें तो आप आनंद के शिखर पर होगे। द आर्ट ऑफ द इम्पासिबल एक पीक परफारमेंस प्रामर (हार्पर वेव) के लेखक इस्टीवन कोटलर के अनुसार फ्लो मानसिक क्षमताओं को 500% तक बढ़ा सकता है। इसे देखते हुये कई कंपनियों में तो फ्लो प्रोमोटिंग ट्रेनिंग भी शुरु की गयी हे। वह कहते है फ्लो स्वाभाविक रूप से फोकस के पीछे ही आता है। यह अवस्था तभी उत्पन्न हो सकती है जब हमारा पूरा ध्यान वर्तमान क्षण पर केन्द्रित हो। वही जो लोग अपना फ्लो ढूंढना चाहते है, उनके लिए शोधकर्ताओं ने 22 टिगर्स की पहचान की है। इनमें स्पष्ट लक्ष्य, तत्काल प्रतिक्रिया और एक ऐसा काम शामिल है जो हमारे क्षमताओं - कौशल को चुनौती देता हो। आपको कम्फर्ट जोन से बाहर आकर अपने कौशल पर रचनात्मक तरीकों से उपयोग करना होगा। यह बढ़ी हुई चुनौती फ्लो की स्थिति को जन्म देती है, क्योंकि यह रिस्क की प्रभावी ढंग से राह दिखाने के लिए तत्परता और गहन ध्यान की भावना पैदा करती है। कोटलर कहते है हर विद्या में असंभव को संभव बनाने के पीछे फ्लो हमेशा प्रमुख भूमिका निभाता है। नेवी सील्स चुपचाप और सटीकता के साथ सीक्रेट मिशन पूरा करते वक्त फ्लो में रहते है। यहां तक कि सिलीकॉन वैली के दिग्गज भी इस पर भरोसा करते हैं।

5. धार्मिक गुरु की शरण में जाए- वर्तमान भौतिक युग में सच्चे आध्यात्मिक गुरु यदि मिल जायें तो सोने में सुहागा है। ऐसे गुरु जिनकी मोह माया विलीन हो गई हो जो निरंतर ध्यान व आध्यात्मिक ग्रंथों के पठन पाठन में लीन रहते हो। घर परिवार से विरत हो पर मठाधीश न हो, सदैव आत्मचिंतन मनन व जगतशक्ति की सोच रखते हो।

ऐसे गुरु के समीप पहुंचकर चरणों में समर्पित भाव से निवेदन करे कि हे गुरुवर मेरी अनेक बुराइयों के कारण यह दशा हो गयी मैने सारे उपाय कर लिए, पर मुझे सफलता नहीं मिली। अब मुझे समझ आई कि गुरु के चरण ही मुझे इस दुखद दशा से निवृत्त करेगें। आप मुझे अपना शिष्य बनाकर उपकृत कीजिए। आपको देखकर संसार असार समझ आने लगा। कोई शरण है तो मात्र आपके चरण हैं। मैं आपकी आध्यात्म साधना को अपनाना चाहता हूँ आप मुझे कृतार्थ कीजिए।

गुरु सदैव ज्ञान ध्यान और तप के प्रभाव से सकारात्मक ऊर्जावान होते है उनके समक्ष पहुचते ही हमें ऐसी शक्ति मिलती है जो सहज ही अवशादमुक्त कर सुखद जीवनदायी हो जाती है। परिवारीजनों एवं मित्रों का कर्तव्य है कि वे उसे गुरुचरणों में लो जाये यदि ले जाना संभव न हो तो गुरु को स्थिति से अवगत कराते हुए आग्रहपूर्वक आशीर्वाद दिलायें।

अवसादी व्यक्ति का एकमात्र कोई शरण दाता है, तो वह गुरु ही होगा। गुरु का चयन करते समय देखे कि जिसकी हम शरण ले रहे है वह इन गुणों से युक्त है या नही है। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में लिखा है।

विषयाशावशातीतो निरारम्भो परिग्रहः ज्ञानध्यान तपोरक्ततपस्वी सः प्रशस्यते।

जो पांच इन्द्रियों की आशा से रहित हो, आरंभ और परिग्रह से रहित हो ज्ञान ध्यान और तप में लवलीन हो वही प्रशंसनीय तपस्वी अर्थात् सच्चा गुरु कहलाता है। गुरु सर्वप्रथम गृहत्याग कर सर्व मोह ममता को छोड़ निरंतर स्व पर कलयाण में रत हो। लोभी, मायावी, पाखंडी, दंभी अर्थात् अभिमानी, क्रोधी न हो हिंसा झूठ, चोरी, व्यभिचारी एवं धन धान्यादि परिग्रही न हो। भौतिकवादी संसाधनों से रहित हो प्रशंसा और पूजा के प्रभाव से रहित होकर सदैव समता धारण करने वाले गुरु ही सबका शरणदाता होता है। ऐसे गुरु की शरण में जाकर अवसादी व्यक्ति को जहां जीवन में मायूसी छाई थी वही सच्चे गुरु के उपदेश से खुशियों की लहरें दोडेगी।

2. पहले से मौजूद चीजों में खुशी तलाशना-

बिजनेसमेन रायन पीकाक कहते है, आमतौर पर अकेले रहने पर मैं उन चीजों की सूची बनाता हूँ, जिन्हें मुझे करना होता है या जिनमें बदलाव करना हो। जबकि विपश्यना में उन चीजों को देखना सिखाया जाता है, जो सदैव खुद से ही आमतौर पर नही देख पाते। जैसे अजनबियों के साथ खुशी का आदान-प्रदान, आसमान में पक्षियों को उड़ते देखना और खुद को पूरी तरह छोड़ देना।

3. डोरी कहती है कि खुद का सच खोजना महत्वपूर्ण है-

4. बातचीत के लिए हमेशा शब्द जरूरी नही। में विपश्यना में पहुँचकर यह महसूस करती

हूँ कि शब्दों में नहीं मन में स्वयं को तलाशें। (दैनिक भास्कर से साभार)

श्री रविशंकर जो वर्तमान में रावतपुरा सरकार के नाम से अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आध्यात्मिक सत्पुरुष हैं वे जब 11 वर्ष के थे, तभी से वे 2 किमी. दूर जंगल की गुफा में बैठकर ध्यान लगाते थे। उनकी मां रामसखी शर्मा ने भास्कर प्रतिनिधि को बताया कि वे गुफा में ध्यान लगाते थे कई बार उन्हें गुफा से निकाला तो शरीर और कपड़े पूरे भीगे मिले। ऐसा लगा जैसे कुएं में डुबकी लगाई हो। महीने में 15 से 20 बार ऐसा ही होता था। उनकी आध्यात्मिक रूचि जाप और ध्यान का परिणाम है कि वह आज पूज्य महात्मा हैं।

मित्रों का कर्तव्य- 1. जब हमारे कोई मित्र मानसिक तनाव से जूझ रहा हो उसकी इस परिस्थिति को समझकर उसकी सहायता मित्र से अधिक बेहतर मेंटल हेल्थ और कोई नहीं कर सकता। उचित समय देखकर चर्चा करें। मानसिक तनाव से जूझने वाले मित्र पर नजर रखे। देखे कि वो कब क्या करते है ? क्या आपको उनके फोकस की कमी दिखाई देती है। क्या वो डेड लाइन मिस करते है। लोगों से बात करने से कतराते है या बिना कारण जब कभी कही चले जाते है ? ऐसे में एक अच्छा दिन देखे जब आपके साथी रिलेक्स बैठे हों तब जाकर उनसे बात करें। ऐसी चर्चा करें जो उसे प्रियकारी हो, ऐसे ही समय में धीरे-धीरे उस विषय को छेड़ें जिससे वो परेशान है। आपसे वो सहज ही शेयर करेंगें, जिसे आप सुनते जाये प्रतिक्रिया न कर उसके आगामी समय में सरल समाधान हेतु कार्य योजना बनायें जो निराकरणीय हो।

2. ईमानदारी और विनम्रता से बात करें। मित्र की मानसिक सेहत के बारे में केवल इतना पूछे कि आज आप कैसा महसूस कर रहे हैं । या आपका असाइनमेंट कैसा चल रहा है ? जबरदस्ती बातचीत करने की कोशिश न करें। अगर आपके साथी की इच्छा है तो बात शुरु करें। बात करते समय आपकी ईमानदारी और समर्पण महसूस होना चाहिये। उनकी महत्ता कम न होनें दे।

3. अपने साथी को याद दिलायें कि पूर्व में आपने और हमने मिलकर कैसे कैसे चुनौतीपूर्ण कार्य सफलता पूर्वक किये थे। आपने ही तो हमें साहस बंधाया था कि आगे बढ़े हैं। तो पीछे नहीं मुड़ेंगें। चाहे कितना ही संघर्ष करना पड़ें। उन्हें विश्वास दिलायें कि आगे कार्य और बेहतर ही होंगे। उनकी महत्ता का अहसास दिलावें कि आपसे ही आगे के कार्यों में सफलता हासिल होगी जो इस कार्य से जुड़े हैं, वे आपकी ही संयोजना में मिलकर चलना चाहते हैं। ऐसे में उन्हें जो रिजेक्शन एवं अकेलेपन का भय सताता है, वह समाप्त होकर निर्भय हो जीवन जीने लगेंगे।

2. घर परिवार व रिश्तेदारों के कर्त्तव्य- यह सत्य है कि मानसिक अवसादग्रस्त व्यक्ति घर परिवार से अपने ऊपर आई प्रतिकूलता को शेयर नहीं करता, पर उसके अस्त-व्यस्त और सुस्त दैनिक क्रियाकलापों से स्पष्ट होता है कि वह विशिष्ट विपरीतताओं से गुजर रहा है। जिससे उसकी मानसिक सेहत बिगडी हुई है। ऐसे समय में परिवार वाले या तो स्वयं या जो उसके विश्वासी परिचित से उचित अनुकूलताओं को देखकर ही बातचीत करें। जिससे वह अपने पर गुजर रही मुसीबतों को शेयर कर सके। जैस ही हमें यह ज्ञात हो जाये कि इन कारणों से मानसिक अवसाद की स्थिति निर्मित हुई है, उनके समाधान को प्राथमिकता देकर, समय पूर्व सुलझा लें जिससे परिवार में अनहोनी न घट पाये।

देव-शास्त्र-गुरु की त्रिवेणी श्रवणबेलगोला

❋ ब्र. समता जैन मारौरा, इंदौर ❋

देवाधिदेव हे जिनेन्द्र, हे गोम्मटेश्वर जिन प्रणाम।
गोम्मटेश्वर त्रिलोकसार, शत् शत् वंदन-अभिनंदन।।
भद्रबाहु प्रभाचंद आचार्य सल्लेखना ली अभिराम।
अपहर श्री श्रवणबेलगोला तीर्थ को शत् बार प्रणाम।।

दक्षिण भारत में जैन संस्कृति के संरक्षण और प्रसार के लिए प्रारंभ से ही कर्नाटक प्रांत का नाम रहा है। जिस प्रकार यह भू-भाग अपनी बारह माह हरियाली और प्राकृतिक शोभा-सुषमा रही है। इसी कर्नाटक प्रांत में प्रसिद्ध तीर्थ श्रवणबेलगोला है जो प्राचीन समय से ही देव-शास्त्र-गुरु की त्रिवेणी रहा है।

श्रवणबेलगोला में 32 जिनायतन, अनेक ग्रंथों का लेखन तथा संरक्षण सहस्त्रों मुनिराजों के चरण समय-समय पर पड़े हैं।

वीतरागी अर्हन्त देवः- श्रवणबेलगोला तीर्थ में छोटे-बड़े सभी मिलाकर 32 जिनायतन है। पर्वतराज चंद्रगिरि पर 16, गिरिराज विन्ध्यगिरि पर 8 और श्रवणबेलगोला नगर में 8 देवालय है। जिनका वर्णन निम्न प्रकार हैः-

चंद्रगिरि पर्वतराज पर स्थित 16 देवालयः-

1. भद्रबाहु गुफा- अग्रिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने यहाँ साधना तथा सल्लेखना लेकर देहोत्सर्ग किया था, अतः यहाँ अनेक चरण विद्यमान है।

2. चंद्रगुप्त बसदि- यह चंद्रगिरि पर्वत पर सबसे छोटा जिनालय है, इसे सम्राट चंद्रगुप्त दासोज नामक शिल्पकार ने भद्रबाहु और चंद्रगुप्त की वह गौरव गाथा सुनकर और उससे प्रभावित होकर पाषाण फलकों पर अंकित कर दिया और उस शिलाफलक को चंद्रगुप्त बसदि में स्थापित कर दीर्घकाल के लिए गागर में सागर भरकर भद्रबाहु स्वामी के संघ के विहार की घटनाओं का अंकन कर सुरक्षित कर दिया।

3. चंद्रप्रभ बसदि- इसका निर्माण गंगनरेश शिवमार के द्वारा सन् 800 ई. में कराया गया।

4. कूगदेव स्तंभ- इसका निर्माण गंगनरेश मारसिंह द्वितीय की मृत्यु के समय सन् 974 ई. में किया गया।

5. चामुण्डराय बसदि- गोमट स्वामी की स्थापना के बाद सन् 990 ई. में सेनापति चामुण्डराय ने चामुण्डराय बसदि का निर्माण कराया। बाद में सन् 995 ई. में। चामुण्डराय के पुत्र जिनदेवन के ऊपर पार्श्वनाथ की वेदी बनवाई।

6. शासन बसदि- 11वीं शताब्दी के अंतः में चंद्रगिरि पर्वत पर गंगराज सेनापति ने शासन बसदि का निर्माण कराया।

7. कत्तले बसदि- सेनापति गंगराज ने 12वीं शताब्दी में निर्माण कराया।

8. सवति गंध वारण बसदि- होलसल नरेश विष्णुवर्द्धन की पत्नि महारानी शान्तलादेवी ने इस जिनायलन का निर्माण सन् 1122ई. में कराया।

9. तेरिग बसदि- यह जिनालय तेरू अर्थात् एक रथ के आकार का बना है इसलिये तेरिग बसदि के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निर्माण पोयसल सेठ की माता माचिकब्बे और नेमिसेठ की माता शान्ति कब्बो सन् 1125ई. में करवाया।

10. पार्श्वनाथ बसदि- इसका निर्माण सन् 1128 ई. में हुआ।

11. महानवमी मण्डप- इसका निर्माण एक नागदेव मंत्री ने सन् 1174ई. में करवाया।

12. एरडुकट्टे बसदि- गंगराज सेनापति की पत्नि लक्ष्मी ने करवाया।

13. मज्जिगण बसदि- इसका निर्माण मज्जिगण ने 12वीं शताब्दी में करवाया। 15वीं और 16वीं शताब्दी में 14 नं. शान्तिनाथ जिनालय 15नं. पार्श्वनाथ बसदि एवं 16नं. शान्तीश्वर बसदि का निर्माण हुआ।

14. विन्ध्यगिरि के 8 जिनालय- यह पर्वत प्राचीन समय से दोड्डबेट्ट के नाम से जाना जाता था। इसे इंद्रगिरि भी कहा जाता है। यह पर्वत समुद्रतल से 3347 फुट तथा मैंदान से 470 फुट ऊँचा है। यहाँ 8 जिनायतन है।

1. गोमट स्वामी मंदिर- विश्व की आश्चर्यकारी 57 फुट की खड्गासन भगवान बाहुबली की अत्यंत मनोहारी प्रतिमा है। इस प्रतिमा को गंगनरेश के महामात्य चामुण्डराय ने 981ई. में बनवाया था।

2. 24 तीर्थंकर बसदि- इस देवालय को 16वीं बसदि भी कहते है।

3. ओदेगल बसदि- इसे त्रिकूट बसदि भी कहते हैं।

4. त्यागद ब्रह्मदेव स्तंभ- यह स्तंभ अधर में है। इसके नीचे से रूमाल निकाला जा सकता है। यह चामुण्डराय ने बनवाया था। इस स्तंभ की पीठिका की दक्षिण बाजू पर चामुण्डराय और आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती की मूर्ति उत्कीर्ण है।

5. चेणन्न बसदि- इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में चेन्नन्न ने कराया था।

6. सिद्धर बसदि- इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में हुआ। इसमें सिद्ध भगवान की प्रतिमा विराजमान है।

7. अखण्ड बागिलु- यह एक दरवाजे का नाम है, वह दरवाजा एक अखण्ड शिला को काटकर बनाया गया है, इसलिये इसका नाम अखण्ड बागिलु है। इसके ऊपरी भाग पर लक्ष्मी की मूर्ति है, जिसे दोनों और से हाथी स्नान करा रहा है। इस दरवाजे का निर्माण 11वीं शताब्दी में सेनापति चामुण्डराय ने कराया था।

8. सिद्धर गुण्डू- अखण्ड बागिलु की दाहिनी और एक बृहद शिला है। जिसे सिद्धर गुण्डू (सिद्धशिला) कहते है। इस पर अनेक शिलालेख है तथा जैनाचार्यों के चित्र हैं।

श्रवणबेलगोला नगर के 8 जिनायतन-

1. अक्कन बसदि- यह नगर का सबसे प्राचीन जिनालय है। यह होप्पसल शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका निर्माण गोमटस्वामी की स्थापना के 100 वर्ष के भीतर सन् 1025ई. में किया गया।

2. नगर जिनालय- इसका निर्माण 1060 ई. में हुआ।

3. भण्डारी बसदि- यह श्रवणबेलगोला का सबसे बड़ा मंदिर है। इसका निर्माण होलसल नरेश नरसिंह प्रथम के भण्डारी हुल्लु द्वारा 1159 ई. में किया गया है। इसमें श्याम पाषाण की 24 प्रतिमायें है। इसलिये इसे भण्डारी बसदि एवं चौबीसी मंदिर कहा जाता है। राजा नरसिंह ने इस जिनालय को भव्य चूड़ामणि नाम देकर वंदना की थी।

4. सिद्धांत बसदि- प्राचीन समय में इसी जिनालय के एक बंद कमरे में धवला, जयधवल, महाधवल, आदि अत्यंत दुर्लभ ग्रंथ रखे जाते थे, जो बाद में मूडबर्दी भेजे गये। इसलिये इसका नाम सिद्धांत बसदि पड़ गया। इसका निर्माण 13वीं शताब्दी में हुआ।

5. दानशाला बसदि- यहां पहले दान दिया जाता होगा, इसलिये इसका नाम दानशाला बसदि पड़ गया। इसका निर्माण लगभग 13-14 शताब्दी में हुआ।

6. मंगायी बसदि- इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में अभिनव चारूकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य मंगायी ने बनवाई थी।

7. मठ मंदिर- यह यहाँ के गुरु का मंदिर कहा जाता है, चामुण्डराय ने गोम्मटेश्वर भगवान की मूर्ति का निर्माण कराकर गुरु सिद्धांत चक्रवर्ती को यहाँ का मठाधीश नियुक्त किया था।

8. कल्याणी सरोवर- यह नगर के बीचों-बीच एक छोटा सा सरोवर है। इसका निर्माण सन् 1572ई. से 1704 के बीच में चिक्कदेव राजेन्द्र ने करवाया था।

जिनवाणी का रसास्वादन- श्रवणबेलगोला में अनेक आचार्यों ने जिनवाणी का प्रसाद अपने शिष्यों में वितरित किया है।

अद्ध शुक्त ताड़पत्रों पर तीक्ष्ण लेखनी द्वारा, अनेकों मुनिराज यहाँ एकान्त में बैठकर आगम शास्त्रों का अंकन किया करते थे। सहस्त्रों ग्रंथों का लेखन श्रवणबेलगोला के प्रांगण में हुआ है। यहाँ पठन-पाठन और विचार विमर्श के लिए अन्यत्र से भी अनेक शास्त्र समय-समय पर लाये जाते रहे हैं। धवला, जयधवल, महाधवल जैसे महान ग्रंथों को विधर्मियों की प्रलयकारी दृष्टि से बचाकर अनेक शताब्दियों तक श्रवणबेलगोला के अंक में ही सुरक्षित रखा गया था।

गुरुओं के चरणरज- श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु की समाधि के उपरांत अनेक पदचिह्नों की वंदना का संकल्प लेकर इस पवित्र समाधि गुफा में बैठकर एक बार साधना करने की अभिलाषा लेकर मूल परंपरा के प्रायः सभी महान आचार्य समय-समय पर यहाँ पधारते रहे है, और अपने पावन चरणों के पुण्य स्पर्श से श्रवणबेलगोला को पवित्र करते रहे हैं।

संघनायक विशाखाचर्य यहाँ दो बार पधारे। षट्खण्डागम के सूत्रकार आचार्य पुष्पदंत और आचार्य भूतबली ने भी आचार्य भद्रबाहु के चरणों की वंदना की थी।

आचार्य पद्मनंदी अर्थात् आचार्य कुंदकुंद स्वामी भी यही कंदराओं में बैठकर अपने पाहुड ग्रंथों की आवृत्ति करते थे। गृद्ध पिच्छाचार्य उमास्वामी ने महीनों तक भद्रबाहु गुफा में ध्यान किया। स्वामी समन्तभद्र को इस ऋषिगिरि का शांति निराकुल वातावरण तपस्या के लिए अधिक उपयुक्त लगता था। उन्होंने भी यहाँ गंधहस्ति महाभाष्य की विवेचना की।

आचार्य पूज्यपाद स्वामी जो मुनि दीक्षा के पूर्व कुशलवैद्य थे। जिन्होंने सर्वार्थसिद्धि जैसे

महान ग्रंथ की रचना की थी। वे दुर्लभ वनस्पतियाँ औषधियों की शोध में अनेक बार यहाँ आए।

आचार्य वीरसेन, आचार्य जिनसेन, आचार्य गुणभद्र स्वामी जी महती श्रुतसेवा का उल्लेख भी शिलालेखों में सुरक्षित है।

सिद्धान्त चक्रवर्ती, श्रुतज्ञ आचार्य नेमिचंद्र स्वामी की तो श्रवणबेलगोला साधना स्थली रही है। उन्होंने प्रायः गोम्मटसार और त्रिलोकसार का लेखन यही किया।

इस प्रकार जिन-जिन करूणायतन मुनिराजों ने अपनी पावन चरणरज से श्रवणबेलगोला की नीरस और कठोर देह को पवित्र किया है। उनके परिमाण को संख्या में बाँधना संभव नही है।

श्रवणबेलगोला का कण-कण निर्ग्रन्थ वीतरागी मुनियों के ईर्यामर्यादित पग विन्यास से प्रतिक्षण तृप्त होता रहा है। श्रवणबेलगोला की गोद में ही मुनियों के श्रमशलय शरीर को ऊष्मा और तप पूतदेह को शीतलता मिलती रही है।

इस प्रकार देव, शास्त्र, गुरु की पावन त्रिवेणी का संस्पर्श अतीत में अनवरत रूप से मुझे प्राप्त हुआ। वर्तमान में प्रचुरतापूर्वक प्राप्त हो रहा है और विश्वास है कि भविष्य में युगान्त तक वह अविच्छिन्न रूप से मिलता रहेगा।

कविता

गुरु को कौन भूलेगा

❊ संस्कार फीचर्स ❊

हकीकत मैं वयाँ कर दूँ आँसू वे थम नहीं सकते
जो पल को पर वसे गुरुवर कभी हटवे नहीं सकते
जमाना कितना भी गुजरे नहीं हम भूल नहीं सकते है
याद सच्ची तभी बनती जब हम गुरु पथ पर चलते है
गुरु को कौन भूलेगा जिसने सबको थामा हो
दिया कल्याणपथ जग को गीत मुक्ति का गाया हो
याद करता जहाँ सारा जमीं के देवता मेरे

आश तुमसे लगा बैठा मेंट दो भव भ्रमण फेरे
दुनिया कुछ भी कहे मुझको नहीं परवाह है इसकी
गुरु की आज्ञा सब कुछ मार दी इच्छा सब मन की
ब्रह्म दृष्टि गुरुवर की रोशनी इसकी हैं न्यारी
सम्हाला जीवन गुरु मेरा मिली पुचकार गुरु प्यारी
नजर उनकी पड़ी मुझ पर याद आती उस क्षण की
गुरु आशीष सम्पद् हैं कमाई मेरे जीवन की
छोड़कर जा नहीं सकते गुरु हृदय में बसते हो
अमिट तस्वीर दिल में है गुरु सिद्धांत कहते हो
वहीं मै डांट खाता हूँ वही मुस्कान दिखती है
नयन के इन झरोखों से गुरु मुद्रा ही दिखती है
अनेकों जन्म बीतेंगे गुरु तुम ही सदा मेरे
गुरु पीछे चलेंगे हम मिटा दो भव भ्रमण फेरे
देख तस्वीर गुरुवर की चहक जाता वदन मेरा
बहारें मन में आती है पुलकित हुआ मेरा
नहीं था मोह गुरु तन से प्रेम गुरुवर गुणी चेतन
दिया पथ शुद्ध अध्यात्म दिया निज शांति पथ के तन

चलो देखें यात्रा

पुरावैभव मय तीर्थ उमटा

महत्व दर्शनः मुनि निर्भयसागर जन कल्याण समिति द्वारा संचालित क्षेत्र पर रोड़ का निर्माण कार्य जारी है। पूर्व में क्षेत्र वधर्मानपुरम के नाम से जाना जाता था। वर्तमान मे खुदाई से प्राप्त 72 मुर्त्तियों में 52 दिगम्बरों के पास है शेष मुर्तियों को श्वेताम्बरी ने प्राप्त की है। इसी के पास भारत सरकार द्वारा विश्राम स्थल बनाया गया है।

मार्गदर्शनः महेसाना-बिसनगर रोड़ पर महेसाणा से 28 किमी. तथा तारंगा से खेरालू होते हुए 38 किमी. है। महेसाणा में बसे है। अहमदाबाद-105, ईडर-45, भिलोडा-62, माउण्ड आबू- 120, बिसनगर- 8 किमी।

नाम एवं पताः श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र उमटा तह. विसनगर जिला महेसाणा फोनः 02765-289085, मो. 9408079047, सम्पर्क सूत्र श्री सौभाग्यमल कटारिया, अध्यक्ष 079-2138301, मंत्री- श्री एस.एस. जैन- 9313770931।

सुविधायें : सुविधायुक्त- 8 कमरे, सामान्य -2 तथा 2 हॉल है। भोजन उपलब्ध अनुरोध पर। महेसाणा-बिसनगर रोड़ पर नये मंदिर (आधा किमी.) एवं धर्मशाला का निर्माण हो रहा है।

विशेषः समीपवर्ती सथल महुडी-श्वेतांबर मंदिर (37), मोढेरा-50।

महेसाणाः पालनपुर- अहमदाबाद हाइवे का मध्यवर्ती शहर है। सीमंधर स्वामी का संगमरमर का मंदिर प्रसिद्ध है। स्टेशन एवं बस स्टैण्ड से 1/2 किमी. है। अहमदाबाद-74, शंखेश्वर -10 किमी। मोढेरा- यह अहमदाबाद से 119, महेसाणा-25, पाटन-35, बेचारची स्टेशन-13, चाणश्मा-15, रत्नावली तीर्थ-20 किमी ये सभी श्वेतांबर मंदिर है। यहां पार्क, म्युजियम, कॅफेटेरिया भी है।

सूर्य मंदिर का निर्माण पाटण के राजा भीमदेव के द्वारा निर्मित है। इस मंदिर में उगते हुए सूर्य की किरणे प्रतिमाओं पर पड़ती है। यहाँ पर एक विशाल बावडी है। बावडी में 3000 सीढ़ियाँ है। और हर सीढ़ियों पर छोटे से मंदिर दर्शनीय है। यह अपने आप में एक वास्तुकला का उत्कृष्ट नमुना एवं शिल्पकला अद्भुत एवं उच्चकोटी की है।

आगम दर्शन

अपरिग्रही साधु जिनकल्पी

इस प्रकार के शांतिकृत भेद के अतिरिक्त इनमें बाह्य वेषकृत कोई भेद नहीं होता। बाह्य वेष की अपेक्षा दोनों की चार-चार प्रकार के होते हैं। यथा

उत्तराध्ययन/पृ. 179 पर उद्धृत गाथा- जिणकप्पिया व दुविहा पाणिपाया पाणिग्रहधरा य। पाउरजमया उरणा एक्केक्का ते भवे दुविहा। य एतान् वर्जयेदोषान धर्मोपकारवाद्दते। तस्यत्वग्रहणं युक्तं, यः स्वाज्जिन इव प्रभुः। जिनकल्पी साधु चार प्रकार के होते है-सवस्त्र पाणिपाताहारी, अवस्त्र पाणिपात्राहारी, सवस्त्र पात्रधारी और अवस्त्र परन्तु पात्रधारी। जो आचार विषयक निम्न दोषों को बिना उपकरणों के ही टालने को समर्थ हैं, उनके लिए तो इनका ग्रहण करना ही योग्य है, परंतु जो ऐसा करने को समर्थ नहीं वे उपकरण ग्रहण करते हैं।

2. जिनकल्प का विच्छेद- उत्तराध्ययन/टीका/पृ. एथ व्युचिछन्नः। (179) न चेदानीं तद स्तीती...। (180)

वीर निर्वाण के 62 वर्ष पश्चात् जम्बू स्वामी के निर्वाण पर्यन्त ही जिनकल्प की उपलब्धि होती थी। उसके पश्चात् इस काल में उत्तम संहनन आदि के अभाव के कारण उसकी व्युच्छित्ति हो गई है।

3. उपकरण व उनकी सार्थकता- उत्तराध्ययन/ पृ. 179 पर उद्धृत- जन्तवो बहवस्सन्ति दुर्दशा मांस च क्षुणाम्। तेभ्यः स्मृतं दयार्थ तु रजोहरण धारणम् ॥1॥ सन्ति संपातियाः सत्त्वाः सूक्ष्माश्च व्यापिनोऽपरे। तेषां रक्षा निमित्तं च विज्ञेया मुखवस्त्रिका ।3॥ किंघ-भवन्ति जन्तवो यस्याभवानेषु केषुचित् तस्मात्तेषा परी क्षार्थ पात्रग्रहणमिथ्यते ।4॥ अपरं च- सम्यक्त्वज्ञानशीलानि तपश्चेतीह सिद्धये तेषामनुकाहार्थाय स्मृतं चीवरमिथ्यते ।5। शीतं वातातपैर्दशमशकेचापि खेदितः। मा सम्यक्त्वादिषु ध्यानं न सम्यक् संविधास्याति ।6॥ तस्य त्वग्रहणे युत स्यात क्षुद्रप्राणि विनाशनम्। ज्ञानाध्यानोपधातो वा महान दोषस्तदैव तु ।7। बहुत से जन्तु ऐसे होते हैं जो इन चर्म चक्षुओं से दिखाई नहीं देते। विहार शय्या आसन आदि रूप प्रवृत्तियों में उनकी रक्षा के अर्थ रजोहरण है। वायुमण्डल में सर्वत्र ऐसे सूक्ष्म जीव व्याप्त है जो मुख में अथवा भोजन पान आदि में स्वतः पड़ते रहते हैं। उनकी रक्षा के लिए मुखवस्त्रिका है। बहुत संभव है कि भिक्षा में प्राप्त अन्नपान आदिक में कदाचित कोई जंतु पड़े हों। अतः ठीक प्रकार से देख शोधकर खाने के लिए पात्रों का ग्रहण इष्ट है। इसके अतिरिक्त सम्यक्त्व, ज्ञान, शील व तप की सिद्धि के अर्थ वस्त्र ग्रहण की आज्ञा है, ताकि ऐसा न हो कि कहीं शीतवात आतप डांस व मख्खी आदि की बाधाओं से खेदित होने पर कोई इनमें से ठीक प्रकार से ध्यान व उपयोग न रख सके। ये सभी पदार्थ बाह्याभ्यंतर संयम के उपकारी होने से उपकरण संज्ञा को प्राप्त होते हैं, जिनका ग्रहण न करने पर क्षुद्र प्राणियों का विनाश तथा ज्ञान ध्यान आदि का उपघात रूप महान् दोष प्राप्त होते हैं।

उत्तराध्ययन/टीका/ पृ. 176 धर्मोपकरणवेतत् न तु परिग्रहस्तथा।

दशवैकालिक सूत्र / अ.6 गा. 19 जं. पि वत्थं य पायं वा, केवलं पाय पुद्दणं। तेऽपि संजमलज्जट्ठा, धारेन्ति परिहरन्ति य। अर्थात मूर्च्छारहित साधु के लिए ये सब धर्मोपकरण हैं न कि परिग्रह, क्योंकि मूर्च्छा को परिग्रह संज्ञा प्राप्त होती है वस्तु को नहीं। वस्त्र व पात्रादि इन उपकरणों को साधुजन संयम की रक्षार्थ तथा लज्जा निवारण के लिए धारण करते हैं, और उनके प्रति इतने अनासक्त रहते हैं कि समय आने पर जीर्ण तृण की भाँति वे इनका त्याग भी कर देते हैं।

जिनकल्पी को अचेल और स्थविर कल्पी की सचेल की अवधारण श्वेताम्बर आगम के आधार पर अचेल शब्द अर्थ में परिवर्तन भी किया गया।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
मार्च 2025
हमराही

प्रथम-

एक एक मिलकर ग्यारह होते है

बूँद बूँद मिलकर पानी गति को पाते है

संघ शक्ति से जन जन होते ग्राही

साथ साथ चलते रहते जो वे है हमराही

श्रीमती रूपल जैन, सागर

द्वितीय-

लक्ष्य बनाकर जो चले

बन जाते सत् ग्राही

मंजिल पाने आगे बढ़ते

बने सुजन हमराही

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

कर्म क्षेत्र में आगे बढ़ना

जीवन में नित सत् चुनना

बनो सरित् सम प्रवाही

जीवन सदा बनाओ हमराही

श्रीमती खुशबु जैन, गुना

वर्ग पहेली क्र. 304
फरवरी 2025 के विजेता

प्रथम : श्रीमती इन्द्रा जैन, भोपाल

द्वितीय : श्रीमती ममता जैन, ग्वालियर

तृतीय : श्रीमती कमला जैन, खरगोन

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :

अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

पानी में आग

पुनर्बोहितरिप्राप्ती दुर्लभा भवसंकटे।

यदि बोधि की प्राप्ती में निमित्तभुत दर्शनाविशुद्धि ने बाधा पहुँचायी जाती है तो फिर इस संसार के संकट में पुनः बोधि की प्राप्ती दुर्लभ ही समझनी चाहिये।

यन्नो यस्य धनं वा वपुरेव वा।
स्वशासनजने तेन तस्य किं बन्धुहेतुना ।।

जिसका धन अथवा शरीर सहधर्मी जनों के उपयोग में नहीं आता उसका वह धन अथवा शरीर किस काम का ? वह तो केवल कर्म बंध का ही कारण है।

का स्त्री का वा स्वसा भ्राता को बै कार्या भिलाषिणः।
वैरिणो ननु हन्तारो हन्तव्यं नात्र दुर्यशः ।।

कार्य के इच्छुक मनुष्यों के लिए क्या स्त्री ? क्या बहन ? क्या भाई ? उन्हें तो जो वैरी अपना घात करे उसका अवश्य ही घात करना चाहिए इसमें कुछ भी अपयश नहीं है।

निर्वाप्यते ज्वलन्नाग्निर्जलेन सुमहानपि।
अस्तिष्ठेद् यद्यशो तस्मातस्य शान्ति कुतोन्यतः ।।

जलती हुई अग्नि कितनी ही महान क्यों न हो अंत में जल के द्वारा शांत कर दी जाती है फिर यदि जल से ही अग्नि उठने लगे तो अन्य किस पदार्थ से उसकी शांति हो सकती है ?

साधोः शीतलशीलस्य तापनं न हि शान्तये।
गाढतप्तो दहत्येव तोयात्मा विकृति गतः ।।

शीतल स्वभाव के धारक साधु को संताप पहुँचाना शांति के लिए ही नही है क्योंकि जिस प्रकार अधिक तपाया हुआ पानी विकृत होकर जल ही देता है उसी प्रकार अधिक दुखी किया हुआ साधु विकृत जला ही देता है- शाप आदि से नष्ट ही कर देता है।

केरियर

फिजियोथेरेपी कोर्सेस से कमायें रूप ये

यदि आप मेडिकल स्ट्रीम में आगे बढ़ने के इच्छुक है तो फिजियोथेरेपी एक बेहतर विकल्प हो सकता है। यह स्वतंत्र स्वास्थ्य पेशा एक गैर-सर्जिकल प्रक्रिया है। जिसका उद्देश्य दर्द को कम करना, कार्यक्षमता को बढ़ाना, और रोगी के शरीर के प्रभावित हिस्से की गति में सुधार करना है। फिजियोथेरेपी का अभ्यास विभिन्न शरीर प्रणालियों के कार्य से संबंधित और समर्पित है । इसमें आपको इंसान के मांसपेशियों की देखभाल करने की आवश्यकता होती है।

कोर्सेस- बी.पी.टी (बैचलर ऑफ फिजीयोथेरेपी)

बैचलर ऑफ साइंस इन फिजियोथेरेपी

बैचलर ऑफ ऑवयुपेसनल थेरेपी (बी.टी.ओ)

बैचलर ऑफ वेटरनरी मेडिसीन (बी.वी.एस.सी)

स्पोर्ट्स फिजियोथेरेपी

अवधि- 3 वर्ष से लेकर 5 वर्ष (इंटर्नशिप सहित)

फीस- 100000 से लेकर 500000 रूपये

नौकरी- फिजियोथेरेपिस्ट, स्पोर्ट्स फिजियो रिहैबिलिटेटर अनुसंधान सहायक, स्वनियोजित निजि फिजियोथेरेपिस्ट आस्थिरोगचिकित्सक

वेतन- 150000 से लेकर 5.5 लाख पर ईयर वेतन प्राप्त कर सकते है।

इंस्टीट्यूट- के.जे. सोमय्या कॉलेज ऑफ फिजियोथेरेपी, मुंबई

अपोलो कॉलेज ऑफ फिजियोथेरेपी, हैदराबाद

पृथ्वीराज देशमुख कॉलेज ऑफ फिजियोथेरेपी, यवतमाल

एम.जी.एम स्कुल ऑफ फिजियोथेरेपी, छत्तीसगढ़ संभाजीनगर

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कॉलेज ऑफ, लोणी फिजियोथेरेपी।

दुनिया भर की बातें

फरवरी 2025

■ 1 फरवरी

- पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त नवीन चावला का निधन हुआ वे 79 वर्ष के थे।

- फतेहाबाद (हरियाणा) कुहरे के चलते जीप नहर में गिरि 9 लोगों की मौत हुई।

- संसद में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आम बजट पेश किया।

- बीजपुर (छत्तीसगढ़) मुठभेड़ में 8 नक्सली ढेर।

■ 2 फरवरी

- भारत ने इग्लैण्ड को 150 रन से हराकर 4-1 से टी-20 सीरीज जीती।

- भारत महिला क्रिकेट टीम ने दक्षिण अफ्रिका को हराकर अंडर-19 वर्ल्ड कप जीता।

- लेहः माइनस 22 डिग्री में सिंधू नदी जमी।

■ 3 फरवरी

- कुलगाम (जम्मू)- पूर्व सैनिक मंजूर अहमद वादी के घर पर आतंकी हमला हुआ जवान की मौत हुई।

- श्रीलंका की नौसेना ने 10 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया।

- बार्ट डी वेवर बेल्जियम के नये प्रधानमंत्री बने।

■ 4 फरवरी

- अमेरिका ने 205 अवैध प्रवासियों को भारत वापिस भेजा।

- भोपालः जिला कलेक्टर ने भीख देने और मांगने पर रोक लगाई।

- अमरावती-तीन दिन के बच्चे पेट से दो भ्रूण आपरेशन करके निकाले गये।

■ 5 फरवरी

- दिल्लीः विधानसभा की 70 सीटों के लिए 58% मतदान हुआ।

- दंतेवाडा (छत्तीसगढ़) नक्सलियों ने 2 दिन में 3 लोगों का गला काटा।

- पेरिसः मुस्लिमों के आध्यात्मिक नेता आगाखाँ चतुर्थ का निधन हुआ उनके अनुयायी उन्हें पैगम्बर का वंशज मानते है।

■ 6 फरवरी

- डोंगरगढ़ (छत्तीसगढ़) आचार्य विद्यासागर जी महाराज का प्रथम समाधि स्मृति मनाया गया।

- केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह उपस्थित रहे।

- नागपुरः भारत ने इंग्लैण्ड को चार विकेट से हाराया।

- ढाकाः बाग्लादेश में अवामीलीग के नेताओं के घर पर हमले हुए मुजीब रहमान का घर फूँका।

■ 7 फरवरी

- ई-नाम से 1.50 करोड़ किशन पंजीकृत हुए।

- बरेली (उ.प्र.) मांझा बनाने वाली फैक्ट्री में विस्फोट मालिक सहित तीन लोगों की मौत हुई।

- प्रयागराजः 22 टेंट में फिर आग लगी इस्कॉन के शिविर मं हड़कंप मची। महाकुंभ में फिर दुर्घटना।

■ 8 फरवरी

- दिल्ली विधानसभा चुनाव के परिणाम आये 70 में 48 सीटें भाजपा ने जीती 22 आप पार्टी ने कांग्रेस शून्य पर रही। काँग्रेस की 67 सीटों पर जमानत जब्त हुई।

- अमेरिका के अलास्का में विमान क्रैश हुआ 10 लोग मरे।

- करनालः देसी गाय के दूध से डायरिया की दवा बनी।

■ 9 फरवरी

- बीजापुरः सुरक्षा बल मुठभेड में नक्सली मारे गये दो जवान शहीद हुए तथा दो जवान घायल हुए।

- मणिपुर के मुख्यमंत्री वीरेन सिंह ने इस्तीफा दिया।

- चीन के सिचुआन प्रांत में भूस्खलन से तबाही मची। 30 लोग मलबे में दबे।

■ 10 फरवरी

- प्रयागराज से जबलपुर तक 300 किमी. का जाम लगा।

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने महाकुंभ में स्नान किया।

- पेरिसः भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फ्रांस की यात्रा पर है।

■ 11 फरवरी -

- जम्मूः अखनूर सेटर में एल ओ सी के पास आई ई डी धमाके में दो जवान शहीद हुए।

- भोपालः माखनलाल चतुर्वेदी रा.पत्र विश्वविद्यालय के कुलपति विजय मनोहर तिवारी बने।

- गोमा (कांगो) लड़ाकों ने 55 नागरिकों की हत्या की।

■ 12 फरवरी

- 1984 के सिख दंगों के आरोपी पूर्व सांसद सज्जन कुमार को राउज एवेन्यू कोर्ट दोषी करार दिया।

- सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव से पहले मुफ्त सुविधाओं की घोषणा पर नाराजगी जताई।

- अयोध्याः राम जन्म भूमि के मुख्य पुजारी महंत सत्येन्द्र दास का निधन।

■ 13 फरवरी

- मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू हुआ विधानसभा भंग हुई।

- हर्षवर्धन सपकाल महाराष्ट्र काँग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त हुए।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दो दिवसीय अमेरिका यात्रा पर गये।

■ **14 फरवरी**

- एन चंद्रशेखर को ब्रिटेन में मानद नाइट हुड सम्मान की घोषणा हुई।

- कोलकाता के फूल बाजार में आग लगी 500 मीटर तक की दुकानें जली कड़ी मशक्कत से आग पर काबू पाया।

- पन्ना (म.प्र.): एक किसान को खेत में 4.24 कैरेट का उज्जवल किस्म का हीरा मिला।

■ **15 फरवरी**

- नई दिल्लीः रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म 10-11 पर भगदड़ मचने से 18 लोग मरे।

- मुम्बईः न्यू इंडिया बैंक से 122 करोड़ उड़ाने वाले हितेश मेहता गिरफ्तार हुआ।

- दक्षिणी साइबेरिया में 6.4 की तीव्रता से भूकंप आया।

■ **16 फरवरी**

- प्रयागराजः फिर महाजाम लगा बरदहा घाट से चाकघाट तक कई कि.मी. का जाम लगा।

- मणिपुर में 11 उग्रवादी की सुरक्षा करने वाले को गिरफ्तार किया।

- एम्स में सर्जिकल रोबोट से अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी प्राप्त की।

■ **17 फरवरी**

- सैम पित्रोदा ने कहा चीन हमारा दुश्मन नहीं भारत अपनी सोच बदले।

- दिल्ली भूकंप के तेज झटके महसूस हुए भूकंप 4 रेक्टेवयर की तीव्रता से आया।

- मुरैनाः मुख्यमंत्री मोहन यादव ने 10 मगर चम्बल में छोड़े।

■ **18 फरवरी**

- ज्ञातेश कुमार मुख्य चुनाव आयुक्त नियुक्त हुए।

- यूक्रेन युद्ध समाप्त करने के लिए रूस अमेरिका की 3 साल में सबसे बड़ी बैठक हुई।

- आप नेता सत्येन्द्र जैन पूर्व मंत्री पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मनी लॉन्ड्रिग मामला चलाने की अनुमति दी।

■ **19 फरवरी**

-रेखा गुप्ता दिल्ली विधायक दल की नेता चुनी गई। वे मुख्यमंत्री का दावा पेश करेंगी।

- बालाघाट : पुलिस ने 4 महिला नक्सली को ढेर किया। हथियार बरामद हुए।

- थलसेना प्रमुख उपेन्द्र दुबे ने बांग्लादेश में पाकिस्तानी सेना की मौजूदगी पर चिंता जताई।

■ **20 फरवरी**

- महाराष्ट्र के कृषि मंत्री माणिक राव कोफोट को नाशिक न्यायालय से 30 वर्ष पुराने धोखा धड़ी मामले में 2 साल की सजा सुनाई।

- दिल्ली के मुख्यमंत्री पद की शपथ रेखा गुप्ता ने ली। सी.एम रेखा गुप्ता ने आयुष्यमान योजना लागू की।

- सुप्रीम कोर्ट ने अरूणा गवली को जमानत से इंकार किया।

■ **21 फरवरी**

- भारतीय वैज्ञानिकों ब्लैक होल का सबसे बड़ा नमूना प्राप्त किया।

- कोच्चीः झारखंड पी एस सी टायर शालनी एवं उनकी मां वा आई आर.एस भाई मनीष मृत पाये गये।

-अमृतसरः पुलिस ने 5 कि.ग्रा. हेराईन बरामद की तथा चार आरोपियों को गिरफ्तार किया।

■ **22 फरवरी**

- एयर इंडिया की एयर लाइन विमान में टूटी सीट मिलने पर कृषि मंत्री शिवराज सिंह बोले ये यात्रियों से धोखा है।

- काश पटेल एफ बी आई के चीफ बने गीता पर शपथ ली।

- शक्तिकांत भान रिजर्व बैंक के पूर्व गर्वनर प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव नियुक्त हुए।

■ **23 फरवरी**

- दुबईः विराट के शतक से पाकिस्तान हारा चैम्पियन ट्राफी सेमीफाइनल में भारत का प्रवेश हुआ।

- पेरू में शॉपिंग मॉल की छत गिरने से 6 की मौत हुई। 78 घायल हुए।

- पाक-बांग्लादेश में पहली बार व्यापार शुरु हुआ।

■ **24 फरवरी**

- जबलपुरः महाकुंभ से लौट रही जीप बस की भिंडत में 6 लोगों की मौत हुई।

-विजेन्द्र गुप्ता दिल्ली विधानसभा के स्पीकर चुने गये।

- ढाकाः बांग्लादेश के कॉक्स बाजार में स्थित एयरबेस पर भीड़ ने हमला किया 1 की मौत कई घायल हुए।

■ **25 फरवरी**

- पूर्व सांसद सज्जन कुमार को सिख दंगा मामले में दो उम्रकैद की सजा राउज एवन्यू कोर्ट ने सुनाई।

- 38 हजार करोड़ के क्रिप्टो घोटाले में अर्जेन्टीना के राष्ट्रपति जेवियर मिलेई फंसे।

- भार के 22 मछुआरे को पाक ने रिहा किया।

■ **26 फरवरी**

- गढ़ चिरोली महाराष्ट्र : महाशिवरात्री पर्व पर नदी में 7 लोग डूबे 5 शव बरामद हुए।

- छतरपुरः बागेश्वरधाम 251 कन्याओं का विवाह हुआ सामूहिक विवाह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उपहार में सिलाई मशीन आटा चक्की दी।

- अफगानिस्तान ने 8 रन से इंग्लैण्ड को हराया।

■ **27 फरवरी**

- चामोली (उत्तराखंड): हिमस्खलन से कंटेनर में सो रहे 57 लोग दबे 32 को बचाया।

- इलाहबाद हाईकोर्ट ने संभल की जामा मस्जिद की सफाई करने का काम ए.एस.आई को सौंपा।

- इरोड (तमिलनाडु): जिले में एक नींबू 13000 रूपये में नीलाम हुआ।

इसे भी जानिये

पाकिस्तान के राष्ट्रपति

01	इसकंदर मिरझा	1956-1958
02	अयुब खान	1968-1969
03	याहया खान	1969-1971
04	झुल्फीर अली भुट्टो	1971-1973
05	फझल इल्लही चौधरी	1973-1978
06	मुहम्मद झिया उल हक	1978-1988
07	गुलाम इश्क खान	1988-1993
08	फारूक लेघरी	1993-1997
09	मुहम्मद रफीक तरार	1997-2001
10	परवेझ मुशर्रफ	2001-2008
11	असिफ अली झरदारी	2008-2013
12	मॅमनुन हुसैन	2013-2018
13	आरिफ अलवी	2018-अभी जारी

कविता

शिवपुर धाम

✻ संस्कार फीचर्स ✻

आठों कर्म विनाशक प्रभुवर सिद्ध शुद्ध शुभ नाम
सिद्धों का सुमरण करने से मिलता शिवपुर धाम
छोड़ परिग्रह बने दिगम्बर राग द्वेष दुर्भाव
समयसार के रसिया योगी जो बनते निष्काम
सिद्धों के सुमरण करने से मिलता शिवपुर धाम
सब आगम अध्येता बन राग भाव में लिप्त रहे
नहीं मुक्ति उनको मिल पाती जिनके मन में काम
सिद्धों का सुमरण करने से मिलता शिवपुर धाम
वस्त्र परिग्रह मूर्च्छा के बिन नहीं किसी के होता
शिव पथ में नही छल बल चलता निर्मल बन भजता राम
सिद्धों का सुमरण करने से मिलता शिवपुर धाम

दिशा बोध

तप

1. शान्तिपूर्वक दुःख सहन करना और जीव-हिंसा न करना, बस इन्हीं में तपस्या का समस्त सार है।
2. तपस्या तेजस्वी लोगों के लिए ही है, दूसरे लोगों का तप करना निरर्थक है।
3. तपस्वियों को आहारदान तथा उनकी सेवा-सुश्रुषा के लिए भी कुछ लोग आवश्यक हैं, क्या इसी विचार से इतर लोगों ने तप करना स्थगित कर रखा है ?
4. यदि तुम अपने शत्रुओं का नाश करना और उन लोगों को उन्नत बनाना चाहते हो, जो तुम्हें प्रेम करते हैं, तो याद रक्खो कि यह शक्ति तप में है।
5. तप समस्त कामनाओं को यथेष्टरुप से पूर्ण कर देता है, इसलिए लोग जगत् में तपस्या के लिए उद्योग (उद्यम) करते हैं।
6. जो लोग तपस्या करते हैं, वे ही वास्तव में अपना भला करते हैं। और सब तो लालसा के जाल में फँसे हुए हैं, जो अपने को केवल हानि ही पहुँचाते हैं।
7. सोने को जिस आग में पिघलाते हैं, वह जितनी अधिक तेज होती है, सोने का रंग उतना ही अधिक उज्जवल निकलता है। ठीक इसी तरह तपस्वी जितने बड़े कष्टों को सहता है, उसके उतने ही अधिक आत्मिकभाव निर्मल होते हैं।
8. देखो, जिसने अपने पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है, उस पुरुषोत्तम को सभी पूजते हैं।
9. जिन लोगों ने तप करके शक्ति और सिद्धि प्राप्त कर ली है, वे मृत्यु को जीतने में भी सफल हो सकते हैं।
10. यदि जगत् में दोनों की संख्या अधिक है, तो इसका कारण यही है कि जो लोग तप करते हैं, वे थोड़े हैं और जो तप नहीं करते हैं, उनकी संख्या अधिक है।

अंजना के सुत भगवान हनुमान

संदर्भ– पद्मपुराण ग्रंथ

संकलन–जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

अंजना के पिता राजा महेन्द्र माता हृदयवेगा दतीनामा पर्वत महेन्द्रपुर नगर के राजा थे अंजना के सौ भाईयों में इकलौती थी जो त्रिलोक्य की सुंदरता के रूप में एकत्रित बनाई गई हो जो सर्वकला युक्त साक्षात सरस्वती थी। पवनंजय के पिता राजा प्रहलाद माता के तुमती आदित्यपुर नामा के राजा थे। पवनंजय एकलौती संतान थी जो रूपवान शीलवान गुणों का भंडार सर्वकलाओं का ज्ञाता था। अंजना के अनुपम रूप देखकर माता पिता चिंतित हो उठे थे कि उनकी बेटी के लिए उपयुक्त जीवनसाथी मिलेगा या नहीं। अंजना परिवार सहित वसंत ऋतु फागुन सुदी अष्टमी के पूर्णमासी तक अष्टान्हिका पर्व पर पूजन हेतु नंदीश्वर द्वीप गये व उसी समय पवनंजय के पिता भी इसी द्वीप पर पर्व मनाने आये थे।दोनो परिवारों के आपसी मिलन व सहमति से अंजना पवनंजय तक विवाह तय होकर ज्योतिष द्वारा विवाह दिन में मान सरोवर के तट पर तीन दिन में विवाह का लग्न तय हुआ। दोनों का विवाह संपन्न होने के पूर्व पवनंजय अंजना के रूप की सौन्दर्यता से प्रभावित होकर गुप्त रूप में रात्रि में देखने गया वहां अंजना की सखी मिश्रकेशी बातें सुनकर अंजना के प्रति विद्वेष उत्पन्न हुआ व निश्चित कर लिया कि अंजना से विवाह नहीं करूंगा।

दोनों परिवार के समझाने व आपसी सहमति से पवनंजय ने पिता व ससुर की प्रतिष्ठा को ठेस न पहुंचे विवाह की स्वीकृति दे दी किन्तु मन में तय कर लिया था कि विवाह के बाद उसे तज दूंगा जिससे पूरी जिंदगी दुखों से व्यतीत करें। अष्टान्हिका पर्व पर विवाह बड़ी ही धूमधाम से संपन्न हुआ। विवाह की इस शुभ पावन बेला की चांदनी रात्रि में अचानक काले बादलों के छाने से अंजना के मन में अशुभ सा उत्पन्न हो रहे थे। अंजना ने पवनंजय के तजे जाने पर अपने अशुभ कर्मों के उदय मान कर दुखों का जीवन का श्रृंगार बनाया व अपने भाग्य पर भरोसा कर ऐसा शुभ दिन अवश्य आयेगा कि मेरे पति शुभ से प्रसन्न होकर मेरे पास अवश्य आयेगा। अंजना का कंचन रूप कोयला जैसा बन गया इसकी यह अवस्था देखकर पूरा परिवार व्याकुल होता था जिसे पूर्व अर्जित पाप का उदय मानता था।

अनांथतर 22 वर्ष बाद पवनंजय पिता की आज्ञा से सेनापति वरूण से युद्ध करने मानसरोवर तट पर डेरा डाला था। रात्रि में नदी में चकवी का विरह व तडफता देखकर एक रात्रि का वियोग चकवी सहन न कर सकी ऐसा चिंतवन किया चकवी का मन चकवा में लगा है, इसी मानसरोवर तट पर मेरा विवाह हुआ था। मन आत्मग्लानि से भर गया हाथ मैं क्रूर पापी निर्दोष अंजना को तजा यह वियोग कैसे इतने वर्षों से सहा होगा धिक्काए है मेरे जीवन को बिना विचारे दूसरों की बातों पर विश्वास किया पति से रहित पत्नी के लिए पल्लव तलवार का काम करता है, चन्द्रमा की किरण वज्र बन जाती है और स्वर्ग नकर जैसा हो जाता है। ऐसा विचार करते हुए उसका मन

प्रिया अंजना सुन्दरी पर गया ? अब क्या करूं यदि युद्ध के लिए जाता हूँ तो यह निश्चित है कि वह जीवित नहीं बचेगी ? मैंने आते समय उसकी चेष्टायें देखी थी। शीघ्र ही उसी रात्रि आपके सखा के साथ विमान से घर अंजना से मिलने गया।

पवनंजय अंजना से मिलने से लज्जित हो रहा था, उसके हाथ जोड़कर मैंने कर्मोदय के प्रभाव से तिरस्कार किया क्षमा करो, पुनः मेरे अपराध भूल जाओ चरणों में मस्तक रख दिया। अंजना में लज्जा से मुख नीचा करते हुए कहा मैंने जो जीवन धारण किया है वह आपकी स्मृति के आश्रय ही है, आपके द्वारा तिरस्कार मेरे लिए एक महान आंनद स्वरूप ही होगा। व क्षमा किया तो पवनंजय ने सिर उठाकर गले लगाता था उसी समय दोनों के नेत्रों से सुखों की अनुभूति आंसुओं की धारा झरने की तरह फूट पड़ी व आपस में मिलन हुआ समय व्यतीत होने पर अंजना ने अपने आपको संभाले हुआ कहा हे आर्य पुत्र ऋतुकाल के बाद ही हमारे समागम से गर्भ रह गया तो आपके विरह काल में मैं निंदा का पात्र बनूगी।

पवनंजय ने आश्वासन दिया गर्भ प्रकट होने के पूर्व वापिस आ जाऊंगा फिर भी मेरे नाम की मुद्रिका कड़ा रखो जो मेरी पहचान वापिस आने का गवाही देगा व पवनंजय उसी रात्रि को युद्ध के लिए प्रस्थान किया और यह नये मोड़ का संकेत था।

अंजना के गर्भ में हनुमान का जीव पूर्व भवों में बालकपन में मुनियों की नवधा भक्ति से आहारदान दिया जिसके प्रभाव से उन्हें अनेकों ऋद्धि प्राप्त हुई चाहें जैसा रूप बनना, जल, थल नभ में कही भी जाने की शक्ति प्राप्त की व तप के प्रभाव से सातवें लांतव नामक स्वर्ग में देव हुए वह वहाँ से चयकर अंजना के गर्भ में आये।

जब अंजना गर्भवती होती है, उसकी स्थिति और कठिन हो जाती है। उसकी सास केतुमती जो पहिले से अंजना के प्रति कठोर थी अब उसके गर्भ चिन्ह को देखकर उसे कलंकित करके अपमानित किया और उसे उसकी सखी वसंतमाला के साथ राजा महेन्द्र के नगर के पास छोड़ दिया। अंजना की मां को उनकी दूती द्वारा अंजना के गर्भ का समाचार या उसे आश्रय नहीं दिया। अंजना के कारण क्रंदन सुनकर प्रकृति भी दुखी होकर गई। इस संसार में कोई दूसरा शरण नहीं है मरण ही शरण है ऐसा कहती हुई बेहोश हो गिर पड़ी। बसंत माला ने सहारा देते हुए धीरज बधाया रोना व्यर्थ है पूर्वोपर्जित कर्म उदय में आया है उसे सहन करना ही योग्य है, दुखी होकर गर्भ को पीड़ा मत पहुँचाओ। यह प्रदेश आश्रय से रहित है वहां दूर पर्वत के पास कोई ऐसी गुफा में जिसमें सांसारिक दुष्ट जीव न पहुंच सके गर्भ के कल्याण हेतु निवास करना उचित है।

अंजना वसंतमाला को पहाड़ के पास गुफा के द्वार पर ले जाती है, अंजना की आशंकित नजरें अचानक शुद्धि शिला पर विराजमान चारण ऋद्धि के धारक मुनिराज पर नजर गई व तीन प्रशिक्षणा देकर नमोस्तु कर बैठ गई। अवधिज्ञानी अमितगति मुनिराज ने कहा कि अंजना पिछले जन्म के कर्मों के कारण वह उस पीड़ा से गुजर रही है, लेकिन जल्द ही यह महाभाग्यशाली गर्भ जो उदर में आया है जो आगे चलकर उत्तमोत्तम कल्याणों को प्राप्त एक महान पराक्रमी होगा।

मुनिराज ने भविष्यवाणी की जल्दी ही पति से पुनः मिलन होकर सभी सुखी होंगे। संसार से पार करने वाले भगवान जिनेन्द्र देव की भक्ति करो। मुनिराज का आशीर्वाद अंजना के लिए एक नई रोशनी आशा का संचार करता है।

अंजना भक्ति पूर्वक उस गुफा में आत्मा में रत्नत्रय दर्पण में प्रभु मुनिसुव्रतनाथ को विराजमान करके प्रभु भक्ति में डूबकर अनेकों उपसर्गों को सहन कर चैत शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार को बालक हनुमान के जन्म उत्पन्न होते ही शरीर के तेज से गुफा सुवर्ण की तरह चमक उठी। हनुमान का जन्म एक महान चमत्कारी घटना था। अंजना पुत्र को गोद में लेकर उदास होकर सोचती है इस सघन वन में तेरा जन्मोत्सव कैसे मनाऊं कि अचानक गुफा के ऊपर अंजना के मामा प्रति सूर्य का विमान रूक गया। गुफा में आकर अंजना व बालक का मिलन हुआ।

मामा प्रतिसूर्य अंजना बालक सहित विमान में अपने देश जाने को तैयार हुए की माता की गोद से बालक छूटकर पर्वत की वज्र शिला को चूर-चूर कर शिला पर हनुमान हाथ पैर हिलाकर मुंह में अंगूठा चूसकर मुस्कुराते थे। मामा के नगर हनूरूह में जन्मोत्सव मनाया गया। बालक ने शैल अर्थात् पर्वत में जन्म लिया था व शिलाओं के समूह को चूर्ण कर दिया था इसलिये इनका नाम श्री शैल रखा गया था। बालक के हनुरूह नगर में जन्मोत्सव मनाने से हनुमान नाम से प्रसिद्ध हुए।

शुभकर्मों के उदय से पिता परिवार में सभी का मिलन हुआ। बालक हनुमान की बाल लीलाओं से सभी दुखों से उभरकर आनंद पूर्वक रहने लगे।

हनुमान वानरवंश के शिरोमणि थे व चरम शरीरी महापुरुष तद्भव मोक्षगामी विद्याधर थे। अन्याय के विरूद्ध अपने स्वजनों नाना महेन्द्र, राजा रावण से युद्ध किया। प्रभु राम की सहायता करके माता सीता को रावण से मुक्त कराया था। अंत समय में सुमेरू पर्वत पर जिन मंदिर नंदनवन, सोमनसवन, पांडुकवन के चारों चैत्यालय भगवान के अकृत्रिम प्रतिबिम्ब के दर्शन पूजा की। सूर्य अस्त होने पर सुरदुग्ध भी पर्वत पर सेना सहित कृष्ण पक्ष की रात्रि व्यतीत उसी समय रात्रि में आकाश से दैदीप्यमान एक तारा टूटने से हनुमान के मन में विचार किया बिजली की चमत्कार जान की तरंगे जैसे क्षणभंगुर शरीर भी विनश्वर है ऐसा निश्चय कर सभी सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर चैत्यवन में विराजमान चारण मुनि से जिन दिशा ली, जिन धर्म आराधन तपकर अष्ट कर्म की समस्त प्रकृतियों को नष्ट करके तुंगीगिरि के शिखर से भगवान केवली बनकर सिद्ध पद प्राप्त किया।

शिक्षा- इस कथा से अंजना का मातृत्व प्रेरणा देता है कि उसकी शांति धैर्य ओर कर्त्तव्य निष्ठा व प्रभु भक्ति ने अवला से सवला बनकर अपनी गोद को धन्य करके जगत जननी माता बनने व अपने पुत्र हनुमान को एक महान योद्धा, धर्मरक्षक और भगवान केवली बनने की दिशा दिखाई।

जीवन में हर दुख के बाद एक नया अवसर आता है और मातृत्व सबसे बड़ी शक्ति होती है जो समाज और परिवार को समृद्धशाली बनाती है।

जीवन में कभी गलत धारणा दुःख का कारण बनकर जीवन को प्रभावित करके कठिनाईयों को भोगना पड़ता है।

शांत-सहज-समर्पित, सेवा, समन्वयी सम्पादन के समर्थ हस्ताक्षर थे पं. जयसेन जैन

❊ राजेन्द्र जैन (महावीर) सनावद ❊

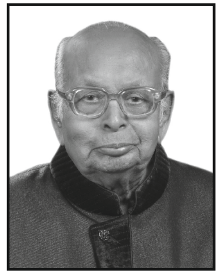

परम आदरणीय पण्डित जयसेन जी जैन के निधन की खबर से अत्यंत व्यथित हूँ मुझे ध्यान है जो आया है सो जाना है लेकिन पण्डित जयसेन जी जैन का जाना एक ऐसे व्यक्तित्व का जाना है जिससे अनेक गुण सीखे जा सकते हैं, वे एक जीवंत पाठशाला थे, जिन्होंने जीवन भर सहज रहना सिखाया, उनके शांत परिणाम, निर्मल भावना समन्वयी लेखन, सामायिक चिन्तन, समर्पण, सेवा, संगठन के प्रति निष्ठा उन्हें हम सबके बीच बहुत अलग बनाती रही।

सन्मतिवाणी और जयसेन जी पर्यायवाची बन गए थे।

महावीर ट्रस्ट मध्यप्रदेश की एक ऐसी संस्था है जो एक नहीं अनेक कार्यों के लिए जानी जाती है उक्त संस्था का मुख पत्र सन्मति वाणी का सम्पादन संहिता सूरि पं. नाथूलाल जी शास्त्री करते थे, उनका उत्तराधिकारी होना, उस समय एक 45 वर्षीय युवा पर सन्मति वाणी का सम्पादन का भार प्रदान करना उनकी योग्यता का परिचायक था, जिसे पं. जयसेन जी ने 43-44 वर्ष तक कुशलता से निभाया, सन्मतिवाणी के सम्पादन जैसे कुशल कार्य को उन्होंने प्राण-पण से जिया लगभग पाँच दशक तक वे अपने पूर्वज पं. नाथूलाल जी शास्त्री की परम्परा को कुशलता से निभाते रहे, इन्दौर सहित सम्पूर्ण साहित्य जगत में पं. जयसेन की चर्चा चलती तब-तब सन्मति वाणी की बात जरूर चलती रही।

वे सन्मति वाणी में इतने रम गए थे कि वे पत्रिका को समय पर निकालने और उसमें कोई गलती न हो जाए, वह सर्वोपयोगी रहे इस बात पर हमेशा सजग रहे, यदि मैं कहूँ कि सन्मति वाणी और जयसेन जी एक-दूसरे के पूरक व पर्यायवाची बन गए थे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वे महावीर ट्रस्ट के महामंत्री भी रहे, उन्होंने अपना वह हर कार्य पूर्ण प्राण-प्रण से किया जिसकी उन्हें जिम्मेदारी दी गई।

धर्मचक्र का प्रवर्तन व जन मंगल कलशः-

2 फरवरी 1937 को इन्दौर में जन्में पण्डित जयसेन जी जैन के पूर्वज अलीगढ़ उत्तर प्रदेश के निवासी थे, उन्होंने 40 वर्ष तक शासकीय शिक्षक के रूप में कार्य किया, शिक्षकीय दायित्व के साथ वे समाज सेवा में निरंतर संलग्न रहे, धार्मिक पाठशाला का संचालन कर उन्होंने अनेक बच्चों युवाओं को देव शास्त्र गुरु का स्वरूप बताया और अनेक धार्मिक नाटक लिखे उन्हें मंचित कराया।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के सहस्त्राब्दी समारोह सन् 1981 में निकले जनमंगल कलश को सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में प्रवर्तित कराने में आपने संयोजक का दायित्व निभाया उससे पूर्व

भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर निकले धर्म चक्र का ग्राम-ग्राम, नगर-नगर प्रवर्तन कराने में उनका योगदान स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। अपने कार्य की जिम्मेदारी व निष्ठापूर्वक करना उसे उद्देश्य तक पहुँचाना उनके व्यक्तित्व की खूबी थी।

सम्पादन के सिरमोर पं. जयसेन जी :-

इन्दौर नगर में दिगम्बर जैन समाज में यदि सम्पादन करना हो तो एक बात तय थी कि वह सम्पादन पण्डित जी ही करेंगे। आचार्य विद्यानंद जी से आचार्य विद्यासागर जी सहित अनेक मुनिराजों के चातुर्मास प्रवास की स्मारिका हो या वावनगजा आदि तीर्थों की बात हो सम्पादन तो पण्डित जी ही करते थे, उनका सम्पादन निर्विवाद, निष्पक्ष और समन्वयी रहता था। उनका यह कार्य उन्हें पाँच दशक तक सिरमोर बनाता रहा, अनेक इस श्रम श्राद्ध कार्य को नमन।

कासलीवाल परिवार का साथ हमेशा मिला:-

इन्दौर में काका साहब स्वर्गीय श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल ने समाजसेवा के क्षेत्र में नित नूतन प्रयोग किये, युवारत्न स्वर्गीय श्री प्रदीपकुमार सिंह कासलीवाल ने समाज को नित-नूतन आयाम दिये, उन्होंने पं. जयसेन जी जैन को हमेशा प्रोत्साहन प्रदान किया, लम्बे समय तक कासलीवाल परिवार के साथ कार्य कर उन्होंने नई पीढ़ी के युवा समाज सेवी श्री अमित कुमार सिंह, आदित्य कुमार सिंह कासलीवाल के साथ भी उसी उत्साह के साथ कार्य किया। एक पारिवारिक माहोल में कासलीवाल परिवार हमेशा उनके साथ खड़ा रहा। पण्डित जयसेन जी के पुत्र महेश-रमेश-नरेश-सुरेश अपने पिता के संस्कारों के साथ अपने-अपने क्षेत्र के सफल व्यक्तित्व हैं।

जयसेन जी जैसा होना बहुत कठिन है:-

साहित्य समाज का दर्पण होता है साहित्य साधना अपने आप में बहुत कठिन होती है। लम्बे समय तक सेवा-समर्पण, पारिवारिक दायित्व के साथ, समन्वय, संस्थाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करना और पदाधिकारियों के साथ बैठकर किसी भी कार्य को क्रियान्वित कराना हर कोई नहीं करा सकता है। इसके लिए वाणी संयम, धैर्य, इंतजार, अहंकार विहीन होकर 24×7 लगना होता है, यह कार्य पाँच दशकों तक निर्बाध रूप से करना किसी तपस्या से कम नहीं हो पं. जयसेन के बारे में यदि हम कहे कि नाम तो जयसेन रखना आसान है लेकिन पण्डित जयसेन जी जैन जैसा समर्थ सम्पादक, कुशलवक्ता, समर्पित शिक्षक, गंभीर व्यक्तित्व बनना आज के दौर में अत्यंत कठिन कार्य है।

88 वर्ष के अपने जीवन में अनेक संतो की आशीष अनुकम्पा पा चुके पण्डित जयसेन जी अपने मार्गदर्शी, चिंतन परक सम्पादकीय लेखों में हमेशा जीवंत रहेंगे।

साहित्य जगत में हुई अपूरणीय क्षति का भरा जाना असंभव है। परम श्रद्धेय पण्डित जयसेन जी को विनम्र श्रद्धांजलि सहित।

संस्कार सागर परिवार पंडित जी के प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित करता है।

कहानी

वसुधा की पीड़ा

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

सुबह के आठ बज रहे थे रोहित अपनी आदत के अनुसार तेज कदमों से बढ़ता चला जा रहा था रोहित कम पढ़ा लिखा लेकिन एक आदतन शराबी बन चुका था रोहित के माता पिता भी उसकी इस आदत से बहुत परेशान हो चुके थे इसलिये रोहित के लिए उनके माता पिता ने घर से अलग कर दिया था रोहित की शादी वसुधा के साथ हुई थी वसुधा अपनी जवानी की दहलीज पर कदम रखने के साथ साथ बहुत सुंदर और एक अनुशासित महिला थी वह पढ़ी लिखी होने के साथ-साथ छोटी सी एक अपनी नौकरी भी करती थी लेकिन होटल में काम करने वाला रोहित काम करने के साथ-साथ जब काम से लौटता था तो रोज निश्चित तौर पर वह दारू की बौतल अपने साथ ही लाता था इसकी इस आदत से वसुधा और रोहित के बीच में प्रायः तकरार होती रहती थी लेकिन वसुधा ने एक संकल्प लिया था कि मैं रोहित को सुधारकर रहूंगी कोंडाली ग्राम जिस कोंडाली महाराष्ट्र की बाजार गांव के पास रहने वाली एक छोटी सी बस्ती थी इस बस्ती में अनेक लोग रहा करते थे लेकिन प्रायः सभी लोगों का एक मत था गाँव में कई बार पंचायत हुई और पंचायत होने के बाद महिलाओं ने यह तय किया कि गांव में कोई भी शराब पीकर के नहीं घूमेगा लेकिन कई लोगों ने तो बात मान ली तो कई लोगों के लिए महिलाओं ने अपने हाथ से ही उन्हें सुधार दिया या उनके साथ ऐसा सलूक किया कि जिससे वे अपनी शराब की आदत छोड़कर के शराब पीकर के कभी बाहर निकलकर ऊधम मस्ती नहीं करते थे शराब की इन आदतों के देखकर के सब यह जानते हैं और लोग प्रायः कहा करते हैं कि कोई मुझे निकाल ले बोतल की कैद से कोई बोतल की कैद से

निकलना चाहता है लेकिन प्रायः देखा तो जाता है कि कई जो बोतल की कैद में एक बार फंस जाते हैं वे निकल नहीं पाते हैं जब रोहित शराब की बोतल से चिपता रहता था तब भी वसुधा ने उससे यही बात कही और समझाया भी क्या महिलाओं की चप्पलें खाकर के तुम शराब पीना छोड़ेगे या अपने पास जब रोहित का नशा उतर जाता था।

रोहित आकर के अपने पिताजी के सामने कई कसमें खाता था ओर कहता था आज के बाद पिताजी आपके लिए मे कोई भी ऐसा काम करते हुए नहीं मिलूंगा जिससे आपकी इज्जत डुबे उसके पिताजी कहा करते थे कि मैं एक शिक्षक हूं शिक्षक होने के कारण से मैंने कई लोगों के लिए इस शराब के नशे से दूर कर दिया कई लोगों को सुधार दिया परंतु मेरी बदकिस्मती यह है कि मेरा बेटा शराबी है और मैं अपने बेटे को नहीं सुधार पा रहा हूं उनके पिताजी ने हमेशा यही बात कही लेकिन वसुधा सिर्फ एक ही कार्य कर सकती थी कि अपने पति की शिकायत वह कभी अपने पिता से करती थी कभी रोहित के पिता से करती थी सबसे शिकायत ही शिकायत किया करती थी लेकिन शिकायत के बाद भी उसे परिणाम यही मिलता था कि सिर्फ आश्वासन मिलते थे कई बार तो वसुधा अपनी ससुराल को छोड़कर के मायके चली गई परंतु मायके जाने के बाद भी फिर उसके पिताजी समझाया करते थे कि वसुधा देख तू बड़े घर की बेटी है बड़े घर की बेटी का मतलब क्या होता है कि किसी भी कपड़े को अगर कोई गंदा कपडा हो जाता है तो फेका नहीं जाता है गंदे कपड़े को साफ किया जाता है।

इसी तरीके से तेरी किस्मत में यदि शराबी पति था तो तेरी शादी शराबी के साथ हुई लेकिन तेरी सबसे बड़ी बात एक ही इस समय ड्युटी है तेरा कर्तव्य है कि तू अपने पति को शराब की बोतल से बाहर निकालकर एक अच्छी जिंदगी देने का काम करें वसुधा कहती थी पिताजी मैं यह कहूं अगर आपसे कि मैं हार गई हूँ तो तुम मेरे लिये कहोंगे कि कभी भी अच्छे व्यक्ति हारते नहीं हारते वे हैं जो मन से हार जाते हैं जो मन से नहीं हारते हैं उन्हें विश्वस की कोई भी शक्ति हरा नहीं सकती है विश्वास और संकल्प एक ऐसी चीज है जिससे हर आदमी जीत प्राप्त करता है लेकिन वसुधा ने यह देखा कि जितनी बार भी उसने रोहित को समझाया रोहित की समझ में हर बात आती थी रोहित बड़े प्यार से कहता था वसुधा अब तेरी कसम मैं अब कभी भी शराब नहीं पीऊँगा लेकिन वह जब देखो तब फिर उसी चीज में लग जाता था हिंगोली के पास में रहने वाली वसमत का यह रोहित अपनी नौकरी छोड़कर के अकोला आ गया था और अकोला में भी नौकरी करने लगा सबने यह सोचा था कि ऐसा होगा कि किसी दिन संगति बदल जाएगी तो रोहित पीना छोड़ देना लेकिन संगति से ही सब कुछ नहीं होता है कहे रहीम उत्तम प्रकृति का करे सकती कुसंग चंदन विश्वव्यापी नहीं

लिपटे रहत भुजंग चंदन में विष नहीं आता कभी भी बहुत सारे साप चंदन से लिपट जाते हैं और हमेशा लिपटे ही रहते हैं चंदन से लेकिन चंदन जो होता है उसकी प्रकृति उत्तम होती है तो उत्तम प्रकृति होने के कारण से चंदन अपने सौरव बिखरता है और साप जहरीले होने के कारण से जहरीले सबको बनाने की कोशिश करते हैं लेकिन सब जहरीले नहीं बन पाते हैं चंदन की खुशबू सूँघना नहीं पड़ती है अपितु वह स्वंय देता है वसुधा तेरी अगर अच्छी सोच और समझ है तेरा सोच अच्छा है तो निश्चित तौर पर वसुधा तु एक दिन सफल होगी मेरा यह विश्वास है तू मेरे विश्वास के साथ तू भी अपना विश्वास बना रोहित उसके वसुधा के पिताजी समीर ने हमेशा समझाया समीर भी एक बहुत अच्छे घराने के थे और उन्होंने अपनी जिंदगी में सब प्रकार के लोगों की संगति की थी लेकिन उन्होंने कभी अपने जीवन में शराब नहीं पी थी और उन्होंने अपनी बेटी वसुधा की शादी करने के लिए सबसे पहले यह तो सोचा था देखा भी था लेकिन रोहित इतना अच्छा आदमी था रोहित के पिता के पास बहुत सारी जमीन थी जायदाद थी और उन्हें विश्वास था कि इतनी जमीन और जायदाद रखने वाला व्यक्ति के घर अगर हम अपनी बेटी को देंगे तो बेटी कभी दुखी नहीं मिल सकती है इसलिए उन्होंने जिसकी पचास एकड़ की जमी रखने वाले रोहित के साथ अपनी बेटी की शादी की थी परंतु शादी के पांच साल बाद ही रोहित की आदतों के कारण से पचास एकड़ जमीन का हिस्सा भी नहीं बचा रोहित के पिताजी ने भी उसे घर से सारी जमीन बेचने के बाद बिकने के बाद बाहर कर दिया लेकिन फिर भी रोहित के अंदर कोई सुधार नहीं आया रोहित की एक बार पड़ी हुई आदत किसी संगति के कारण नहीं थी किन्तु किसी ने कहा कि मैं पीता नहीं हूं पिलाई गई है ऐ दुनियावालों शराबी न समझों मैं पीता नहीं हूं पिलाई गई हैं मैं पीता नहीं हूँ क्या की गई है पिलाई गई हे तो मगर यह बात भी कोई अच्छी नहीं होती है।

वह जब सबसे पहले पीकर के आया था तो पीकर आने के बाद वसुधा ने एक बात कही कि आप शराब पीकर आये बोले नहीं शराब पीता ही नही हूँ मैंने कभी नहीं पी न मैं पिता हूँ न मैं शराबी हूं मगर दोस्त यारों ने मुझे मिल करके जबरदस्ती मेरे मुँह में डाल दी वसुधा को उसकी बात पर विश्वास हो गया और उसने इस विश्वास के कारण से वसुधा ने अपने शराबी पति के प्रति सहानुभूति सदा ही रखी लेकिन जब आदते बढ़ती चली गई तो एक दिन वह आ गया जब एक फरवरी दो हजार पच्चीस का दिन था वसुधा को एक शादी में जाना था तब प्रायः वसुधा अपने आभूषणों को बहुत छुपाकर के रखती थी क्योंकि वसुधा को डर था कि मेरे पति शराबी है और मेरे आभूषण कभी भी बेच सकते हैं मगर यह वसुधा को पता नहीं था विश्वास नहीं था कि उसकी अंगूठी सबसे सुंदर प्यारी सी अंगूठी जो थी

जो पिछली दीपावली को ही खरीदी थी वहीं भी रोहित ने पार कर दी है और रोहित ने पार करके उस अंगूठी को भी बेच दिया और बेच करके मस्त करके के रोज आता था वसुधा सोचती थी कि रोहित के दोस्त ऐसे कैसे दोस्त है जो रोज उसे पिला देते हैं और वह यही कहता था मेरे पास पैसे नहीं है वे दुकान की तनखा लाऊंगा तो तेरे लिए पूरी दे दूंगा और रोहित पूरी तनख्वाह वसुधा के हाथ में रख देता था वसुधा को यह विश्वास नहीं हुआ कि रोहित मेरी कोई नगिनी को बेच देगा अब जब एक फरवरी को शादी में जाना था वसुधा को तो वसुधा ने अपनी अंगूठी जहां रखी थी वहां से अंगूठी उठाने की कोशिश की ढूँढी खोजी वह नहीं मिली उसने सोचा हो सकता है मैंने कहीं दूसरी जगह रख दी हो दो कमरे के मकान में हर जगह वसुधा ने अंगूठी को ढूंढा अंगूठी नहीं मिली वसुधा को अब ऐसा लगने लगा कि मैं हार चुकी हूँ जैसे ही घड़ी के दस बज रहे थे कि लड़खड़ाते पैरों से रोहित ने दरवाजे को खटखटाया वसुधा ने दरवाजे खोलने के साथ साथ एक दम एक ही बात पूछ ली मेरी अंगूठी कहा हैं रोहित बोला मुझे तेरी अंगूठी का क्या पता वसुधा ने कहा मुझे अंगूठी का पता है तुम्हारे सिवाय मेरी अंगूठी कोई और ले नहीं सकता है तुमने मेरी अंगूठी की चोरी की है और तुम सच बता दो कि मेरी अंगूठी कहा है अन्यथा आज या तो मैं रहूंगी या तो तुम रहोंगे वसुधा की इस चेतावनी के बाद रोहित ने अपनी संपूर्ण सफाई दे डाली परंतु वसुधा ने जो समझा था वह सही समझा था कि ये अंगूठी सिर्फ रोहित के सिवा कोई दूसरा नहीं ले सकता है और वसुधा ने उससे पुनः कहा कि आज अगर तुम नहीं बतलाओगे कि अंगूठी कहा है तो एक बहुत बड़ा या तो मैं मर जाउंगी तुम मरोगे रोहित बोला तुम मरो मुझे कोई दिक्कत नहीं मैं अपनी मस्ती की जिंदगी जी रहा हूं जीऊंगा दूसरी शादी भी कर लूंगा वसुधा की जगह कोई धरती मेरे पास आ जाएगी कोई जमीन और दूसरी भी मिल जायेगी मैं ऐसी बातों से घबराता नहीं हूं क्योंकि जिंदगी एक सफर है बड़ा सुहाना होता है और मौत आयेगी तो आ जानें दों जान जाएगी तो जाने दो मैं ऐसी बातों से कभी घबराता नहीं हूँ और मस्त जिंदगी जीता हूं जीता रहा हूँ जीता रहूँगा चोरी की है मैंने अंगूठी मैंने बेच दी रोहित की इस हेकड़ी को सुनकर के वसुधा ने कहा कि यह बात हद के बाहर गुजर गई है बोला गुजर गई गुजर जाने दो मैं पीता हूं पीऊँगा जीता हूँ जीऊँगा तुझे मेरे से कोई मतलब नहीं आज के बाद तू मुझे शराब पीने से रोकेगी तो मैं तेरे लिए अब कुछ और करूंगा वसुधा ने कहा इस घर में अगर रहना है तुम्हें और हमें मिलकर के तो शराब के बिना ही रह सकते हैं या तो मैं चली जाउंगी या तुम्हें जाना पड़ेगा रोहित ने कहा इतनी बार चली गई तुम मेरा क्या बिगड़ गया फिर लौटकर की जायेगी कहा वसुधा ने कहा अब मैं जाउंगी तो लौटकर के नहीं आऊँगी रोहित ने वसुधा का हाथ पकड़ा और हाथ

पकड़कर के थोड़ी जोर से खींचने की कोशिश की वसुधा ने एक झटका दिया हाथ छूट गया हाथ छूटने के बाद शराबी रोहित ने कई बार करने की कोशिश करी थी वसुधा का गला दबा रहा था कि उसी समय वसुधा ने कहा यह हद गुजर गई है अब मैं बच नहीं सकती हूँ उसने छुड़ाने के लिए सीने पर एक घूंसा जोर से मार दिया सीने पर रोहित के घूंसा लगते ही रोहित बेहोश हो गया रोहित के बेहोश होने के बाद उसका बेटा वहीं पर खड़ा था उस बेटे ने प्रियांश ने देखा कि पापा बेहोश हो गए हैं नौ साल का बेटा रोने चिललाने लगा रोने चिल्लाने के बाद वसुधा भी यह बात नहीं सोच पाई थी कि इतनी जोर से लगेगा कि बेहोश हो जायेगा आखिरकार हुआ यही कि पड़ोसी लोग इकट्ठे हो गए और उन्होंने कहा वसुधा तुम चिंता मत करो तुम कुछ भी मत सोचो में इन्हें हॉस्पिटल ले गए हॉस्पिटल लेकर की जा रहा हूँ सारे पड़ोसी मिलकर के ऑटो में डालकर के रोहित को हॉस्पिटल ले गए हॉस्पिटल में ले जाने के बाद डॉक्टरों ने यह कह दिया कि अब मुश्किल है इनका बच पाना इलाज तो करूंगा डॉक्टरों ने इलाज किया दो घंटे तक सारी डॉक्टरों की मेहनत हुई डॉक्टरों ने पूरी मेहनत करने के बाद आखिरकार रात के दो बजकर तीस मिनट पर हाथ ऊंचे कर दिये और यह कहा अब इनको लेकर जाकर इनकी वसुधा तुम सेवा करो वसुधा ने कहा सेवा में क्या करूँ मैंने अपनी जिंदगी भी इनके हवाले की जान भी हवाले कर दी परंतु इनकी इस शराब के नशे में मेरी पचास एकड़ जमीन भी बेच दी इसके साथ-साथ इन्होंने आभूषण गहने मकान सब कुछ तो बेच दिया अब मेरे पास सिर्फ में हूं और बेटा है व मेरी नौकरी है नौकरी भी कब तक चलेगी मैं नहीं कह सकती हूं क्योंकि आज के दिन यह कह रहा है कि मुझे अब पुलिस के हवाले होना पड़ेगा आखिरकार वसुधा ने अपनी सारी पीड़ा सब इंस्पेक्टर के सामने बया कर दी और उसने कहा कि मैं अपने बारे में कुछ नहीं बताउंगी मैं सिर्फ आंसू बहा सकती हूं बयान नहीं दे सकती हूँ आखिर हिचकी आखिरी ली रोहित ने और दुनिया से विदा हो गया और वसुधा भी अपनी संपूर्ण जिंदगी अब जेल से हवाले कर चुकी थी क्योंकि वसुधा के सामने अब कोई उपाय नहीं था वह झूठ बोलना जानती नहीं थी न वह झूठ बोलना चाहती थी वसुधा ने पुलिस अधिकारियों के सामने सब कुछ सच-सच कह दिया डी.एस.पी नितिन अंभोरे ने एक बात कही कि इसकी पीड़ा सुनकर कर सिर्फ हम आंसू पोछ सकते हैं क्योंकि वसुधा ने जो कुछ भी किया है वह सिर्फ अपने पति को सुधारने के लिए किया या तो वो मरती या फिर वसुधा वहीं रोहित का जो हुआ वो होगा उसके बेटे से भी सब कुछ पूछा गया प्रियांश ने सब कुछ वहीं बताया जो वसुधा ने बताया और तय यही हुआ कि राजकुमार होटल में काम करने वाला रोहित दुनिया से चला गया वसुधा हमेशा अपनी पीड़ा के लिए रोती रहेगी।

हमारे गौरव

काव्य साधना के धनी एलक सम्यक्त्व सागर महाराज

बाल ब्रह्मचारी, अल्पवय से ही आत्मकल्याण की और अग्रसर कवि हृदय और श्रेष्ठ साहित्यकार रहे हैं एलक श्री सम्यक्तव सागर जी। मध्यप्रदेश के सागर जिलान्तर्गत बण्डा नगर में 4 दिसम्बर सन् 1965 में आपका जन्म हुआ। आपका पूर्व नाम सनतकुमार था। पिता श्री बाबूलाल जी एवं माता श्रीमती कुन्तीबाई के नाम से जानी जाती हैं । आपकी दो बहनें हैं -मनोरमा एवं माया। बहिन माया भी बाल ब्रह्मचारिणी एवं आत्मसाधना के पथ पर अग्रसर हैं। आप परिवार के धार्मिक संस्कार में पले और बढ़ें। उनका समूचा बचपन संत समागम में ही बीता।

अक्षराभ्यासः लौकिक शिक्षा मिडिल तक ही प्राप्त कर पर उन्हें धार्मिक शिक्षा अधिक ही मिली। आपने आत्म सृजन की एकाकी यात्रा तो ग्यारह वर्ष की अल्पआयु में ही आरंभ कर दी थी। पारलौकिक विद्या के अन्वेषक आप अधिक रहे। इसी कारण 3 नवम्बर सन् 1982 को उन्हें आचार्य श्री विद्यासागर जी के चरण सान्निध्य प्राप्त करने का सुअवसर मिला और जीवन को सार्थक बनाने में संलग्न हो गये।

संयमानुरागः 8 नवम्बर सन् 1985 में आहार जी सिद्धक्षेत्र पर आचार्य विद्यासागर जी से क्षुल्लक दीक्षा धारण की और जीवन मूल्य की प्राप्ति हेतु आत्म साधना रत हुए। अब वे क्षुल्लक श्री सम्यक्तवसागर जी हो गये।

आत्मविकास की तीव्र कांक्षा के कारण आपको थूबौन जी में वर्षायोग की प्रतिष्ठापना के समय 10 जुलाई सन् 1978 को आचार्य श्री जी ने ही ऐलक दीक्षा प्रदान की।

साहित्यक गतिविधियांः एलक श्री कवि हृदय होने से उनके द्वारा रचित काव्य संग्रह अधिक हैं। जिनमें 1. सम्बोधन शतक, 2. रत्नत्रय शतक 3. मुक्तकों के मुक्त शतक, 4. पूजा के फूल, 5. शाकाहार कब आयेगा, 6. वंदना के स्वरों में, 7. प्रस्तर की पुकार, 9. सांसों का संगीत, 10. दस्तक (क्षणिका संग्रह), 10 सूरज कुंहासे में, 11. सुबह की तलाश में (गजल संग्रह) प्रमुख हैं।

कहानी संग्रह- 1. होनी हो सो होय, 2. जंचा सो लिखा, 3. टूटी वीणा के स्वर, 4. आस्था का सूरज।

उपन्यास- 1. आप्तकाम 2. स्वार्थ समर। प्रवचनसंग्रह- हंसा मान सरोवर भूला, देखा सुना, कहा। एवं नाटक- शाकाहारी शेर।

इसके अतिरिक्त **श्रावक समाज और राष्ट्र** तथा **अनेक राष्ट्र एक धर्म** प्रवचन संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । आपकी कुछ कविताओं का गुजराती एवं मराठी में अनुवाद भी हुआ है और आपके लेख सतत ही देश के अनेक राष्ट्रीय दैनिकों जैसे नवभारत, दैनिक भास्कर, नवीन दुनिया, देशबंधु पत्रों एवं मासिक पत्र-पत्रिकाओं आलेख छपते थे।

इस प्रकार एलक श्री आत्म साधना, सहित्य साधना और लोक कल्याण में निरत रहे, पर कर्म किसी को भी नहीं छोड़ते। अशुभकर्मोदय से वे हृदय सम्बंधी रोग से ग्रसित हो गये। परिणाम स्वरूप इंदौर चातुर्मासोपरान्त जनवरी 1997 में आपके हृदय का एक बाल्व बदला गया। स्वास्थ लाभ के उपरान्त पुनः धर्म प्रभावना में रत हो गये। इंदौर में ही 28 मई सन् 1999 को सल्लेखना पूर्वक शरीर से विलग हो गये।

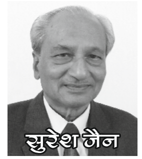

क्रमांक-49 वरिष्ठ नागरिक

नो पेंशन-नो टेंशन

बुजुर्गो के लिए रिवर्स मोर्गेज व्यवस्था, बुढ़ापे के सहारे के लिए आपका अपना घर!

बूढ़ा होने के बाद भी शर्मा जी बेफिक्र। आश्चर्य की बात यह कि उन्हें न तो कोई पेंशन मिलती है। और न ही उन्होंने ऐसा कोई निवेश कर रखा है, जिसके जरिये उन्हें नियमित आय होती हो। फिर चिंतामुक्त होने की वजह ? दरअसल, उनके पास अपना मकान है, जिसे उन्होंने 15 साल के लिए पंजाब नेशनल बैंक के पास गिरवी रखने का फैसला किया है। करीब 40 लाख रूपये के इस मकान के बदले उन्हें इस अवधि के दौरान हर महिने 7680 रूपये मिल सकेंगे।

यह संभव हो सका है रिवर्स मोर्गेज व्यवस्था के तहत जिसे भारत में कुछ वर्ष पूर्व ही कुछ बैंको व वित्तीय संस्थानों ने शुरु किया है जिस प्रकार से किसी मकान को खरीदने के लिए बैंक 80-85 फीसदी तक कर्ज देता है और फिर उसकी भरपाई 15 से 20 साल के दौरान मासिक किस्तों (ई.एम.आई) के रूप में करता है, उसी प्रकार रिवर्स मोर्गेज में बैंक मकान गिरवी लेकर उसके बदले में एक निश्चित अवधि (अमूमन 15 साल) तक के लिए हर माह एक निश्चित राशि मकान मालिक को देता रहता है।

इसमें अगले कई वर्षों तक वैसी ही नियमित मासिक आय हासिल की जा सकती है, जैसी पेंशन मिलती है। इस प्रणाली के कई लाभ है। इसका सबसे बड़ा फायदा तो यह है कि अवधि की समाप्ति के बाद न तो मासिक तौर पर दी गई राशि बैंक को वापस लौटाने की जरूरत होगी और न ही मकान से हटने की। मोर्गेज पर मकान देने वाला व्यक्ति जिंदगी भर अपने मकान में रह सकता है। उसके निधन के बाद जीवनसाथी को भी उसी मकान में रहने का अनुमति होगी। बैंक इस संपत्ति को तभी बेच सकेगा जब रिवर्स मोर्गेज लेने वाला व्यक्ति और उसका जीवन साथी दोनों इस दुनिया में नही होंगे। एक फायदा यह भी है कि यदि बेची गई संपत्ति का मुल्य बैंक की राशि (मासिक राशि और उस पर ब्याज) से ज्यादा होगा, तो शेष राशि मोर्गेज लेने वाले व्यक्ति के वैधानिक बारिश को दे दी जायेगी, लेकिन संपत्ति का मूल्य बैंक की बकाया राशि से कम है तो वारिश से पैसा नहीं मांगा जायेगा। उसका नुकसान को खुद बैंक उठायेगा।

यदि बारिश उस मकान को रखना चाहता है, तो इसका भी विकल्प है। बैंक की संपूर्ण राशि चुका कर वह मकान अपने पास रख सकता है। एक बड़ा लाभ यह भी है कि बैंक से प्राप्त पूरी राशि आयकर से मुक्त है।

अब सवाल यह है कि आखिर मकान के बदले राशि कितनी मिलेगी ? बैंको ने इसके लिए कुछ आधार तय किये हैं । इसमें एक है मूल्य अनुपात। यदि किसी मकान की कीमत 40 लाख रूपये हैं और मूल्य अनुपात (वैल्यू रेशो) 70 फीसदी है तो रिवर्स मोर्गेज 28 लाख रूपये मिलेगा, लेकिन यदि मूल्य अनुपात 10 फीसदी है तो यह राशि 36 लाख रूपये होगी। यही वह

राशि होगी जिसे बैंक मासिक किश्तों में देगा। इसमें ब्याज भी जुड़ा रहेगा। संपत्ति का जितना अधिक मूल्य अनुपात होगा, उतना ही अधिक मासिक भुगतान होगा।

इसका दूसरा आधार है अवधि। मोर्गेज की अवधि जितनी कम होगी, मासिक भुगतान उतना अधिक होगा, लेकिन अधिक राशि प्राप्त करने के प्रयास में बहुत ज्यादा कम अवधि नहीं रखे, क्योंकि अवधि खत्म होते ही आपकी नियमित आय पर फिर से ब्रेक लग जायेगा। अवधि तय करने से पहले अपनी जरूरतों का आंकलन जरूर कर लें। राशि मिलने का तीसरा आधार है उम्र। बैंको का सामान्य नियम यह है कि अपेक्षाकृत अधिक उम्र वाले व्यक्ति के लिए मासिक आय अधिक होती है, क्योंकि कम उम्र वाले व्यक्ति के साथ मोर्गेज कंट्रैक्ट करने का मतलब यह निकाला जाता है कि बैंक की राशि अधिक समय तक फंसी रहेगी।

रिवर्स मोर्गेज की अवधारणा खासकर वरिष्ठ नागरिकों के लिए तैयार की गई है। इसलिये हर व्यक्ति इसका पात्र नही हो सकता। आप इसका फायदा तभी उठा सकते हैं, जब उसकी शर्तों के दायरे में आते हों। सामान्य शर्तें इस प्रकार हैं।

- बैंक द्वारा तय की गई न्यूनतम उम्र के दायरे में आते हों।
- खुद का खरीदा या बनवाया गया मकान हो।
- पैतृक संपत्ति नहीं चलेगी।
- मकान पर कर्ज के रूप में कुछ भी बकाया न हो यानी मकान के लिए लिया गया कर्ज चुका दिया गया हो और इसके बाद उसके बदले में कोई नया कर्ज नहीं लिया गया हो।
- आपको पेंशन नहीं मिलती हो या आप यह साबित कर सकें कि जो पेंशन मिल रही है, वह आपके लिए अपर्याप्त है।

कविता

सच्चा श्रावक

❊ संस्कार फीचर्स ❊

देखी हमने सारी दुनिया, कोई सगा न होता
जब वियोग की बेला आती, जग स्वार्थ में रोता
रिस्ते नाते कसमें वादे, कोई यहाँ ने सच्चा
जिनशासन का धर्म है चोखा धर्म न देता धोका
गुरु हमारे राह दिखाते कहते धर्म अहिंसा
देवों से भी पूज्य रहे वो जो धारे धर्म अहिंसा
शाकाहारी व्यसन त्यागी तत्त्वज्ञान का धारी
सच्चा श्रावक रहे अहिंसक त्रिभुवन होय प्रशंसा

परिषह शतक में क्या है ?

❊ बाल. ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ❊

जैन संत अपनी साधता के समय अनेक कष्टों के साथ जो कुछ भी सहन करते हैं वह सब संवर पूर्वक निकरित हो इस महान उद्देश्य के साथ कष्टों के पार हो जाते है। जैन आचार्यो ने परिषह कहा है। आचार्य उमास्वामी जी ने तत्वार्थ सूत्र में **च्यवन निर्जरार्थ परिषोढत्या: परीषहा:।**

अर्थात् मार्ग से च्युत हुये बिना मार्ग मुक्ति मार्ग, ध्यान मार्ग, संवर मार्ग में छोड़े बिना क्षमता पूर्वक जो कुछ सहन कर लिया जाता है। उसे परिषह कहा जाता है। इन परिषहों के 22 प्रकार आचार्य उमास्वामी ने अपने तत्वार्थ सूत्र में उल्लेखित किये है।

(क्षुत्पिपासा-शीतोष्ण-दंश-मशक-नाग्नयारति-स्त्री-चर्या- निषधा- शय्या- क्रोध-वद्य- याचना-लाभरोग- तृणस्पर्श-मल-सत्कार-पुरुस्कार-प्रज्ञाज्ञाना दर्शनानि।।)

क्षुधा- तृषा-शीत- उष्ण-दंश मशक- नग्नता अरति- स्त्री परिषह- चर्या परिषह- निषधा परिषह- शय्या परिषह- क्रोध परिषह-वद्य परिषह-याचना परिषह- लाभ परिषह- रोग परिषह, तृण परिषह, मल परिषह- सत्कार परिषह- पुरुस्कार परिषह-प्रज्ञा परिषह- अज्ञान परिषह-अदर्शन परिषह।

इन सभी 22 परिषह का अनेक अलंकार रस के साथ में ज्ञानोदय छन्द की रचना सहित परीषह जय शतक का सृजन किया गया है। प्रस्तुत शतक में अनेक प्रकार की विशेषता से विद्यमान है। और निर्जरा के साधन परीषहों को अध्यात्मिक सूत्रों में पुरोकर परीषह जयशतक का एक अनुपम घर बनाया गया है।

परीषहजय शतक में मंगलाचरण के अंतर्गत आचार्य श्री ने जिनवर के चरण का समागम धर्म सुख ओर मोक्षसुख का कारण बताया है। और जिनवर के गुणों का स्मरण परमागम में निभ्रन्ति करता है। लेकिन मिथ्यादृष्टि इस जिनवाणी का अधिगम नहीं कर पाता है। हे भगवन मैं विषयों से रहित होकर इससे तत्त्व बोध कला को हृदय में प्राप्त करें इसी के साथ मंगलाचरण में सर्वज्ञता का भी उल्लेख बहुत गंभीरता से किया है।

कविता

अपनी ढपली

संस्कार फीचर्स

गठबंधन का खेल निराला, कुछ तो पीला कुछ तो काला
लाभ उठाने संघ बनाते लाभ नहीं तो छिटक भी जाते
कोई सिद्धांत नहीं है कोई गौरव मान नहीं है
देश धर्म से प्यार नहीं है
वादों की सूची है लम्बी दुग्ध भरी कड़वी है तुम्बी
चेहरे नकली बात न असली अपना राग अपनी ढपली

अपने लिवर (यकृत) को सुरक्षित रखने के उपाय

✼ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✼

विश्व लिवर दिवस 19 अप्रैल को मनाया जाता है जिसका उद्देश्य मनुष्यों को इसके प्रति जागृत करने का होता है। लिवर, यकृत, जिगर या कलेजा जो पेट ऊपरी दायें भाग में पसलियों के अंदर होता है। इसके पास ही डायफ्रॉम होता है जो सीना और पेट को अलग करता है। लिवर मानव शरीर का सबसे बड़ा अंग है जो त्वचा के बाद दूसरा सबसे बड़ा भाग है। औसतन शरीर वाले व्यक्ति में त्वचा 10.886 ग्राम, लिवर 1.560 ग्राम होता है जो पुरुषों की तुलना में महिलाओं में 10-15% छोटा होता है। यह दो मुख्य भागों में बाई तथा दाई लोब में विभक्त होता है व इसकी ऊपरी सतह उभरी रहती है तथा दाई निछली सतह अनियमित होती है व आड़ी दरार होती है।

लीवर 500 से ज्यादा अलग-अलग तरह के कार्य करता है जिसमें प्रमुख कार्यः-

1. लिवर शरीर में सबसे बड़ा रासायनिक कारखाने की तरह कार्य करता है, पेट और आंतों से निकलने वाला सारा रक्त लिवर से होकर गुजरता है किसी भी समय लिवर में कुल रक्त का 10% होता है, और यह प्रति मिनट 1400 एम.एल. रक्त को पम्प करता है व रक्त में अधिकांश रासायनिक स्तरों को नियंत्रित करता है।
2. लिवर एक बैटरी की तरह कार्य करता है इसमें शर्करा या कार्बोहाईड्रेट संग्रहित होता है और जब भी शरीर को ऊर्जा लिवर में जमा न हो तो रक्त में शर्करा का स्तर गिर जाता है। और व्यक्ति कोमा में जा सकता है जिसे यह बचाता है। यह वसा और प्रोट्रीन को संसाधित करने में मदद करता है उन्हें प्रयोग करने योग्य ऊर्जा में परिवर्तित करता है।
3. लिवर शरीर के मेटाबोलिजम कार्याँ को करते हैं इसमें कई प्रकार के एंजाइम्स होते हैं जो भोजन को पचाने में मदद करते है। लिवर पोषक तत्वों को हृदय और शरीर के हर हिस्से तक पहुँचाता है। पाचन क्रिया के दौरान शरीर में अमोनिया गैस बनती है जिसे लिवर यूरिया में बदलकर पेशाब के साथ बाहर निकलता है। लिवर में पित्त के कुछ तत्व लवण जो चिकनाई को कार्बेनिक एसिड तथा पानी के अंतिम पदार्थों को तोड़ देता है।
4. लिवर खून जमाने वाले प्रोथ्रोमबिन (Prothrombin) तथा फाइब्रिनोजेन (Fibrinogen) को बनाता है जो किसी दुर्घटना आदि में चोट लगने की स्थिति में अत्याधिक रक्त स्त्राव को रोकता है।
5. यह हार्मोन विनियमन द्वारा इंसुलिन जैसे हार्मोन के उत्पादन और संतुलन में मदद करता है।
6. लिवर विषाक्त पदार्थो जैसे हानिकारक व नशीली दवाईयों व शराब के दुष्प्रभावों को नष्ट करता है व शरीर से बाहर निकालता है।
7. यह शरीर के तापमान को बनाये रखता है।

8. लिवर आहारनली में सोखे गये तथा शरीर के अन्य किसी स्थान पर सुरक्षित रखे गये पोषक तत्वों को उत्तकों के लिये सुधारता है एवं व्यर्थ व विषैले पदार्थों को पित्त तथा मूत्र द्वारा निष्काशित होने के योग्य बनाता है।

लिवर में गड़बड़ी होने के लक्षण :- 1.भूख न लगना, भोजन करने के बाद लिवर वाले हिस्से में दर्द होना, भोजन न पचना।

2. वजन कम होना, पेट में मरोड रहना, गैस बनकर डंकारे आना, मुंह से गंदी बदबू आना, स्वाद बिगड़ना, सफेद रंग का मल होना, बार-बार मलेरिया, टाइफाइड व ज्वर होना।
3. शरीर पीला पड़ना व खुजली होना, त्वचा पर सफेद धब्बे, गहरे रंग की पेशाब।
4. थकान भरी आँखे और नीचे काले धब्बे होना, आँखों का सफेद भाग पीला नजर आना, चोट लगने पर घाव जल्दी ठीक नहीं होना आदि।

लिवर के प्रमुख रोग- लिवर में सूजन, सिरोसिस, नक्रोसिस, पीलिया, लिवरशोथ, लिवर का प्रदाह, शिशु लिवर (Infantile Liver) पित्ताशय और पित्त बाहनी का कैंसर आदि

सावधानियाँ- 1. जीवन शैली में बदलाव- सेहतमंद आहार- फाइवर युक्त भोजन, फल व सब्जियाँ में हरी सब्जियाँ, पत्तेदार सब्जियाँ, खट्टे फल, नियमित रूप से घूमना, व्यायाम योग, शारीरिक रूप से सक्रिय रहना।

2. **वजन नियंत्रण-** शुगर वाली चीजें नहीं खाना, मिठाईयों का सेवन नहीं करना, नमक की सीमित उपयोग, वसायुक्त आहार, मलाईयुक्त दूध, आईस्क्रीम , फास्टफूड, ठंडे पेय, डिब्बा बंद भोजन परहेज करना, शराब और अल्कोहिक पदार्थों का निषेध, सब्जी में मसाला का उपयोग नहीं करें व घी तेल व तली वस्तुओं का प्रयोग कम से कम करें।

3. **घरेलु उपचार-** हल्दी का दूध लिवर से विषाक्त पदार्थ बाहर निकालने में सहायक हैं व कॉफी का सेवन रोग फैलने की तीव्रता का रोकने में सहायक होता है। छाछ में हींग का बगार देकर जीरा, काली मिर्च व नमक मिलाकर भोजन के बाद पीने से फायदा होता है।

4. हेपेटाइटिस रोग नियंत्रण हेतु वैक्सीन लगवाना।

विशेष ध्यान रखें :- 1. मोटापे से 10-15 प्रतिशत तक लिवर रोग की संभावना बढ़ जाती है। 2. शराब पीने वालों को लिवर रोग का खतरा दुगना ज्यादा होता है। 3. पुराना मलेरिया, ज्वर ठीक हो जाने के बाद भी लिवर रोग बना रहता है।

लिवर अति विशिष्ट गुणों से युक्त सबसे महत्वपूर्ण शारीरिक गतिविधियों के संचालन में योगदान देता है। यह एक मात्र अंग है जो पुनः निर्माण कर सकता है, यही कारण है कि कोई भी अन्य व्यक्ति अपने लिवर का एक हिस्सा देकर टांसप्लॉट द्वारा जिंदगी बचा सकता है। हमें इसकी सुरक्षा का ध्यान रखकर निरोगी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। सभी चिकित्सा पद्धति में इलाज से आराम मिल जाता है।

हास्य तरंग

1. पत्नी (पति से) ऐसा कौन सा विभाग है जिसमें महिलायें कार्य नहीं कर सकती है ? पति- हाँ एक विभाग है जिसमें महिलायें कार्य नही कर सकती है ! फायर बिग्रेड क्योंकि महिलाओं का काम आग लगाना होता है।

2. एक महिला अपनी सहेली से क्यों तुम्हारी सहेली ने मोतियाबिन्द का ऑपरेशन कराया था ठीक है । सहेली उसे तो बहुत अच्छा दिखने लगा है और क्या बताऊं उसने तो अपने पति ही बदल दिया।

3. पत्नी- बीमार पति को पीट रही थी। सासू ने पूंछा क्यों मार रही हो ? आपने जो आयुर्वेद दवाई देने को कहा था उस पैकेट में लिखा है दवाई कूट-कूट कर देना।

4. दो हड्डी के डॉक्टर सुबह सैर करने जा रहे थे कि रास्ते में एक व्यक्ति लगड़ाकर चल रहा था । तभी एक डॉक्टर बोला इसके पैर में फ्रेक्चर है, दूसरा डॉक्टर बोला नहीं इसके पंजे में फ्रेक्चर है व आपस में बहर करने लगे। कुछ देर बाद निर्णय लिया आगे चलकर उस व्यक्ति से ही पूछ लेते हैं कौन सही है। उस व्यक्ति ने कहा मेरे पैर में कोई फ्रेक्चर नही हुआ मेरी तो चप्पल टूटी है।

5. टीचर- छात्र भावित से बताओ कुतुबमीनार कहाँ पर है ? छात्र मुझे नही मालूम। टीचर- बैंच पर खड़े हो जाओ, छात्र फिर भी नहीं दिख रहा मैडम।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

चीला

सामग्री- चावल 1 कप, हरी मिर्च 2-3, सोंठ आधा इंच, शिमला मिर्च आधा कप, टमाटर आधा कप, पालक एक कप, हरा धनिया, 2-3 बड़ी चम्मच, नमक 1 छोटी चम्मच, लाल मिर्च पाउडर आधा चम्मच, जीरा आधा छोटी चम्मच, बेकिंग सोड़ा एक चम्मच, तेल 3-4 बड़ी चम्मच।

मूंगफली की चटनी के लिये- मूंगफली भुनी आधा कप, नारियल (ग्रेटेड) आधा कप, नमक आधा छोटी चम्मच, हरी मिर्च 2, नींबू का रस 1 छोटी चम्मच, तेल 1 छोटी चम्मच, सरसों के दाने 1/3 छोटी चम्मच, लाल मिर्च 2, करी पत्ता 10 से 12।

विधि- भीगे चावल, 2 से 3 हरी मिर्च और आधा इंच सौंठ के टुकड़े को मिक्सर में डालकर बारीक पीस लें । शिमला मिर्च, टमाटर, पालक, हरा धनिया, नमक, लाल मिर्च पाउडर, जीरा और बेकिंग सोड़ा मिला लें पैन में सेंककर सारे पैनकेक बना लें। मिक्सर जार में मूंगफली के दाने (छीलकर) ग्रेटेड नारियल, नींबू का रस और पानी डालकर बारीक पीस लें, पैन गरम कर तेल में सरसों, लाल मिर्च, करी पत्ता डालकर चटनी में तड़का लगा दें।

बाल कहानी

व्यसन की आग

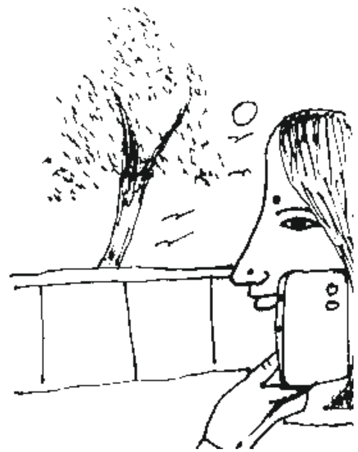

गोरखपुर उत्तर प्रदेश का एक महान तीर्थ है । इसी गोरखपुर में हिंदुओं के ग्रंथों को प्रकाशित करने वाला एक गीता प्रेस भी है तथा सरस्वती शिशु मंदिर का प्रारंभ भी गोरखपुर से ही हुआ था। इस महान ऐतिहासिक नगरी में एक गरीब दलित परिवार भी रहता था । अशोक, निषाद का विवाह रिंकी नाम की लड़की से हुआ था। अशोक हमेशा शराब पीकर घर आता था जिससे रिंकी बहुत परेशान हो गयी थी। रिंकी मजदुरी करके जैसे तैसे कुछ पैसे लाती थी तो अशोक उन पैसों को छीनकर सदैव शराब पीता था। शराब पीकर गाली गलौच करना और मारपीट करना रोजमर्रे का काम था। रिंकी ने अशोक की खुब मार खाई और वह हर प्रकार से अशोक के अत्य प्रतारणा को सहन करती रही जब उसकी सहनशीलता गवाह दे गई तो रिंकी ने एक अलग किराये से मकान ले लिया और उसमें रहकर अपना जीवन गुजारने लगी।

रिंकी के चले जाने के बाद अशोक और आजाद हो गया, उसने अपने शराब पीने के क्रम को और बढ़ा दिया। एक एक करके घर के सब सामान बेचना शुरु कर दिया। जमीन और मकान का भी सौदा करने की खबर जब रिंकी को लगी तो रिंकी अशोक के पास समझाने गयी और उसने अशोक से कहाँ की अगर तुम जमीन बेच दोगे तो उस पैसे से भी शराब ही पीओगे। कल हमारे आय के स्रोत सब खतम हो जायेंगे। मकान बेच देने के बाद हमारे सिर की छाया भी चली जायेगी। आखिर हम कहाँ सिर छिपायेंगे। अशोक ने कहाँ यह मेरी बाप दादाओं की जायदाद है, मैं कुछ भी करू तुम इसके बीच में बोलने वाली कौन होती हो ? वाद विवाद ठंडा हो गया पर रिंकी कि गुस्सा ठंडी नहीं हुई। अशोक ने और शराब पी ली और चादर ओढ़कर सो गया। रिंकी ने मौका देखकर अशोक का गला दबा दिया और उसे निष्प्राण कर दिया। रिंकी ने दरवाजा लगाकर अपने किराये वाले मकान मे चली गई। अशोक के पड़ोसियों को अशोक की मृत स्थिती देखकर पुलिस में सूचना देनी पड़ी। आखिरकार पुलिस ने हत्या के मामले में रिंकी को गिरफ्तार कर ही लिया और उससे सब कुछ उगलवा लिया। परंतु पुलिस अधिकारियों को रिंकी की मजबूरी भी समझ में आई। अशोक ऊपर गया तो रिंकी जेल में। बुरे काम का बुरा ही नतीजा होता है। इस बात को पड़ोसी लोग आपस में एक दूसरे से कहते रहे। एक व्यसन व्यक्ति का बर्बाद करने के लिए काफी होता है और शराब ने पूरा घर बर्बाद कर दिया।

संस्कार गीत

पंथ सफलता पायें

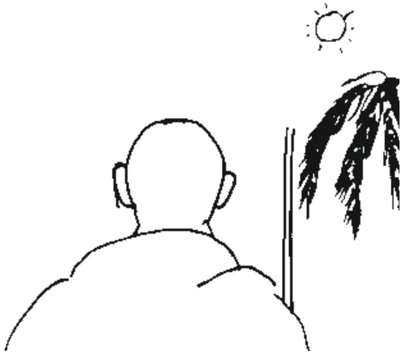

व्यक्ति व्यक्ति से ही मिलकर शक्ति बन जाये
बने संगठन की शक्ति तो जीत गीत गाये
1.
अहं त्यागकर स्वार्थ छोड़कर
बने संगठन अच्छा
सुविधा पद लोलुपता छोड़ो
बने संघ सच्चा
देश धर्म की रक्षा करने तन मन धन वारे
2.
जातिवाद अरू पंथवाद का
छोटा सोच तजो
अपना नाम करो तुम पीछे
प्रभु का नाम भजो
पर निंदा रूचि नहीं गर
तो सत्य समझ आये
3.
लक्ष्य बनाओ जिल पाओ
आपस प्रेम बढ़ाओ
अनुशासन से रहना सीखो
मैत्री धर्म बढ़ाओ
संघ धर्म अपनाकर मानव पंथ सफलता पायें

बाल कविता

खोना

मोबाईल में समय न खोना
जल्दी सोना जल्दी जगना
बुद्धि स्वास्थ्य समृद्धि पाना
गहरी नींद हमेशा सोना
कच्ची नींद कभी न सोना
ताजा खानाा बॉया सोना
डॉक्टर घर में कभी न आना
धोकर पैर सदा ही सोना
मोबाईल में समय न खोना

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

शिरशाड़ (मुंबई)- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के करकमलों से शिरशाड़ मुंबई में 2 फरवरी 2025 को ब्र. अंकुर भैया, ब्र. मयंक भैया गोंदिया महाराष्ट्र, ब्र. गणेशीलाल जी गनौर (म.प्र.), ब्र. यशवंत रामगढ़ राजस्थान, ब्र. अनिल भैया गुवाहटी असम को दीक्षायें दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री नियोगसागरजी महाराज, मुनि श्री अनियोगसागर जी महाराज, क्षुल्लक विनियोगसागर जी महाराज, क्षुल्लक परमयोगसागर जी महाराज, क्षुल्लक साम्ययोगसागर जी महाराज रखा गया।

कोटा (राजस्थान)- आचार्य श्री प्रज्ञासागर जी महाराज के करकमलों से ब्र. देवेन्द्र भैया सूरत, ब्र. मीना दीदी उज्जैन, ब्र. प्रेमलता जी इंदौर को 21 मार्च 2025 को कोटा राजस्थान में दीक्षायें दी गई जिनके नाम क्रमशः क्षुल्लक दिव्यतीर्थसागर जी महाराज, क्षुल्लिका असीमप्रज्ञा माताजी, क्षुल्लिका अनंतप्रज्ञा माताजी रखा गया।

धरियावद (राजस्थान)- आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज के करकमलों से 9 मार्च 2025 को श्री भंवरलाल जी सरिया को एलक दीक्षा दी गई जिनका नाम एलक हर्षसागर जी रखा गया।

आगामी दीक्षायें

अजमेर (राजस्थान)- आचार्य श्री वसुनंदी महाराज के करकमलों से ब्र. सौम्या दीदी बम्हौरी (म.प्र.) एवं उनकी ही मां ब्र. विनयप्रभा जी बम्हौरी को आर्यिका दीक्षा 23 अप्रैल 2025 को अजमेर राजस्थान दी जावेगी।

समाधिमरण

धरियावद (राजस्थान)- आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री प्रशमसागर जी महाराज का समाधिमरण 17 मार्च 2025 को सायं 4.30 बजे धरियावद राजस्थान में हुआ।

इंदौर- आचार्य श्री समयसागर महाराज का 40वाँ दीक्षा दिवस 20 मार्च 2025 को श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में मनाया गया।

मांगीतूंगी-श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मांगीतूंगी में आर्यिका रत्न सुनंदामति माताजी द्वारा दीक्षित आर्यिका श्री सुबोधमति माताजी का समाधिमरण 17 मार्च 2025 को रात्रि 11.55 पर हुआ।

धरियावद (राजस्थान)- आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज एवं मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज सहित 52 पिच्छिधारी साधुओं के ससंघ सान्निध्य में मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री पूर्णसागर जी महाराज का समाधिमरण 24 अप्रैल 2025 को प्रातः 9.50 पर धरियावद राजस्थान में हुआ।

धरियावद (राजस्थान)- आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज एवं मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज सहित 52 पिच्छिधारी साधुओं के ससंघ सान्निध्य में मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज के शिष्या आर्यिका श्री स्वर्णमति माताजी का समाधिमरण 15 फरवरी 2025 को धरियावद राजस्थान में हुआ।

चौपड़ा (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री पवित्रसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री प्रभातसागर महाराज का समाधिमरण 01 मार्च 2025 को सांय 5.11 पर मुनि श्री प्रभावसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में चौपड़ा महाराष्ट्र में हुआ।

वर्ग पहेली 306

1		2	■	3		4	5	■
	■	6			■	7		■
8	9		■	■	10	■	11	12
■		■	13			14	■	
15	■	■		■	16		17	■
18	19	20		■	■	21		
22			■	■	23			■
24			■	25		■	■	26
27		■	28			■	29	

बाये से दाये

1. तीर्थकर महावीर एक नाम, सद्बुद्धि -3
3. स्वर्ग का गाय -4
6. जादू, माया, छल -3
7. नया नवीन -2
8. विष हलाहल -3
11. डंडी, कमल, पौधे का डंठल -2
13. तालाब, जलाशय -4
16. जवाहर, मणी नगीना -3
18. एक अंग्रेजी वामसराय, झील का नाम -4
21. प्रसिद्ध, नाम का, लवण नौन -3
22. चाहत, इच्छा, गहरी चाह -3
23. महीन, पतला -3
24. आवाज चीख चिंघाड़ -3
25. ऊंचाई पद हौदा -2
27. झगड़ा टंटा -2
28. शरीर के बीच का भाग -3
29. पवित्र, साफ (उर्दू) -2

ऊपर से नीचे

1. यथाजात, साथ उत्पन्न -3
2. अंधकार, तम अंधेरा -3
3. कौआ -2
4. गाय, गौ -2
5. नया, नवीन, एक अभिनेत्री का नाम -3
9. मैं का बहुवचन -2
10. गम इलास्टिक, लचीला पदार्थ -3
12. व्यसन आदत -2
13. शाक, भाजी -3
14. भारी जोरदार -4
15. दमोह जिले का जैन तीर्थ -5
17. लवण, मीठ नौन -3
19. टेर चुनौती -4
20. अखबार, बांटने वाला -3
26. नासिका, स्वर्ग -2

वर्ग पहेली 305 का हल

1 प्र	ति	2 क्र	3 म	ण	■	4 सु	5 वि	6 धी
ति	■	7 म	द	■	8 ठ	न	का	र
9 मा	10 घ	■	11 न	12 य	न	■	13 र	ज
■	र्ष	■	■	14 म	का	न	■	■
15 क	ण	■	16 प	न	■	■	17 ता	18 प
न	■	19 क	र	■	20 यः	■	■	ह
21 का	22 र	से	व	23 क	■	24 ल	25 ह	र
26 म	क	र	■	27 न	28 म	की	न	■
29 र	म	न	■	30 क	हा	र	■	■

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

ये संस्कार अमर रहें।

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

भगवान महावीर का अचेलक धर्म व्याख्यान माला

ऑनलाईन संगोष्ठी

आशीर्वाद
आचार्य श्री समयसागर जी महाराज

दिनांक: 08 एवं 09 अप्रैल 2025
समय: दोप. 2 बजे से

सान्निध्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

ZOOM ID- 450 382 7125 | **ZOOM PASSCODE-D4Lugn**

मार्गदर्शक: ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, ब्र. तात्या भैया नेजकर

08 अप्रैल

अध्यक्षता
डॉ. श्रेयांश जैन
बड़ौत

मुख्य अतिथि
राकेश सिंघई (कुलपति)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

विशेष अतिथि
ब्र. जयकुमार निशांत
टीकमगढ़

09 अप्रैल

अध्यक्षता
डॉ. नलिन के. शास्त्री
दिल्ली

मुख्य अतिथि
डॉ. रेणू जैन (पूर्व कुलपति)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

विशेष अतिथि
डॉ. संगीता मेहता
इंदौर

डॉ. शीतलचंद जैन जयपुर, डॉ. फूलचंद जैन वाराणसी, पं. विनोद जैन रजवांस, डॉ. अनिल जैन जयपुर, डॉ. नरेन्द्र जैन गाजियाबाद, डॉ. सुनील जैन (संचय) ललितपुर, डॉ. आशीष जैन (आचार्य) सागर, डॉ. आशीष जैन बम्होरी, डॉ. आशीष जैन (शिक्षाचार्य), डॉ. अनुपम जैन, इंदौर, डॉ. पंकज जैन, इंदौर, डॉ. अरविन्द जैन इंदौर, डॉ. मुकेश जैन (विमल) इंदौर, डॉ. धर्मेन्द्र जैन दिल्ली, ब्र. विनोद जैन छतरपुर, डॉ. सोनल जैन दिल्ली, डॉ. समता मारौरा इंदौर, डॉ. रजनी जैन इंदौर, डॉ. भरत जैन इंदौर, डॉ. बाहुबली जैन इंदौर, डॉ. ज्योति जैन, खतौली, डॉ. महेन्द्र मनुज इंदौर, डॉ. ज्योतिबाबु जैन उदयपुर, डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली, डॉ. सुमति कुमार, उदयपुर, डॉ. राजेश जैन, ललितपुर, डॉ. अमित (आकाश) जैन बनारस, पं. सुरेश जैन मारौरा इंदौर, डॉ. सुबोध जैन मारौरा इंदौर, डॉ. शुभि जैन मारौरा इंदौर

एक कालजयी सत्य को सुनना ना भूलें।
लिंक का प्रयोग करें सच को सुने।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-3193601, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 27/03/2025, पोस्टिंग दिनांक : 03/04/2025